MOU Holder and Distributors
RN METALS Pvt. Ltd
Distributors of SAIL & VSP products in Telangana
Stockist of MS Beams MS Channel, MS Angle, MS Plates, TMT Bars
A-23/5 & 6, APIE, BALANAGAR, HYD.-500 037
040-23774718, 040-23774719, 9160111471

खबरें जो सोच बदल दे
शुभ लाभ
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

MINISO
Please visit store nearest to you at these locations :
IRRUMMANZIL (L&T MALL)
MOOSARAMBAGH (L&T MALL)
KOMPALLY (TNR PLAZA)

Postal Regd.No. HQ/SD/523/2026-28 । बुधवार, 24 जून, 2026 । हैदराबाद और नई दिल्ली से प्रकाशित । website : https://www.shubhlabhdaily.com । संपादक : गोपाल अग्रवाल । पृष्ठ : 10 । मूल्य-8 रु.। वर्ष-8 । अंक-172

राम जन्मभूमि चढ़ावा चोरी

ट्रस्ट का कैग ऑडिट

नयी दिल्ली, 23 जून (एजेंसियां)।

अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर को मिले दान में गड़बड़ियों के आरोपों के बाद अब मंदिर ट्रस्ट और उसके वित्तीय लेनदेन की जांच की मांग तेज हो गई है। मामले में सीबीआई जांच और नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) से ऑडिट कराने की मांग को लेकर इलाहाबाद हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं दाखिल की गई हैं। याचिकाओं में उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से गठित विशेष जांच दल की निष्पक्षता पर भी सवाल उठाए गए हैं। सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का सीएजी ऑडिट कराया जा सकता है? क्या देश के सबसे चर्चित धार्मिक ट्रस्ट में से एक को जनहित के आधार पर सीएजी के दायरे में लाया जा सकता है? इस बहस के केंद्र में अब संविधान, सीएजी अधिनियम और कोर्ट की व्याख्याएं आ गई हैं।

जनवरी 2024 में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद से लाखों श्रद्धालु अयोध्या पहुंच चुके हैं। मंदिर निर्माण और उससे पहले के वर्षों में देश-विदेश से करोड़ों लोगों ने नकद धनराशि, सोना, चांदी, आभूषण और अन्य मूल्यवान वस्तुएं दान की थीं।

हाल के दिनों में दान राशि के दुरुपयोग और वित्तीय गड़बड़ी के आरोप सामने आने के बाद कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं और याचिकाकर्ताओं ने मांग की है कि ट्रस्ट की इनकम और खर्चों का स्वतंत्र ऑडिट कराया जाए। उनका तर्क है कि यह केवल एक धार्मिक संस्था नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र है। ऐसे में पारदर्शिता तय करना जरूरी है। इलाहाबाद हाईकोर्ट में दायर याचिका में न केवल जांच की मांग की गई है, बल्कि सीएजी ऑडिट कराने और वित्तीय लेनदेन की विस्तार से समीक्षा कराने की भी अपील की गई है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) का पद संविधान के आर्टिकल 148 से 151 के तहत स्थापित किया गया है। सीएजी का मुख्य काम केंद्र और राज्य सरकारों के वित्तीय लेनदेन, सरकारी विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों और सरकार की ओर से नियंत्रित होने वाली संस्थाओं के अकाउंट का ऑडिट करना है। सामान्य परिस्थितियों में सीएजी उन्हीं संस्थाओं का ऑडिट करता है जो केंद्र या राज्य सरकार के अधीन हों, सरकारी कंपनियां हों, वैधानिक हों, या सरकारी धन से संचालित संस्थाएं हों।

लेकिन सीएजी की शक्तियां केवल यहीं तक सीमित नहीं हैं। सीएजी (कर्तव्य, शक्तियां और सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 एक विशेष प्रावधान प्रदान करती है। इस धारा के अनुसार राष्ट्रपति, राज्यपाल या केंद्र शासित प्रदेश का प्रशासक जनहित में किसी ऐसी संस्था या निकाय के खातों का ऑडिट सीएजी को सौंप सकता है, जो सामान्य रूप से उसके अधिकार क्षेत्र में नहीं आती। हालांकि इसके लिए कुछ शर्तें हैं।

इसमें सबसे जरूरी है कि ये मामला जनहित से जुड़ा होना चाहिए। संबंधित संस्था में सरकार का पर्याप्त निवेश या वित्तीय सहायता हो सकती है। राष्ट्रपति या राज्यपाल की ओर से औपचारिक अनुरोध होना चाहिए। ऑडिट से पहले संबंधित संस्था को अपना पक्ष रखने का अवसर दिया जाना चाहिए। यानी कानून सीएजी को असाधारण परिस्थितियों में गैर-सरकारी संस्थाओं के ऑडिट का रास्ता देता है, लेकिन यह कोई अधिकार नहीं है।

दिल्ली डिस्कॉम मामला क्यों महत्वपूर्ण है?

इसी हफ्ते दिल्ली हाईकोर्ट में बिजली वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) और दिल्ली सरकार के बीच चल रहे विवाद में भी सीएजी ऑडिट का मुद्दा उठा। बिजली कंपनियों का तर्क था कि वे निजी संस्थाएं हैं और उनका सीएजी ऑडिट नहीं हो सकता। इससे पहले विद्युत अपीलीय न्यायाधिकरण ने कहा था कि पहली नजर में सार्वजनिक हित का ऐसा मामला नहीं दिखता जो ऑडिट को उचित ठहराए। लेकिन सोमवार को दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि यदि सीएजी अधिनियम की धारा 20 की प्रक्रिया का पालन किया जाए तो सीएजी ऑडिट पर कोई स्पष्ट कानूनी रोक नहीं है। अदालत ने यह भी माना कि उपभोक्ताओं के हित प्रभावित होने के कारण मामला जनहित से जुड़ा हो सकता है। यह फैसला इसलिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि इससे यह बहस तेज हो गई है कि क्या सार्वजनिक महत्व रखने वाली अन्य संस्थाओं पर भी धारा 20 लागू हो सकती है। ▶8पर

सिया गोयल बनी सोनम

प्रेमी संग मगेतर को खाई में धकेला

पुणे, 23 जून (एजेंसियां)।

पुणे में इंदौर के राजा रघुवंशी हत्याकांड से मिलती-जुलती वारदात सामने आई है। यहां 26 साल के केतन विशाल अग्रवाल की उनकी मंगेतर सिया गोयल (20) और उसके बॉयफ्रेंड चेतन चौधरी (22) ने मिलकर हत्या कर दी। पुलिस का आरोप है कि दोनों ने केतन को लोहागढ़ किले से करीब 400 फीट गहरी खाई में धक्का दिया और इसे हादसा बताने की कोशिश की। केतन 18 जून को अपनी मंगेतर सिया के साथ पुणे के लोहागढ़ किले पर ट्रेकिंग के लिए गए थे। बाद में उनका शव खाई से मिला।

केतन पुणे जिले के गहुंजे के रहने वाले थे और परिवार की रियल एस्टेट कंपनी में डायरेक्टर थे। वहीं सिया पुणे के एक बड़े मसाला व्यापारी की बेटी है। इस साल नवंबर में राजस्थान के उदयपुर स्थित एक शाही पैलेस में दोनों की शादी होने वाली थी। यह शादी दोनों के परिवारों ने तय की थी। घर में तैयारियां भी शुरू थीं। मेहमानों के लिए दो चार्टर्ड प्लेन की व्यवस्था भी की गई थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, शादी पर परिवार करीब 17 करोड़ खर्च करने वाला था।

महाबलेश्वर में बर्थडे पार्टी, लोहागढ़ में प्री-वेडिंग शूट का प्लान था। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, केतन और सिया शादी से पहले बाली घूमने जाने वाले थे। सारी बुकिंग भी हो गई थी लेकिन सिया ने पासपोर्ट खोने की बात कहकर ट्रिप कैंसिल करा दी। केतन ने सिया के बर्थडे के लिए महाबलेश्वर के एक लग्जरी रिसॉर्ट में 40 कमरे बुक कराए थे। लोहागढ़ किले पर प्री-वेडिंग फोटोशूट की भी तैयारी चल रही थी।

जांच में सामने आया कि सिया और उसके बॉयफ्रेंड चेतन ने 14 जून को ही लोहागढ़ किले पर केतन को मारने की योजना बनाई थी। आरोप है कि दोनों ने सांप का डर पैदा कर उसे खाई में धकेलने की कोशिश की, लेकिन प्लानिंग फेल हो गई। केतन को भी शक नहीं हुआ। ▶8पर

मुग़ल-पठान नाम मिटा देंगे

शुभेंद की विपक्ष से ठनी

कोलकाता, 23 जून (एजेंसियां)।

पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने कहा है कि इस कोलकाता में कोई मुगल-पठान नाम नहीं रहेगा। भगिनी निवेदिता के अलावा किसी अन्य विदेशी के नाम पर गली का नाम रखने के बारे में आपको सोचना पड़ेगा। इसके अलावा मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने पश्चिम बंगाल में सड़कों का नाम बदलने के लिए एक समिति का गठन किया है। उन्होंने मंगलवार को विधानसभा के बजट सत्र में घोषणा की कि स्वामी प्रदीपानंद महाराज समिति के अध्यक्ष होंगे। सीएम ने कहा कि यह समिति नए नाम का मूल्यांकन करेगी। इस समिति को कोई भी व्यक्ति या संस्था अपना प्रस्ताव दे सकता है।

विधानसभा में सीएम और विपक्षी नेता आमने-सामने

मंगलवार को विधानसभा की कार्यवाही के दौरान विपक्षी नेता ऋतब्रत बनर्जी ने सुहरावर्दी एवेन्यू का नाम बदलने की आल-ोचना की। इसके जवाब में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने ऋतब्रत पर कम्युनिस्ट मानसिकता रखने का आरोप लगाते हुए कहा, कोलकाता में मुगलों और पठानों के नाम पर कोई नाम नहीं रखा जाएगा।

गौरतलब है कि पश्चिम बंगाल सरकार ने कोलकाता की सुहरावर्दी एवेन्यू का नाम बदलकर गोपाल मुखर्जी एवेन्यू रख दिया है। यह सड़क बंगाल के कसाई हुसैन सुहरावर्दी के नाम पर थी। सीएम शुभेंदु अधिकारी ने विधानसभा में कहा, सुहरावर्दी के नाम पर कोई गली नहीं रखी जाएगी। जब मैं पार्क सर्कस सेवन पॉइंट्स से गुजरता हूं, तो मुझे सुहरावर्दी नाम की एक गली दिखती है। वह नाम नहीं रहेगा। अगर आपको लगता है कि डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के नाम पर किसी सच्चे देशभक्त को सम्मानित करने की जरूरत है, तो कहिए मैं उन्हें सम्मानित करूंगा।

सीएम शुभेंदु ने कहा कि बंगाल के कसाई सुहरावर्दी का समर्थन करने का तो सवाल ही नहीं उठता। इस सदन में खड़े होकर 1946 के दंगों का खून उनके हाथों पर लगा था, जिसका रिकॉर्ड इसी सदन में दर्ज है। ज्योति बसु ने कहा कि बंगाल के इस कसाई ने कम से कम 20,000 लोगों को मार डाला था। लेकिन समस्या यह है कि इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश करने से ही समस्या पैदा होती है। बता दें कि हसन सुहरावर्दी 8 अगस्त 1930 से 7 अगस्त 1934 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति रहे।

विदेशी नाम पर सवाल, सीएम ने दी चेतावनी

अविभाजित बंगाल के प्रधानमंत्री हसन सुहरावर्दी का जिक्र आने पर सीएम शुभेंदु ने कहा कि मुझे पता चला कि एक और सुहरावर्दी हैं। लेकिन सुनिए, स्वतंत्रता सेनानी वीणा बसु, जिन्होंने पांच गोलियां चलाईं, उन्हें तत्कालीन कुलपति ने अंग्रेजों के हवाले कर दिया। इसके लिए अंग्रेजों ने उन्हें नाइट की उपाधि दी थी। इस कोलकाता में कोई मुगल-पठान नाम नहीं रहेगा। ▶8पर

पाक की घोर बेइज्जती

36 के 36 राफेल सही सलामत

नयी दिल्ली, 23 जून (एजेंसियां)।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायुसेना के राफेल लड़ाकू विमानों को मार गिराने के पाकिस्तान के दावों की पोल एक बार फिर खुल गई है। भारतीय वायुसेना के मुख्यालय से जारी एक आधिकारिक दस्तावेज़ ने साफ कर दिया है कि भारत के पास फ्रांस से खरीदे गए सभी 36 राफेल विमान पूरी तरह ऑपरेशनल हैं। इस तरह भारत के राफेल पर गलतबयानी करने वाले पाकिस्तान को करारा तमाचा लगा है। पाकिस्तान ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान कई राफेल विमानों को गिराने का झूठ फैलाया था।

15 जून 2026 को एयर मुख्यालय के डायरेक्टोरेट ऑफ इंजीनियरिंग (राफेल) ने फ्रांस की कंपनी सैफ्रान एयरक्राफ्ट इंजिन्स को एक ब्रिज सपोर्ट प्रस्ताव (आरएफपी) भेजा है। यह एक तरह का सपोर्ट टेंडर है। इस दस्तावेज़ में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि भारतीय वायुसेना 2016 के भारत-फ्रांस सरकारी समझौते के तहत खरीदे गए सभी 36 राफेल विमानों का संचालन कर रही है और सितंबर 2026 के बाद भी इनके रखरखाव और तकनिकी सहायता की आवश्यकता होगी। इसी काम के लिए भारतीय वायुसेना ने टेंडर जारी किया है।

36 राफेल के मेंटेनेंस के लिए वायुसेना ने जारी किया टेंडर। दस्तावेज़ के अनुसार अगले पांच महीनों के लिए 36 राफेल विमानों के संचालन को ध्यान में रखते हुए पैकेज तैयार किया गया है।

यह घटनाक्रम ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान सेना और पाकिस्तान-समर्थक सोशल मीडिया अकाउंट्स के उन बार-बार किए गए दावों के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, जिनमें आरोप लगाया गया था कि भारत के कई राफेल विमान मार गिराए गए थे। पाकिस्तान के अलग-अलग मीडिया प्लेटफ़ॉर्म और कमेंटेटर्स ने अलग-अलग आंकड़े पेश किए थे, जिनमें यह दावा भी शामिल था कि तीन राफेल विमान नष्ट हो गए हैं। हालांकि, भारतीय वायुसेना के हालिया दस्तावेज़ में बेड़े की संख्या में किसी भी कमी का जिक्र नहीं है; इसके बजाय, इसमें सभी 36 विमानों के लिए उड़ान की ज़रूरतों का हिसाब लगाया गया है।

टेंडर दस्तावेज़ों के अनुसार इस सपोर्ट पैकेज का मकसद 36 राफेल विमानों को चालू हालत में बनाए रखना है। इसके तहत हर विमान के लिए औसतन सालाना 150 घंटे की उड़ान तय की गई है, जिसका मतलब है कि पांच महीने की 'ब्रिज पीरियड' (अंतरिम अवधि) के दौरान कुल 2,250 घंटे की उड़ान का अनुमान है।

दस्तावेज़ में बताया गया है कि राफेल के मूल अनुबंध में 36 विमान, उनसे जुड़े उपकरण, इस्तेमाल होने वाली सामग्री, स्पेयर पार्ट्स और पांच साल तक विमानों के बेड़े के संचालन के लिए रखरखाव सहायता शामिल थी। प्रस्तावित 'ब्रिज सपोर्ट' का मकसद 18 सितंबर, 2026 के बाद भी विमानों के संचालन को बिना किसी रुकावट के जारी रखना है। ▶8पर

सिंधु पर पाक का नया दांव

सभ्यतागत दावों से नया नैरेटिव

नयी दिल्ली, 23 जून (एजेंसियां)।

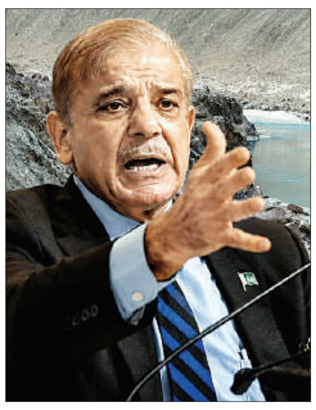

पाकिस्तान बरसों से छात्रों को यह पढ़ाता आ रहा है कि उसका इतिहास 712 ईसवी में मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध की जीत के साथ शुरू हुआ। लेकिन इस मुल्क ने सिंधु घाटी सभ्यता के मोहनजोदड़ो में नई खुदाई शुरू की है। 1965 में अमेरिकी पुरा-तत्वविद् जॉर्ज डेल्स की खुदाई के बाद से यह जगह काफ़ी हद तक अछूती रही थी। 5,000 साल पुराने इस शहर में यह खुदाई जून 2025 में शुरू हुई। यह घटनाक्रम भारत द्वारा ऑपरेशन सिंदूर शुरू करने और सिंधु जल संधि को स्थगित करने के कुछ महीनों बाद हुआ।

पहलगाम हमले के बाद भारत ने जब सिंधु जल समझौता निलंबित किया तो पाकिस्तान की हेकड़ी निकल गई। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के प्रमुख बिलावल भुट्टो ने भारत द्वारा सिंधु जल संधि को निलंबित करने के खिलाफ पाकिस्तान के विरोध को एक सभ्यतागत दावे से जोड़ दिया।

उन्होंने मोहनजोदड़ो और सिंधु घाटी सभ्यता का हवाला देते हुए तर्क दिया कि पाकिस्तान सिंधु का असली संरक्षक है। उन्होंने कहा कि इसी वजह से पाकिस्तान का इस नदी पर इसके रक्षक के तौर पर ऐतिहासिक अधिकार है। ▶8पर

कोचिंग संस्थानों पर कार्रवाई

खान सर की दुकान बंद

प्रयागराज, 23 जून (एजेंसियां)

राजधानी लखनऊ के अलीगंज इलाके में सोमवार को एक कोचिंग संस्थान में हुए दर्दनाक अग्निकांड के बाद प्रदेशभर में कोचिंग संस्थानों के खिलाफ कार्रवाई तेज हो गई है। इसी क्रम में संगम नगरी प्रयागराज में भी प्रयागराज विकास प्राधिकरण ने बड़ा कदम उठाते हुए सिविल लाइंस स्थित खान सर की खान ग्लोबल क्लासेज को सील कर दिया है। प्रयागराज विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ऋषि राज के निर्देश पर यह कार्रवाई की गई। जोन संख्या एक के जोनल अधिकारी गंगेश कुमार सिंह के नेतृत्व में पीडीए की प्रवर्तन टीम ने कोचिंग संस्थान पर पहुंचकर सीलिंग की प्रक्रिया पूरी की। कार्रवाई से पहले कोचिंग में मौजूद छात्रों को बाहर निकाला गया। इसके बाद कार्यालय को भी बंद कराया गया और पूरी बिल्डिंग को सील कर दिया गया। सीलिंग की कार्रवाई पूरी होने के बाद कोचिंग संस्थान के बाहर नोटिस भी चस्पा कर दिया गया। ▶8पर

4 मकान, 8 प्लॉट और 3 लॉकर

निज़ामाबाद में फँसी बड़ी मछली

निजमाबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो):

एक बड़ी कार्रवाई करते हुए, तेलंगाना भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने निजामाबाद के आबकारी अधीक्षक कोम्मुरी मल्ला रेड्डी से जुड़े 11 ठिकानों पर एक साथ छापेमारी की। इस छापेमारी में ब्यूरो ने लगभग 3 करोड़ रुपये की घोषित (दस्तावेजी) संपत्ति का पता लगाया है। बरामद संपत्तियों में चार आलीशान मकान, आठ खुले प्लॉट, 10.23 एकड़ कृषि भूमि और तीन बैंक लॉकर शामिल हैं, जिन्हें खोला जाना अभी बाकी है। अधिकारियों का कहना है कि इन संपत्तियों का वास्तविक बाजार मूल्य दस्तावेजी मूल्य से कई गुना अधिक हो सकता है। एसीबी ने निजामाबाद के जिला निषेध और आबकारी अधिकारी (आबकारी अधीक्षक) मल्ला रेड्डी के खिलाफ आय से अधिक संपत्तिका मामला दर्ज किया है। अधिकारी पर आरोप है कि उन्होंने अपनी सेवा के दौरान भ्रष्ट आचरण और संदिग्ध तरीकों से अपनी आय के ज्ञात स्रोतों से कहीं अधिक संपत्ति अर्जित की है। इस संबंध में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 (संशोधित 2018) की धारा 13(1)(बी) और 13(2) के तहत मामला दर्ज किया गया है। ▶8पर

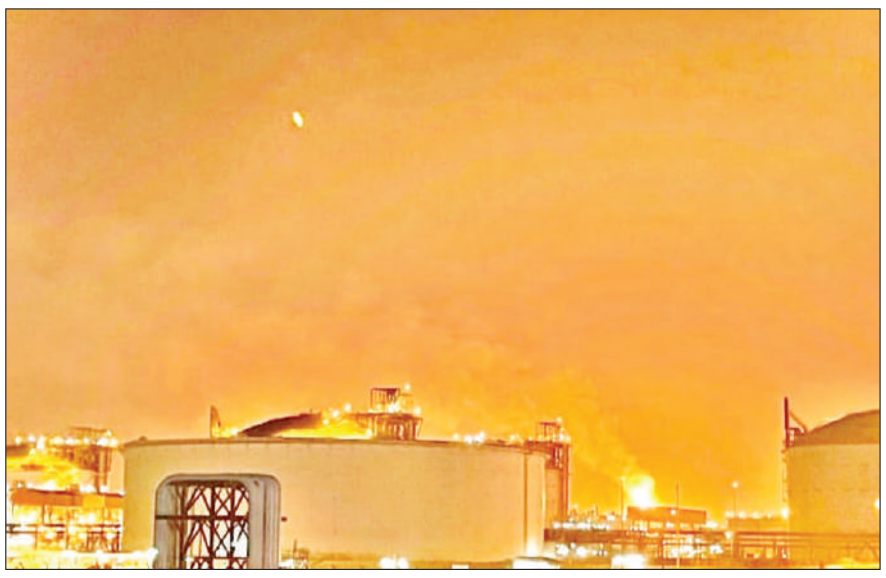

कतर गैस प्लांट हादसा :12 भारतीयों सहित 13 की जान गई, 66 घायलों की हालत स्थिर, मेंटेनेंस के बाद दो दिन पहले ही खोला गया था प्लांट

दोहा

रास लाफ़ान इंडस्ट्रियल सिटी में बरज़ान लोकल गैस सप्लाई फैसिलिटी में रविवार को हुए भीषण धमाके से 12 भारतीयों सहित 13 लोगों की मौत हो गई और 66 लोग घायल हो गए। भारतीय दूतावास के अनुसार, दुर्घटना में घायल हुए अन्य लोगों की स्थिति फिलहाल स्थिर है और उनका उपचार किया जा रहा है। दूतावास ने यह भी बताया कि मृतकों के पार्थिव शरीरों को शीघ्र भारत भेजने की प्रक्रिया को लेकर संबंधित अधिकारियों के साथ समन्वय किया जा रहा है। खास बात यह है कि बरज़ान प्लांट को ज़रूरी मेंटेनेंस के लिए दिसंबर 2025 से बंद रखा गया था और धमाके से सिर्फ़ दो दिन पहले ही इसे दोबारा शुरू किया गया था।

राजधानी दोहा से 80 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में नार्थ फील्ड के पास स्थित रास लाफ़ान इंडस्ट्रियल सिटी कतर के सबसे अहम औद्योगिक केंद्रों में से एक है, जहाँ लगभग 1,15,000 लोग काम करते हैं।

वेबसाइट कतर न्यूज के मुताबिक ऊर्जा मामलों के राज्य मंत्री और कतर एनर्जी के प्रेसिडेंट और सीईओ साद शेरिदा अल-काबी ने सोमवार को हादसे की पुष्टि करते हुए दोहा में प्रेस कान्फ्रेंस में बताया कि धमाका रविवार, 21 जून को रात करीब 10:30 बजे हुआ। उन्होंने साफ किया कि यह एक हादसा था, न कि कोई तोड़-फोड़ या दुश्मनी की वजह से हुई घटना।

उन्होंने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि मारे गए लोगों में भारतीय और पाकिस्तानी नागरिक थे। उन्होंने बताया कि घायल हुए 66 लोगों में से किसी की भी हालत जानलेवा नहीं है। घायलों में कतर, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, केन्या, ईरान, तंजानिया, नाइजीरिया और नेपाल के नागरिक हैं। अल-काबी ने बताया कि बरज़ान प्लांट को ज़रूरी मेंटेनेंस के लिए दिसंबर 2025 से बंद रखा गया था और धमाके से सिर्फ़ दो दिन पहले ही इसे दोबारा शुरू किया गया था। कतर एनर्जी की इमरजेंसी रिस्पान्स टीम और कतर सिविल डिफेंस ने तेज़ी से आग पर काबू पा लिया। घटना की वजह का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी गई है।

कतर एनर्जी के अनुसार, 2022 में शुरू हुए बरज़ान काम्प्लेक्स से घरेलू स्तर पर पाइपलाइन गैस की सप्लाई होती है। इसमें स्थानीय बिजली उत्पादन और पानी को खारापन मुक्त करने वाले (डिसैलिनेशन) प्लांट के साथ-साथ स्थानीय उद्योगों को हर दिन 1.4 बिलियन स्टैंडर्ड क्यूबिक फ़ीट गैस सप्लाई करने की क्षमता है। यह फैसिलिटी स्थानीय बाजार और एक्सपोर्ट, दोनों के लिए इथेन, कंडेनसेट और सल्फर जैसे हाइड्रोकार्बन प्रोडक्ट भी सप्लाई करती है।

न्यूज ब्रीफ

पत्नी ने खोले जेडी वेंस के कई राज पाडकास्ट में किया बड़ा खुलासा

वाशिंगटन। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने हाल ही में फादर्स डे के खास मौके पर एक बड़ा खुलासा किया है। उन्होंने अपनी पत्नी उषा वेंस के लोकप्रिय पाडकास्ट स्टोरीटाइम विद द सेकेंड लेडी में बताया कि वे अपने बच्चों को विदेशी दौरों पर क्यों साथ ले जाते हैं। वेंस ने स्पष्ट किया कि इसका मुख्य उद्देश्य अपने बच्चों को दुनिया के विभिन्न हिस्सों और विभिन्न देशों के नेताओं से परिचित कराना है, ताकि वे वैश्विक परिप्रेक्ष्य को समझ सकें। इस विशेष पाडकास्ट एपिसोड में, जेडी वेंस एक खास मेहमान के तौर पर शामिल हुए थे, जहाँ उन्होंने अपनी सार्वजनिक जिम्मेदारियों, पारिवारिक जीवन और बच्चों के साथ बिताए गए अनमोल पलों के बारे में दिलचस्प बातें साझा कीं। उन्होंने उपराष्ट्रपति के रूप में अपनी अहम जिम्मेदारियों पर प्रकाश डाला, जैसे कि अमेरिकी सीनेट में किसी मुद्दे पर वोटों के बराबर होने की स्थिति में निर्णायक वोट देना, और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण यात्राएं करना। इन यात्राओं के दौरान बच्चों को साथ ले जाने का उनका निर्णय उन्हें एक जिम्मेदार पिता के रूप में भी प्रस्तुत करता है, जो अपने बच्चों की शिक्षा और अनुभव को महत्व देते हैं। बातचीत के दौरान, वेंस ने मुस्कुराते हुए बताया कि उन्हें बच्चों को कहानियां सुनाना बहुत पसंद है। हालांकि, जैसे-जैसे बच्चे बड़े हो रहे हैं, वे खुद किताबें पढ़ने लगे हैं और अब मम्मी-पापा से उतनी कहानियां नहीं सुनना चाहते।

आचार संहिता उल्लंघन करने वाले मीडिया और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को नेपाल प्रेस काउन्सिल की चेतावनी

काठमांडू। नेपाल प्रेस काउन्सिल ने पत्रकार आचार संहिता के विपरीत गतिविधियां और सामग्री प्रसारित करने वाले मीडिया संस्थानों, पत्रकारों और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को सख्त चेतावनी दी है। प्रेस काउन्सिल ने मंगलवार को सभी से आचार संहिता की सीमा में रहकर जिम्मेदारी के साथ सामग्री प्रसारित करने और करवाने की अपील की है।काउन्सिल ने कहा कि हाल के दिनों में कुछ मीडिया संस्थानों, पत्रकारों और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की पेशागत आचरण और मर्यादा के विपरीत गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। काउन्सिल के अनुसार कई आनलाइन समाचार पोर्टल पंजीकरण तो करा रहे हैं, लेकिन समाचार सामग्री प्रकाशित करने के बजाय यूट्यूब चैनल, फेसबुक पेज और रील्स के माध्यम से केवल व्यूज और मोनेटाइजेशन पर केंद्रित तथ्यहीन, झगड़ालू और गाली-गलौज वाली सामग्री प्रसारित कर रहे हैं। काउन्सिल ने यह भी कहा कि बिना अनुमति और पत्रकार परिचयपत्र के विभिन्न सरकारी कार्यालयों, शैक्षिक संस्थानों और कार्यक्रमों में प्रवेश कर अमर्यादित व्यवहार करने, दुर्व्यवहार और विवाद पैदा करने की घटनाएं बढ़ रही हैं। इतना ही नहीं, हाथापाई और विवाद के वीडियो सोशल मीडिया पर सार्वजनिक करने की प्रवृत्ति भी तेजी से बढ़ रही है।

नासा का खास टेलीस्कोप पृथ्वी की ओर खिंच रहा, इसे बचाने जाएगा रोबोटिक यान

वाशिंगटन। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा का स्विफ्ट स्पेस आब्जर्वेटरी, जो पिछले दो दशकों से ब्रह्मांड के सबसे शक्तिशाली विस्फोटों और रहस्यमयी घटनाओं का अध्ययन कर रहा है, अब खतरे में है। साल 2004 में लान्च किया गया यह अंतरिक्ष दूरबीन धीरे-धीरे अपनी कक्षा खो रहा है और पृथ्वी की ओर खिंच रहा है। यदि समय रहते इसे बचाया नहीं गया तो यह साल 2026 के आखिर तक पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश कर जलकर नष्ट हो सकता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इस खतरे को देखते हुए नासा ने स्विफ्ट बूस्ट मिशन नामक एक विशेष बचाव अभियान शुरू किया है। इस मिशन के तहत एरिजोना स्थित कैटलिस्ट स्पेस टेक्नोलाजीज द्वारा विकसित लिंक नामक अंतरिक्ष यान को स्विफ्ट तक भेजा जाएगा। यह यान स्विफ्ट के पास पहुंचकर उससे जुड़ेगा और उसे दोबारा ऊंची और सुरक्षित कक्षा में ले जाकर स्थापित करेगा।

अमेरिका-ईरान समझौता : 300 अरब डालर का निवेश, शर्तों के साथ ईरान का नया आर्थिक अध्याय

तेहरान

करीब चार दशकों के अमेरिकी प्रतिबंधों और अंतरराष्ट्रीय दबाव के बाद, ईरान के लिए बड़े आर्थिक मोड़ की संभावना पैदा हुई है। अमेरिका और ईरान के बीच हुए समझौते के बाद, 300 अरब डालर के एक प्रस्तावित फंड की चर्चा जोर पकड़ रही है, जो कई छोटे देशों की पूरी अर्थव्यवस्था से भी बड़ी रकम है। यह राशि ईरान की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकती है, लेकिन इसके पीछे की कहानी उतनी सीधी नहीं है जितनी दिखती है। यह मामला पहली नज़र में जितना सीधा दिखता है, उतना है नहीं। अमेरिका स्पष्ट कर चुका है कि यह ईरान को सीधे कैश पेमेंट या मुआवजा नहीं है। अमेरिकी अधिकारियों ने साफ किया है कि यह 300 अरब डालर का चेक नहीं, बल्कि एक ऐसा निवेश मंच होगा इसके जरिए अमेरिकी, खाड़ी और दुनिया भर की कंपनियां तथा निवेशक ईरान में पैसा लगाएंगे। यह पैसा सीधे ईरानी सरकार के खाते में नहीं जाएगा, बल्कि निवेश के रूप में आएगा।

इस प्रस्तावित फंड में सिर्फ अमेरिकी ही नहीं, बल्कि खाड़ी देशों, एशिया (जैसे दक्षिण कोरिया, जापान, सिंगापुर, मलेशिया), अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के निवेशक भी रुचि दिखा रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, 300 अरब डालर में से आधे से अधिक राशि के लिए पहले ही शुरुआती कमिटमेंट मिल चुकी है, जो दिखाता है कि यह सिर्फ कागजी योजना नहीं बल्कि एक वास्तविक आर्थिक ढांचा तैयार करने की कोशिश है। जंग के दौरान ईरान के कई अहम औद्योगिक और रणनीतिक ठिकानों, जैसे रिफाइनरियों, हवाई अड्डों और बुनियादी ढांचे को भारी नुकसान पहुंचा था। इसी वजह से तेहरान शुरू में अमेरिका से करीब 400 अरब डालर के मुआवजे की मांग कर रहा था। अमेरिका सीधे मुआवजा देने के लिए तैयार नहीं था, इसलिए बीच का रास्ता निकालते हुए मुआवजे की जगह निवेश का माडल पेश किया।

भले ही अमेरिका विकास और निवेश फंड कह रहा हो, ईरान के कई अधिकारी अप्रत्यक्ष मुआवजे के तौर पर देख रहे हैं, क्योंकि पैसा युद्ध में क्षतिग्रस्त ढांचे के पुनर्निर्माण में ही इस्तेमाल होगा। इस 300 अरब डालर से ईरान अपनी दशकों पुरानी ऊर्जा तकनीकों को आधुनिक बना सकता है, नए रेलवे नेटवर्क, बंदरगाह और हवाई अड्डे विकसित कर सकता है, तथा युद्ध में तबाह हुई कनेक्टिविटी को बहाल कर सकता है। ईरान के पास दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस भंडार और चौथा सबसे बड़ा तेल भंडार है, जिसका वह पूरी क्षमता से इस्तेमाल कर सकेगा।

इस 300 अरब डालर के निवेश फंड से अलग, ईरान के विदेशों में फंसे करीब 24 अरब डालर के सरकारी फंड को भी जारी करने पर सहमति बनी है, जिसमें से आधी राशि अंतिम बातचीत से पहले ही मिल सकती है। हालांकि, सबसे बड़ी बात यह है कि 300 अरब डालर का यह फंड अभी एक प्रस्तावित ढांचा है और यह तुरंत शुरू नहीं होगा। ईरान को समझौते की शर्तों का पालन करना होगा, जिसमें अपने परमाणु कार्यक्रम को सीमित करना, संवर्धित यूरेनियम के भंडार को खत्म करना और अंतरराष्ट्रीय निरीक्षण स्वीकार करना शामिल है। यदि ऐसा नहीं होता है, तब पूरी योजना खतरे में पड़ सकती है। पिछले चार दशकों में ईरान को वैश्विक पूंजी बाजारों तक इतनी बड़ी पहुंच शायद ही कभी मिली हो। यदि यह योजना सफल होती है, तब ईरान न केवल युद्ध से हुए नुकसान की भरपाई कर सकेगा, बल्कि अपनी अर्थव्यवस्था को भी एक नई दिशा दे सकता है। फिलहाल, सभी की निगाहें शुक्रवार पर टिकी हैं, जब अमेरिका-ईरान के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर होने हैं, जो ईरान की अर्थव्यवस्था के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ साबित हो सकता है।

एंडी बर्नहम:कीर स्टार्मर के उत्तराधिकारी और ब्रिटेन के संभावित अगले प्रधानमंत्री

लंदन

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने मंगलवार को अपने पद से इस्तीफा देने की घोषणा की, इसके बाद देश के राजनीतिक गलियारों में खलबली मची है। बीते दस वर्षों में यह सातवें ब्रिटिश प्रधानमंत्री का इस्तीफा है, जो देश की अस्थिर राजनीतिक स्थिति को दिखाता है। रिपोर्टों के अनुसार, स्टार्मर पर इस्तीफा देने का दबाव उनके ही वरिष्ठ मंत्रियों, खासकर विदेश सचिव येवेट कूपर की ओर से आ रहा था, जिन्होंने निजी तौ पर पद छोड़ने के लिए कहा था। इससे पहले, रक्षा मंत्री जान हीली ने डिफेंस बजट में कटौती का आरोप लगाकर स्टार्मर सरकार से इस्तीफा दे दिया था। इस राजनीतिक उथल-पुथल के बीच, सत्तारूढ़ लेबर पार्टी के वरिष्ठ नेता एंडी बर्नहम का नाम अगले प्रधानमंत्री पद के प्रबल दावेदार के रूप में सामने आया है।

बर्नहम ब्रिटेन की लेबर पार्टी के एक प्रमुख नेता हैं और 2017 से ग्रेटर मैनचेस्टर के मेयर के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। जनवरी 1970 में लिवरपूल में जन्मे बर्नहम उत्तर-पश्चिम इंग्लैंड में पले-बढ़े और महज 15 साल की उम्र में उन्होंने लेबर पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली थी। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से अंग्रेजी साहित्य की पढ़ाई करने के बाद, उन्होंने 2001 में पहली बार सांसद के रूप में चुनाव जीता। अपने राजनीतिक करियर में, बर्नहम ने पूर्व प्रधानमंत्रियों टोनी ब्लेयर और गार्डन ब्राउन की लेबर सरकारों के तहत कई महत्वपूर्ण पदों पर काम किया है। 2008 में उन्हें ब्रिटेन का कल्चर सेक्रेटरी नियुक्त किया गया, जिसके बाद 2009 में उन्हें हेल्थ सेक्रेटरी के पद पर पदोन्नत किया गया। इस दौरान उन्होंने इंग्लैंड की प्रतिष्ठित नेशनल हेल्थ सर्विस (एनएचएस) के प्रभारी के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बर्नहम महत्वाकांक्षी नेताओं में से एक रहे हैं और उन्होंने पहले भी दो बार लेबर पार्टी का नेता बनने का प्रयास किया था। 2010 में वे एड मिलिबैंट से हार गए, और 2015 में उन्हें जेरेमी कार्बिन के खिलाफ भी हार का सामना करना पड़ा। हालांकि, वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए, ऐसी प्रबल संभावना है कि इस बार वे पार्टी के नेता का चुनाव जीत सकते हैं, जिससे उनके प्रधानमंत्री बनने का मार्ग प्रशस्त होगा। ग्रेटर मैनचेस्टर के मेयर के तौर पर अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने सार्वजनिक परिवहन, आवास और रोजगार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया है, जिसकी व्यापक सराहना हुई है।

वैज्ञानिकों के बीच नई बहस छेड़ी ड्रैगन मैन की खोपड़ी ने

बीजिंग। पडोसी देश चीन में मिली एक प्राचीन मानव खोपड़ी ने मिली है जिसकी वजह से मानव विकास के इतिहास को लेकर वैज्ञानिकों के बीच नई बहस छिड गई है। लगभग डेढ़ लाख वर्ष पुरानी मानी जा रही इस विशाल खोपड़ी को वैज्ञानिकों ने ड्रैगन मैन नाम दिया है। शोधकर्ताओं का मानना है कि यह खोज मानव विकास की उन कड़ियों को समझने में मदद कर सकती है, जिनके बारे में अब तक बहुत कम जानकारी उपलब्ध थी। इसकी संरचना आधुनिक मानव और अन्य प्राचीन मानव प्रजातियों दोनों से मिलती-जुलती दिखाई देती है, जिससे यह जीवाश्म विशेष रूप से महत्वपूर्ण बन गया है। इस खोपड़ी की कहानी भी बेहद रोचक है। वर्ष 1933 में चीन के हार्बिन क्षेत्र में सोंगहुआ नदी के किनारे निर्माण कार्य के दौरान एक मजदूर को यह खोपड़ी मिली थी। उस समय क्षेत्र जापानी नियंत्रण में था, इसलिए उसने इस दुर्लभ अवशेष को सुरक्षित रखने के लिए एक कुएं में छिपा दिया। कई दशकों तक यह खोपड़ी दुनिया की नजरों से दूर रही। बाद में 2018 में मजदूर के परिवार ने इसे बाहर निकाला और वैज्ञानिकों को सौंप दिया। इसके बाद विशेषज्ञों ने विस्तृत अध्ययन शुरू किया, जिसके परिणामों ने वैज्ञानिक समुदाय को चौंका दिया।

पाक के पूर्व राजनयिक अब्दुल बासित ने माना भारत के एस-400 डिफेंस सिस्टम का लोहा

लाहौर

भारत और पाकिस्तान के बीच सामरिक संतुलन को लेकर पूर्व पाकिस्तानी उच्चायुक्त अब्दुल बासित का बड़ा बयान सामने आया है, जिसने पाकिस्तानी सेना के दावों को पूरी तरह खारिज किया है। पूर्व पाकिस्तानी उच्चायुक्त बासित ने खुले तौर पर माना है कि भारत की हवाई सुरक्षा में तैनात रूसी निर्मित एस-400 ट्रायम्फ एयर डिफेंस सिस्टम बेहद शानदार और अचूक है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी ही सरकार और सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर को आगाह कर माना कि पाकिस्तान के पास फिलहाल इस अत्याधुनिक रूसी रक्षा प्रणाली की काट या इसका मुकाबला करने की कोई ठोस क्षमता मौजूद नहीं है।

अब्दुल बासित का बयान इसलिए बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मई 2025 में दोनों देशों के बीच हुए चार दिनों के सैन्य संघर्ष की हकीकत को बयां करता है। उस झड़प के बाद से ही पाकिस्तानी सेना यह ढिंढोरा पीट रही थी कि हमारी सेना ने भारतीय वायु सीमा की सुरक्षा को भेद कर युद्ध में बढ़त बना ली थी। लेकिन पूर्व पाकिस्तानी उच्चायुक्त बासित ने कबूल किया कि आपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायुसेना के एस-400 सिस्टम ने बेहतर प्रदर्शन कर पाकिस्तानी मंसूबों को नाकाम किया। उन्होंने चेताया कि पाकिस्तानी सेना को अब अपनी कमियों को छिपाने वाले खोखले दावों से बाहर निकलना चाहिए और अपने खुद के एयर डिफेंस को मजबूत करने पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। सामरिक दृष्टिकोण से भारत ने साल 2018 में रूस के साथ 5.43 अरब डालर में पांच एस-400 मिसाइल बैटरियों की खरीद का सौदा किया था। इसमें से अधिकांश बैटरियां भारतीय सेना को मिल चुकी हैं और इसकी अंतिम खेप भी इसी साल के अंत तक भारत पहुंचने की उम्मीद है। इस सिस्टम के जबरदस्त प्रदर्शन को देखकर भारत सरकार अब रूस से ऐसी पांच और अतिरिक्त बैटरियां खरीदने की योजना पर विचार कर रही है। एस-400 ट्रायम्फ की सबसे बड़ी ताकत यह है कि यह लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली बहुस्तरीय प्रणाली है, जो 600 किलोमीटर दूर से ही दुश्मन के लड़ाकू विमानों, ड्रोन, क्रूज और बैलिस्टिक मिसाइलों को ट्रैक कर सकती है और उन्हें 400 किलोमीटर के दायरे में ही हवा में ध्वस्त करने की क्षमता रखती है।

समय से पूर्व यूरोप में पड रही रिकार्ड तोड़ गर्मी, कई इलाकों में हाई अलर्ट

पेरिस

गर्मियों के मौसम की शुरुआत से पहले ही पश्चिमी यूरोप इस साल दूसरी बार एक भयानक हीटवेव की चपेट में आ गया है, जिससे इंग्लैंड से लेकर फ्रांस और जर्मनी तक के लोग एक साथ तपती गर्मी का सामना कर रहे हैं। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि इस हफ्ते गर्मी से कोई राहत नहीं मिलने वाली है, और जून के महीने में इस तरह का तापमान देखकर हर कोई हैरान है। मौसम विभाग ने कई इलाकों में हाई अलर्ट जारी किया है, और फ्रांस में हालात सबसे ज्यादा खराब नजर आ रहे हैं, जहाँ तापमान 42 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच सकता है। जर्मनी और इंग्लैंड में भी रिकार्ड तोड़ने वाली गर्मी पड़ रही है। इस खतरनाक मौसम के पीछे एक खास तरह का वैज्ञानिक कारण, जिसे हीट डोम कहा जाता है, काम कर रहा है। फ्रांस की मौसम एजेंसी ने अपने 60 विभागों में आरेंज अलर्ट जारी किया है, जो उनका दूसरा सबसे बड़ा अलर्ट है। 21 जून से कुछ इलाकों में इसे रेड अलर्ट में भी

बदला जा सकता है। फ्रांस में हीटवेव को कैनिकल कहा जाता है, जिसका मतलब खतरनाक गर्म दिनों और रातों का दौर होता है। एजेंसी का अनुमान है कि 22 जून का दिन सबसे खराब हो सकता है, जब तापमान 37 से 42 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। यह फ्रांस के इतिहास में जून का सबसे गर्म दिन बन सकता है। इंग्लैंड में भी गर्मी से हालात काफी खराब हो गए हैं, जहाँ के मेट आफिस ने दक्षिणी इंग्लैंड के लिए अंबर एक्सट्रीम हीट वार्निंग जारी की है। यह चेतावनी 22 और 23 जून के लिए है, और वहाँ तापमान 34 डिग्री तक पहुँच सकता है, जो साल 1976 में बने 35.6 डिग्री के रिकार्ड के बहुत करीब है। जर्मनी में राष्ट्रीय मौसम सेवा ने लगभग पूरे देश के लिए चेतावनी दी है, जिसमें दक्षिण-पश्चिम इलाके में तापमान 38 डिग्री तक पहुँचने की आशंका है। मौसम विभाग ने बताया है कि इस भयंकर गर्मी के बाद भारी बारिश और ओले भी गिर सकते हैं, और इसके साथ ही खतरनाक तूफान आने की भी आशंका जताई गई है। इस पूरी समस्या के पीछे हीट डोम का हाथ है, जिसे आप एक उबलते बर्तन पर रखे ढक्कन की तरह समझ सकते हैं। इसमें हाई प्रेशर का एक बहुत बड़ा एरिया महाद्वीप के ऊपर ठहर जाता है और हिलने का नाम नहीं लेता। इसके अंदर हवा धीरे-धीरे नीचे की तरफ बैठती है। नीचे आते समय हवा सिकुड़ती है और गर्म हो जाती है, यह बिलकुल साइकिल पंप की तरह काम करता है जो दबाने पर गर्म हो जाता है। नीचे की तरफ आती हवा बादलों को भी पूरी तरह बिखेर देती है, जिससे सूरज की तेज किरणें सीधे जमीन पर पड़ती हैं। ढक्कन की तरह काम करने वाले इस प्रेशर के कारण गर्मी एक ही जगह जमा होने लगती है। सहारा रेगिस्तान से उत्तर की तरफ आने वाली गर्म हवा हालात को और ज्यादा बिगाड़ देती है। परेशानी सिर्फ दोपहर तक ही सीमित नहीं है, विशेषज्ञ ट्रापिकल रातों की चेतावनी भी दे रहे हैं, इन रातों में तापमान कभी 20 डिग्री से नीचे नहीं जाता। इंसान के शरीर को दिन की गर्मी से उबरने के लिए ठंडी रातों की जरूरत होती है, और जब यह राहत नहीं मिलती है तो शरीर पर काफी दबाव पड़ता है। ऐसे में बुजुर्गों और बीमार लोगों को सबसे ज्यादा तकलीफ उठानी पड़ती है। यूरोप के आसपास के समुद्र भी काफी गर्म हो चुके हैं, जिससे तटीय इलाकों में रातें बहुत उमस भरी हो गई हैं।

आज का राशिफल

मेष – चू,चे,चो,ला,लि,लू,ले,लो,अ

परिवार के लोगों के बीच पैसे को लेकर आज कहासुनी हो सकती है। पैसों के मामलों में आपको परिवार के सभी लोगों को स्पष्ट होने की सलाह देनी चाहिए। दफ़्तर की राजनीति हो या फिर कोई विवाद, चीज़ें आपके पक्ष में झुकी नज़र आएंगी। जो लोग घर से बाहर रहते हैं आज वो अपने सारे काम पूरे करके शाम के समय किसी पार्क या एकांत जगह पर समय बिताना पसंद करेंगे। आप दुनिया में ख़ुद को सबसे रईस महसूस करेंगे, क्योंकि आपके जीवनसाथी का व्यवहार आपको ऐसा महसूस कराएगा।

वृषभ – इ,उ,ए,ओ,वा,वि,वु,वे,वो

जमीन या किसी प्रॉपर्टी में निवेश करना आज आपके लिए घातक हो सकता है जितना हो सके इन चीजों में निवेश करने से बचें। परिवार के सदस्य सहयोगी होंगे, लेकिन उनकी काफ़ी सारी मांगें होंगी। अपनी बातों को सही साबित करने के लिए आज के दिन आप अपने संगी से झगड़ सकते हैं। हालांकि आपका साथी समझदारी दिखाते हुए आपको शांत कर देगा। जब आपको लगता है कि आपके पास घर वालों या अपने दोस्तों के लिए टाइम नहीं है तो आपका मन खराब हो जाता है।पारिवारिक विवादों के कारण आज आपका वैवाहिक जीवन प्रभावित रह सकता है।

मिथुन – क,कि,कृ,घ,ङ,छ,के,को,ह

आस–पास के लोगों का सहयोग आपको सुखद अनुभूति देगा। आज यदि आप अपने दोस्तों के साथ कहीं घूमने जा रहे हैं तो पैसा सोच समझकर खर्च करें। धन हानि हो सकती है। रिश्तेदारों और दोस्तों से अचानक उपहार मिलेगा। आपके महंगे तोहफ़े भी आपके प्रिय के चेहरे पर मुस्कान लाने में नाकाम साबित होंगे,दफ़्तर की राजनीति हो या फिर कोई विवाद, चीज़ें आपके पक्ष में झुकी नज़र आएंगी। अपने जिगरी यारों के साथ आज आप खाली समय का आनंद लेने का विचार बना सकते हैं।

कर्क – ही,हु,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो

आपको काफ़ी समय से चल रही बीमारी से छुटकारा मिल सकता है। जिन लोगों को आप जानते हैं, उनके ज़रिए आपको आमदनी के नए स्रोत मिलेंगे। शाम को साथियों का साथ मज़ेदार रहेगा। नौकरी बदलना मददगार साबित होगा। आप अपनी वर्तमान नौकरी को छोड़कर किसी नए क्षेत्र जैसे कि मार्केटिंग वग़ैरह में जा सकते हैं, जो आपके लिए बढ़िया रहेगा। घर के छोटे सदस्यों को साथ लेकर आज आप किसी पार्क या शॉपिंग मॉल में जा सकते हैं। जीवनसाथी के साथ कुछ तनातनी मुमकिन है, लेकिन शाम के खाने के साथ चीज़ें भी सुलझ जाएंगी।

सिंह – म,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे

कुछ दिलचस्प पढ़कर थोड़ी दिमाग़ी कसरत करें। अतिरिक्त धन को रिअल एस्टेट में निवेश किया जा सकता है। जिन्हें आप चाहते हैं, उनके साथ उपहारों का लेन–देन करने के लिए अच्छा दिन है। आज आप अपने दोस्त की महक उसकी अनुपस्थिति में महसूस करेंगे। व्यापारियों के लिए अच्छा दिन है। व्यवसाय के लिए अचानक की गयी कोई यात्रा सकारात्मक परिणाम देगी। आपका जीवनसाथी हाल में हुई खटपट को भुलाकर अपने अच्छे स्वभाव का परिचय देगा।

कन्या – टो,प,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो

आज आप अच्छा पैसा कमाएंगे– लेकिन ख़र्च में इज़ाफ़ा आपके लिए बचत को और ज़्यादा मुश्किल बना देगा। प्रभावशाली और महत्वपूर्ण लोगों से परिचय बढ़ाने के लिए सामाजिक गतिविधियाँ अच्छा मौक़ा साबित होंगी। प्रेम–जीवन में आशा की नयी किरण आयेगी। ऐसे लोगों से साथ जुड़ें जो स्थापित हैं और भविष्य के रुझानों को समझने में आपकी मदद कर सकते हैं। आपका व्यक्तित्व और लोगों से थोड़ा अलग है आप अकेले वक्त बिताना पसंद करते हैं। आज आपको अपने लिए वक्त तो मिलेगा लेकिन ऑफिस की कोई समस्या आपको सताती रहेगी।

तुला – र,री,रू,रे,रो,ता,ति,तू,ते

आज के मनोरंजन में बाहर की गतिविधियों और खेल–कूद को शामिल किया जाना चाहिए। ऐसा लगता है आप जानते हैं कि लोग आपसे क्या चाहते हैं– लेकिन आज अपने ख़र्चों को बहुत ज़्यादा बढ़ाने से बचें। रिश्तेदारों से सहयोग मिलेगा और दिमाग़ी बोझ से छुटकारा मिलेगा। प्रेमी एक–दूसरे की पारिवारिक भावनाओं को समझेंगे। योजनाओं को अमली जामा पहनाने और नयी परियोजनाओं को शुरू करने के लिए अच्छा दिन है। यात्रा के दौरान आप नयी जगहों को जानेंगे और महत्वपूर्ण लोगों से मुलाक़ात होगी।

वृश्चिक – तो,न,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू

आज के दिन आपको आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता । आप ज़रूरत से ज़्यादा ख़र्च करें या आपका बटुआ खो भी सकता है– ऐसे मामलों में सावधानी की कमी आपको नुक़सान पहुँचा सकती है। ज़रूरत के वक़्त आपको दोस्तों का सहयोग मिलेगा। अपने प्रिय को समझने की कोशिश करें, नहीं तो मुश्किल में फँस सकते हैं। करिअर में तरक़्क़ी के लिए नयी क्षमताएँ विकसित करना और नयी तकनीकें सीखना महत्वपूर्ण रहेगा। हवन का आयोजन घर मे होगा। आज आपके वैवाहिक जीवन के सबसे अच्छे दिनों में से एक हो सकता है।

धनु – ये,यो,भ,भी,भू,धा,फा,ढा,भे

जो लोग अब तक पैसे को बिना सोचे विचारे उड़ा रहे थे उन्हें आज पैसे की बहुत आवश्यकता पड़ सकती है। घरेलू मोर्चे पर समस्या खड़ी हो सकती है, इसलिए तोल–मोल कर ही बोले । मीटिंग में हिस्सा लेकर आज आप कई नए विचार पा सकते हैं। बिना किसी पूर्व सूचना के आज आपका कोई रिश्तेदार आपके घर पधार सकता है जिसकी वजह से आपका कीमती समय उनकी खातिरदारी में जाया हो सकता है। अगर आप कोशिश करें तो आप अपने जीवनसाथी के साथ अपने जीवन का सबसे अच्छा दिन आज गुज़ार सकते हैं।

मकर – भो,ज,जी,खि,खू,खे,खो,ग,गि

आपका सबसे बड़ा सपना हक़ीक़त में बदल सकता है। लेकिन अपने उत्साह को क़ाबू में रखें, क्योंकि ज़्यादा ख़ुशी भी परेशानी का सबब बन सकती है। दिन चढ़ने पर वित्तीय तौर पर सुधार आएगा। घरेलू मामलों और काफ़ी समय से लंबित घर के काम–काज के हिसाब से अच्छा दिन है। प्यार–मोहब्बत के मामले में दबाव बनाने की कोशिश न करें। अगर आप यक़ीन करते हैं कि वक़्त ही पैसा है तो आपको अपनी क्षमताओं को शीर्ष पर पहुँचाने के लिए ज़रूरी क़दम उठाने होंगे। आज रात को जीवनसाथी के साथ खाली वक्त बिताते समय आपको लगेगा कि आपको उन्हें और भी वक्त देना चाहिए। जीवनसाथी का स्वास्थ्य कुछ गड़बड़ हो सकता है।

कुम्भ – गु,गे,गो,सा,सी,सू,से,सो,द

आज आप अपने घर में या उसके आस–पास आज कुछ बड़े बदलाव करें। आप साथ में कहीं घूमने–फिरने जाकर अपने प्रेम–जीवन में नयी ऊर्जा का संचार कर सकते हैं। आपके काम को देखते हुए आज आपकी तरक्की भी संभव है। कार–ोबारी आज अनुभवी लोगों से करोबार को आगे बढ़ाने की सलाह ले सकते हैं। इस राशि के लोग बड़े ही दिलचस्प होते हैं। वैवाहिक सुख के दृष्टिकोण से आज आपको कुछ अनोखा उपहार मिल सकता है।

मीन – दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची

मानसिक दबाव से बचने के लिए कुछ रोचक और अच्छा पढ़ें। घर में किसी फंक्शन के होने की वजह से आज आपको बहुत धन खर्च करना पड़ेगा जिसके कारण आपकी आर्थिक स्थिति खराब हो सकती है। अपने प्रिय की नाराज़गी के बावजूद अपना प्यार ज़ाहिर करते रहें। जिस पहचान और पुरस्कार की उम्मीद आप कर रहे थे, वह बाद के लिए टल सकती है और आपको हताशा का सामना करना पड सकता है। अपने व्यक्तित्व और रंग–रूप को बेहतर बनाने का कोशिश संतोषजनक साबित होगी।

आज का पंचांग

दिनांक : 24 जून 2026, बुधवार
विक्रम संवत : 2083
मास : ज्येष्ठ , शुक्ल पक्ष
तिथि : दशमी सायं 06:13 तक
नक्षत्र : चित्रा दोपहर 01:56 तक
योग : परिघ प्रातः 10:18 तक
करण : गर सायं 06:13 तक
चन्द्रराशि : तुला
सूर्योदय : 05:42, सूर्यास्त 06:51 (हैदराबाद)
सूर्योदय : 05:54, सूर्यास्त 06:47 (बैंगलोर)
सूर्योदय : 05:45 , सूर्यास्त 06:41(तिरुपति)
सूर्योदय : 05:35 ,सूर्यास्त 06:41 (विजयवाडा)

शुभ चौघड़िया
लाभ : 06:00 से 07:30
अमृत : 07:30 से 09:00
शुभ : 10:30 से 12:00
चल : 03:00 से 04:30
लाभ : 04:30 से 06:00
राहुकाल : दोपहर 12:00 से 01:30
दिशाशूल : उत्तर दिशा
उपाय : तिल्ली खाकर यात्रा का आरंभ करें
दिन विशेष : श्री बटुक भैरव जयंती , श्री गंगा दशहरा , श्रीराम शर्मा पुण्य

* पाण्डित्य विषय में सम्पर्क करें *

पं.चिदम्बर मिश्र (टिल्लू महाराज)
हमारे यहाँ पाण्डित्य पूर्ण यज्ञ अनुष्ठान, भागवत कथा एवं मूल पारायण, वास्तुशान्ति, गृहप्रवेश,शतचंडी, विवाह, कुंडली मिलान, नवग्रह शान्ति, ज्योतिष सम्बन्धी शंका समाधान किए जाते हैं
फक्कड़ का मन्दिर, रिकाबगंज, हैदराबाद, (तेलंगाना)
9246159232, 9866165126
chidamber011@gmail.com

वाईएसआरसीपी की कापू सभा नहीं, बल्कि राजनीतिक बेरोजगारों की चीत्कार सभा: साना सतीश बाबू

विजयवाड़ा, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो): तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के राज्यसभा सांसद साना सतीश बाबू ने तीखा हमला बोलते हुए कहा है कि काकीनाडा जिले में हाल ही में आयोजित की गई 'कापू सभा' वास्तव में कापू समुदाय की आत्मीय बैठक नहीं थी, बल्कि वह पूरी तरह से राजनीतिक रूप से बेरोजगार हो चुके नेताओं की चीत्कार सभा थी। मंगलवार को राज्य सचिवालय में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए सांसद ने आरोप लगाया कि वाईएसआरसीपी नेता कापू समुदाय के प्रति किसी वास्तविक प्रेम के कारण नहीं, बल्कि विशुद्ध रूप से अपने राजनीतिक फायदे के लिए इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। साना सतीश बाबू ने वाईएसआरसीपी नेताओं से तीखे सवाल पूछते हुए कहा, चुनाव से पहले जब वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी ने यह घोषणा की थी कि कापू समुदाय को आरक्षण की आवश्यकता नहीं है, तब ये सभी वाईएसआरसीपी नेता चुप क्यों थे? उन्हें आज इसका जवाब देना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि साल 2014 से 2019 के बीच जब नारा चंद्रबाबू नायडू मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने कापू समुदाय को 5% ईडब्ल्यूएस आरक्षण दिया था। लेकिन बाद में जगन सरकार ने इसे रद्द कर दिया। उस समय भी कापू समुदाय के इन नेताओं से कोई आवाज क्यों नहीं उठाई?

चंद्रबाबू नायडू के कार्यकाल की उपलब्धियों को याद दिलाते हुए सांसद ने कहा कि उस दौरान राज्यभर में 27 कापू भवनों के निर्माण की शुरुआत की गई थी और लगभग 80% काम पूरा भी हो चुका था। लेकिन वाईएसआरसीपी सरकार ने उन बचे हुए कामों को रोक दिया। उन्होंने पूछा कि जब यह काम रोका गया, तब ये कापू नेता कहाँ छिपे थे?

वाईएसआरसीपी पर कड़ा प्रहार करते हुए साना सतीश बाबू ने कहा कि वाईएसआर-रसीपी को केवल जाति की राजनीति करना ही आता है। यहाँ तक कि कहीं किसी की मृत्यु भी हो जाए, तो वहाँ जाकर राजनीति करना उनकी आदत बन चुकी है। हाल ही में हुई एक लॉकअप डेथ (हिरासत में मौत) की घटना को भी उन्होंने जातिगत राजनीति का रंग देने की कोशिश की।साना सतीश बाबू ने कहा कि तत्कालीन जगन सरकार ने कोनसीमा के शांत वातावरण को अपनी जातिगत राजनीति की आग से नष्ट कर दिया। उस समय लगभग 160 कापू युवाओं को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन वाईएसआर-रसीपी के नेताओं ने उनके पक्ष में एक शब्द भी नहीं बोला। और आज वही नेता कापू समुदाय के नाम पर सभाएं कर रहे हैं, जो बेहद शर्मनाक है।

बांसवाड़ा के डांस मास्टर अन्नम अनिल की सड़क हादसे में मौत

बांसवाड़ा, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। मंगलवार सुबह गांधीनगर, निज़ामाबाद के पास हुए सड़क हादसे में बांसवाड़ा के मशहूर डांसर और नटराज नाट्यमंडली के ऑर्गेनाइज़र अन्नम अनिल (34) की मौत हो गई। बाइक से निज़ामाबाद जाते समय उनका संतुलन बिगड़ा और बांसवाड़ा डिपो की आरटीसी बस से टकरा गए। मौके पर ही मौत हो गई। अनिल के परिवार में पत्नी और दो बच्चे हैं।

निज़ामाबाद रूरल पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शव पोस्टमॉर्टम के लिए डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल हॉस्पिटल भेजा गया।

फूड टेस्टिंग लैब्स के विस्तार की मांग

जिला कलेक्टर को भाजपा नेताओं ने सौंपा ज्ञापन

विजयवाड़ा, 22 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। लोक शिकायत निवारण प्रणाली (पीजीआरएस) कार्यक्रम के तहत एनटीआर जिले में मिलावटी खाद्य पदार्थों पर प्रभावी नियंत्रण, मांस विक्रय दुकानों की नियमित निगरानी तथा फूड टेस्टिंग लैब्स की आधारभूत सुविधाओं के विस्तार हेतु आवश्यक कदम उठाने की मांग को लेकर भाजपा नेताओं ने सोमवार को एनटीआर जिला कलेक्टर डॉ. जी. लक्ष्मिशा (आईएएस) से भेंट कर ज्ञापन सौंपा। भाजपा प्रतिनिधिमंडल ने ज्ञापन में कहा कि आमजन के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए खाद्य पदार्थों में मिलावट रोकना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए जिले में नियमित निरीक्षण अभियान चलाए जाएं तथा मांस विक्रय दुकानों की सघन निगरानी सुनिश्चित की जाए। साथ ही खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता जांच के लिए फूड टेस्टिंग लैब्स की सुविधाओं को और अधिक सुदृढ़ एवं विस्तारित किया जाए।

प्रतिनिधिमंडल ने जिला कलेक्टर से जनता वारधि कार्यक्रम के अंतर्गत नागरिकों से प्राप्त अर्जियों एवं विनतियों की समीक्षा कर उनके त्वरित समाधान के लिए आवश्यक कार्रवाई करने का भी अनुरोध किया। भाजपा नेताओं ने कहा कि जनसमस्याओं के शीघ्र निवारण से आम जनता का प्रशासन के प्रति विश्वास और अधिक मजबूत होगा।

इस अवसर पर भाजपा एनटीआर जिला उपाध्यक्ष श्री चैतन्य शर्मा, जिला सचिव श्री पुल्लेटी कोटेश्वर राव, भाजपा गवर्नरपेट मंडल अध्यक्ष श्री प्रवीण जैन रांका, भाजपा माचवरम मंडल अध्यक्ष श्री पेदपाटी चंद्रशेखर सहित अन्य भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

70वें जन्मोत्सव पर अन्नदान कर श्रीमती शशि गुप्ता ने दिया सेवा, संवेदना और मानवता का संदेश

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में मंगलवार को नामपल्ली स्थित पब्लिक गार्डन पिलर नंबर 1265-ए के पास संचालित नियमित अन्नदान कार्यक्रम में श्रीमती शशि गुप्ता ने अपने 70वें जन्मोत्सव के अवसर पर विशेष अन्नदान सेवा का आयोजन किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में जरूरतमंदों को भोजन वितरित किया गया तथा मानव सेवा के इस पुनीत कार्य में अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं गणमान्य नागरिकों ने सहभागिता निभाई।

अपने विचार व्यक्त करते हुए श्रीमती शशि गुप्ता ने कहा कि जीवन में अनेक जन्मदिन मनाने का अवसर मिला, लेकिन इस बार का जन्मदिन उनके लिए सबसे अलग, प्रेरणादायी और यादगार रहा।

उन्होंने कहा कि सामान्यतः जन्मदिन परिवार और मित्रों के बीच मनाया जाता है, लेकिन जरूरतमंदों के बीच अन्नदान कर जो आत्मिक शांति, संतोष और आनंद प्राप्त हुआ, वह किसी भी उत्सव से बढ़कर है।

उन्होंने कहा कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहायता पहुंचाने का भाव ही सच्ची मानवता है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के विशेष अवसरों को सेवा कार्यों से जोड़ना चाहिए।

कार्यक्रम में उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ, पुण्यतिथि एवं अन्य पारिवारिक अवसरों को सेवा कार्यों से जोड़ने की परंपरा समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य करती है। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद इसी भावना को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहा है।

इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों ने श्रीमती शशि गुप्ता को उनके 70वें जन्मोत्सव की शुभकामनाएं देते हुए स्वस्थ, सुखमय एवं दीर्घायु जीवन की मंगलकामनाएं कीं। कार्यक्रम का वातावरण सेवा, समर्पण और सामाजिक सद्भावना से ओतप्रोत रहा।

कार्यक्रम में श्रीमती शशि गुप्ता, सौरभ गुप्ता, अनय गुप्ता, विशाल अग्रवाल, शिवानी अग्रवाल, राम प्रकाश अग्रवाल, सुनीता अग्रवाल, संजय गोयल, किरण गोयल, रोहित अग्रवाल, सुमन अग्रवाल, जगन गुप्ता, प्रीतिका अग्रवाल, जय प्रकाश सारड़ा, भाकर राम कुमावत, कमला देवी कुमावत, गजराज जैन एवं महेश अग्रवाल सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

मंचेरियाल में अतिक्रमण हटाओ अभियान, कई दुकानें हटाई गईं

मंचेरियाल, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। मंगलवार सुबह नगर परिषद आयुक्त अन्वेष और एसीपी प्रकाश की निगरानी में मार्केट रोड व थाना के सामने अतिक्रमण कर चल रहीं 50 से ज्यादा दुकानों को हटाया गया।

बार-बार चेतावनी के बावजूद व्यापारी नहीं हटे थे। कार्रवाई के दौरान पुलिस-व्यापारियों में हल्की झड़प हुई। अतिरिक्त बल तैनात कर अभियान पूरा किया गया। पूर्व विधायक नडेपल्ली दिवाकर राव ने मौके पर पहुंचकर व्यापारियों को सांत्वना दी। उन्होंने बिना नोटिस दुकानें तोड़ने को गलत बताया और कलेक्टर व विधायक प्रेम सागर राव से व्यापारियों को दूसरी जगह देने की मांग की। मांग पूरी न होने पर भारासा पार्टी के आंदोलन की चेतावनी दी।

फॉरेस्ट-रेवेन्यू जमीन विवाद सुलझाने को एक्शन प्लान बनाने के निर्देश

पेद्दापल्ली, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर कोया श्रीहर्ष ने मंगलवार को इंटीग्रेटेड डिस्ट्रिक्ट कलेक्ट्रेट कॉन्फ्रेंस हॉल में डीएलएफपीसी मीटिंग में फॉरेस्ट और रेवेन्यू लैंड से जुड़े विवाद सुलझाने के लिए एक्शन प्लान बनाने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि फॉरेस्ट एरिया से रेत परिवहन सरकारी गाइडलाइंस के अनुसार हो। रेवेन्यू और फॉरेस्ट अधिकारी रेत माइनिंग परमिट पर जॉइंट सर्वे करें। विवादित जमीनों का जॉइंट इंस्पेक्शन कर पूरी रिपोर्ट सौंपी जाए। कलेक्टर ने विकास कार्यों के लिए जरूरी फॉरेस्ट लैंड के प्रस्ताव 30 जून तक जमा करने और कुछ धान की जमीनों में बिजली खंभे लगाने की अनुमति देने को कहा। मीटिंग में डीएफओ राम रेड्डी, एडिशनल कलेक्टर कोप्पुला वेंकट रेड्डी, आरडीओ बी. गंगैया, सहकारी डीएफओ नवीन रेड्डी और अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

सुल्तानाबाद में बीज मेले का शुभारंभ किसानों को सब्सिडी पर बीज वितरित

पेद्दापल्ली, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। सरकारी व्हिप व विधायक चिंताकुंटा विजयरमण राव ने मंगलवार को सुल्तानाबाद मंडल के कटनपल्ली गांव में रायथु वेदिका में बीज मेले का शुभारंभ कर किसानों को सब्सिडी वाले बीज बांटे।

विधायक ने कहा कि कांग्रेस सरकार किसानों को समय पर बीज-खाद दे रही है। सीएम रेवंत रेड्डी की घोषणा के तहत बढ़िया धान पर 500 प्रति क्विंटल बोनस दिया जा रहा है। राज्य में 1,750 करोड़ का बोनस बांटा गया, जिसमें पेद्दापल्ली विधानसभा को 88.40 करोड़, सुल्तानाबाद मंडल को 16.12 करोड़ और कटनपल्ली गांव को 62.91 लाख मिले।उन्होंने बीआरएस पर किसानों को धोखा देने और भाजपा पर फसल खरीद न करने का आरोप लगाया। बताया कि राज्य सरकार ने मार्कफेड से 2,400 समर्थन मूल्य पर 15 लाख मीट्रिक टन मक्का खरीदा।

कृषि विशेषज्ञों की सलाह पर सांबा मसूरी, तेलंगाना सोना, एचएमटी सोना, जय श्रीराम, कुनाराम सन्नालु, बारंगल 4444, केएनएम 7715 इन 7 बढ़िया किस्मों पर ही बोनस मिलेगा। किसानों से ऑर्गेनिक खाद अपनाने की अपील की।

कार्यक्रम में डिस्ट्रिक्ट लाइब्रेरी चेयरमैन, सरपंच, एग्रीकल्चर ऑफिसर, मार्केट चेयरमैन, वार्ड मेंबर, किसान और कांग्रेस नेता मौजूद रहे।

मतदाता सूची संशोधन पर बीएलए बैठक आयोजित

मंचेरियाल, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। विधायक के. प्रेम सागर राव के आदेश पर मंगलवार को उनके आवास पर टीपीसीसी के तत्वावधान में मतदाता सूची के विशेष व्यापक संशोधन को लेकर बैठक हुई। पूर्व डीसीसी अध्यक्ष कोक्किराला सुरेखा प्रेम सागर राव की देखरेख में नगर निगम के वार्ड 3, 4, 5, 6, 7, 8, 24, 29 के बूथ लेवल एजेंटों की बैठक संपन्न हुई। इस दौरान 32 प्रभागों के बीएलए के लिए जागरूकता-प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में निगम पदाधिकारी, नेता, महिला नेता, युवा कांग्रेस नेता, जनप्रतिनिधि, बूथ स्तर के एजेंट और कार्यकर्ता शामिल हुए।

ड्रग्स जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

पेद्दापल्ली, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। इंटरनेशनल डे अगेंस्ट ड्रग अब्यूज एंड इलिसिट ट्रैफिकिंग पर तेलंगाना डीजीपी और रामागुंडम सीपी के निर्देशानुसार मंगलवार को मदर टेरेसा इंजीनियरिंग कॉलेज में ड्रग्स अवेयरनेस प्रोग्राम हुआ।

पेद्दापल्ली रूरल एसआई मधुकर ने कहा कि नशा व्यक्ति, परिवार, समाज और देश के भविष्य के लिए घातक है। उन्होंने युवाओं को ड्रग्स से दूर रहकर शिक्षा, अनुशासन और देशसेवा पर ध्यान देने की सलाह दी। छात्रों को लक्ष्य चुनकर आगे बढ़ने की बात कही।

कार्यक्रम में निबंध लेखन प्रतियोगिता भी हुई। एसआई स्वेता, पुलिसकर्मी और कॉलेज प्रबंधन मौजूद रहे।

लक्ष्मीगुडा में संगीतमय अखंड श्रीरामचरितमानस पाठ एवं प्रसादी का आयोजन

श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से लिया धर्मलाभ

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। लक्ष्मीगुडा स्थित बीरेन्द्र एवं अर्चना पाण्डेय के निवास पर संगीतमय अखंड श्रीरामचरितमानस पाठ एवं प्रसादी का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर भगवान श्रीराम के चरणों में श्रद्धा अर्पित की तथा धर्मलाभ प्राप्त किया। अखंड श्रीरामचरितमानस पाठ के दौरान भजनों एवं संगीतमय प्रस्तुति से पूरा वातावरण राममय हो गया।

श्रद्धालुओं ने पूरे उत्साह एवं भक्ति भाव के साथ पाठ में सहभागिता निभाई। आयोजन के पश्चात सभी श्रद्धालुओं को प्रसादी वितरित की गई।इस अवसर पर विंध्याचल ब्राह्मण सेवा संघ के अध्यक्ष सुनील कुमार पाण्डेय, प्रवक्ता प्रदीप कुमार पाण्डेय, अनिल कुमार पाण्डेय, शिवकुमार तिवारी, रामनारायण त्रिपाठी, शिवनारायण त्रिपाठी, संतोष पाठक, अलकेश मिश्रा, संदीप शुक्ला, शालिग्राम, मनोज महाराज, हरिनारायण तिवारी, दीपनारायण तिवारी, दिलीप पाण्डेय, मनोज पाण्डेय, बिकास पाण्डेय सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

तप और वैराग्य

तप और वैराग्य की पतवार के सहारे ही जीवन-रूपी नाव को सहजता से किनारे ले जा सकते हैं। सत्य की प्राप्ति तपस्वी ही कर सकता है। शारीरिक और मानसिक प्रलोभनों से बचने में जिस सहिष्णुता, धैर्य और संयम की आवश्यकता पडती है, उसे जुटा लेने का नाम ही तप है। अकारण शरीर को सताने का नाम तप नहीं है। सताना तो किसी का भी बुरा है, फिर शरीर को व्यथित और संतप्त करने से क्या होगा। तपस्या वह है, जो सत्य जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने के कारण सीमित उपार्जन से निर्वाह करने की स्थिति में मितव्ययिता अपनानी पडती है। इसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार और शिरोधार्य करने का नाम ही तो तप- साधना है। इसी प्रकार, वैराग्य का अर्थ घर-

परिवार को छोड, विचित्र वेश बनाना या भिक्षाटन करना नहीं है, वरन यह है कि जिस राग-द्वेष की धूप-छांह में सारा जगत हंसता, रोता, अशांत और उद्विग्न रहता है, उस विडंबना से बचते हुए महान लक्ष्य की ओर अनवरत गति से चलते जाना। सत्यनिष्ठ व्यक्ति इस असत्यमग्न संसार को एक विचित्र प्राणी लगता है। उसे भी अज्ञान के अंधकार में भटकती दुनिया दयनीय लगती है। दोनों का तालमेल नहीं बैठता। यह विसंगति कहीं कटुता उत्पन्न करती है, कहीं तिरस्कार उलीचती है। कहीं अवरोध उत्पन्न करती है, तो कहीं त्रास देती है। इसे उपेक्षापूर्वक देखना वैराग्य है और इस पर भी जो त्रास सहने पडे, उन्हें संतोषपूर्वक सहने का नाम तप है। वैराग्य और तप की पतवार के सहारे विवेकवान व्यक्ति अपनी साधना की नाव खेते हैं और सत्य के परम लक्ष्य तक जा पहुंचते हैं।

जो भक्त करते हैं साई बाबा का व्रत उनके दूर हो जाते हैं कष्ट

कहते हैं अगर साई बाबा का व्रत 9 गुरुवार तक लगातार किया जाए , तो साई भक्त की हर मनोकामना पूरी हो सकती है। फिर चाहे वह मनोकामना नौकरी, शादी, स्थानांतरण की हो या फिर किसी भी तरह की। दुख से भरे मन को साई सहारा देते हैं। गुरुवार का दिन साई का रहता है और इस दिन जो साई भक्त व्रत और पूजा करता है। साई की उस पर विशेष कृपा बरसती है। साई बाबा का व्रत कोई भी कर सकता है। यहां तक की बच्चें भी साई के व्रत को कर सकते हैं। साई अपने भक्तों में किसी भी तरह का भेदभाव नहीं करते हैं, अमीर हो या गरीब सभी बाबा के दर पर आते हैं और झोली भरकर खुशियां ले जाते हैं। साई बाबा का व्रत एक बार शुरु करने के बाद 9 गुरुवार तक किया जाता है। इस व्रत को आप बीच में नहीं छोड सकते हैं। मुश्किल कैसी भी हो 9 व्रत पूरे तक इसे नहीं छोडा जा सकता है। जब 9 व्रत करते हुए नौ गुरुवार पूरे हो जाएं तो पांच गरीबों को भोजन और अपनी इच्छानुसार दान देना होता है। इसके साथ ही साई बाबा की पुस्तकें भी बांटनी होती हैं। गुरुवार के दिन शुक्लपक्ष या कृष्णपक्ष किसी भी तिथि में व्रत शुरु कर सकते हैं। 9 गुरुवार तक व्रत करने से मकान मिलना, नौकरी मिलना या विदेश यात्रा पर जाना संभव हो पाता है। मान्यता है कि साई को कुमकुम लगाने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है। मौली (कलावा या रक्षा सूत्र) बांधने से इंसान मर्यादा में रहता है।

दूध अर्पित करने से वंश की वृद्धि होती है। दही समर्पित करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है और शहद अर्पित करने से जीवन में मधुरता आती है। साई बाबा की पूजा करते समय हमेशा दाहिनी और घी का दीपक और बायीं और तेल का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए।

घी का दीपक प्रज्वलित करने से घर में यश और खुशी की आती है और तेल का दीपक प्रज्वलित करने से किसी भी प्रकार की गृहदशा, मंगल दोष शनिदोष दूर होता है।

इस तैरते हुए मंदिर में आने से सुख सृमद्धि बढती है, यही जटायु ने किया था रावण से युद्ध

आँध्रप्रदेश के अनंतपुर में स्थित एक छोटा सा गाँव है, मान्यता है की यह रामायण के समय की वो ही जगह है जहाँ रावण से युद्ध के पश्चात घायल हो के गिद्धराज-जटायू गिरे थे। साथ ही यंहा ये मंदिर सोलहवीं सदी में बना है जो अपने जबरदस्त हस्तकला के लिए जाना जाता है। मंदिर काफी बडे क्षेत्र में फैला है और इसमे नारायण महादेव और वीरभद्रा के तीन अलग अलग मंदिर भी आकर्षण का केंद्र है।

मंदिर को झूलते हुए मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, इसमे सत्तर खम्भे लगे है जिसमे से एक हवा में तैर रहा है। इस एक झूलते हुए खम्भे के कारण इसे हैंगिंग टेम्पल कहा जाता है। ये खम्भा पहले हवा में नहीं तैर रहा था पर एक ब्रितानी कारीगर ने जब ये जानना चाहा के ये खम्बे टीके किस पर है और नीचे से सफाई की तो ये खम्भा भी झूल गया, इसका मतलब ये भी है की बाकि के खंभे भी हवा में है।

मंदिर की मान्यता यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की मान्यता है की इसके नीचे से कपडा निकलने से सुख सृमद्धि बढती है। इस मंदिर का निर्माण कि पौराणिक मान्यता यह है की लेपाक्षी परिसर में स्थित विरभद्र मंदिर का निर्माण ऋषि अगस्तय ने करवाया था। जब राम सीता को तलाशते हुए यहां राम लखन पहुंचे तो उन्होंने उस घायल पक्षी को देख कर कहा 'ले पाक्षी' यानी की उठो पक्षी जो कि एक तेलगु शब्द है। मंदिर से 200 मीटर दूर मेन रोड पर एक ही पत्थर से बनी विशाल नंदी प्रतिमा है जो की 27 फीट लम्बी, 4.5 मीटर ऊंची है। यह एक ही पत्थर से बनी नंदी की सबसे विशाल प्रतिमा है जबकि एक ही पत्थर से बनी दूसरी सबसे बडी प्रतिमा है (गोमतेश्वर सबसे बडी)। एक ही ग्रेनाइट पत्थर से बनी विशाल नागलिंग प्रतिमा भी स्थापित है जो की संभवतया सबसे विशाल नागलिंग प्रतिमा हैं। इस काले ग्रेनाइट से बनी प्रतिमा में एक शिवलिंग के ऊपर सात फन वाला नाग फन फैलाय बैठा है। मंदिर में स्थित है राम पदचिन्ह जबकि कइयों का मानना है की यह माता सीता के पैरों के निशान है।

जानिये ऐसा क्या हुआ की कृष्ण ने कर्ण की प्रशंसा की

एक बार कृष्ण और अर्जुन एक गांव की तरफजा रहे थे तभी अर्जुन ने कृष्ण से कहा कि क्यों कर्ण को दानवीर कहा जाता है और उन्हें नहीं। यह सुन कर कृष्ण ने दो पर्वत को सोने में बदल दिया, और अर्जुन से कहा कि वह इसका सारा सोना गाँव वालो के बीच में बाट दे। तब अर्जुन गाँव गए और सारे लोगों से कहा कि वे पर्वत के पास इक्कट्ठा हो जाएं क्योंकि वे सोना बाटने जा रहें हैं।

पांचों पांडवों से ज्यादा बलवान और बुद्धिमान कर्ण से सीखें ये 7 चीजें यह सुन कर गाँव वालो ने अर्जुन की जय जय कार करनी शुरू कर दी और अर्जुन छाती चौडी कर पर्वत की तरफचल दिए। दो दिन और दो रातों तक अर्जुन ने सोने के पर्वत खोदा और खोद कर सोना गाँव वालो में बाटा। इतने से पर्वत पर कोई असर नहीं हुआ। लेकिन बहुत सारे गाँव वाले वापस आके कतार में खडे होकर इंतजार करने लगे। अर्जुन अब थक चुके थे लेकिन अपने अहंकार को नहीं छोड रहे थे। उन्होंने कृष्ण से कहा कि अब वो थोडा आराम करना चाहते हैं इसके बिना वो खुदाई नहीं कर पाएंगे। तब कृष्ण ने कर्ण को बुलाया और कहा कि सोने के पर्वत को इन गाँव वालों के बीच में बाट दें। गीता के इन उपदेशों को मानिये, जीवन में कभी नहीं होगी आपकी हार कर्ण ने सारे गाँव वालों को बुलाया और कहा कि ये दोनों सोने के पर्वत उनके हैं और उनसे आ कर सोना ले लो। अर्जुन भौंचक्के हो गये और सोचने लगे कि यह ख्याल उनके दिमाग में क्यों नहीं आया।

तभी कृष्ण मुस्कुराये और अर्जुन से बोले कि तम्हे सोने से मोह हो गया था और तुम गाँव वालो को उतना ही सोना दे रहे थे जितना तुम्हें लगता था कि उन्हें जरुरत है। इसलिए सोने को दान में कितना देना है इसका आकार तुम तय कर रहे थे।

ये हैं महाभारत की 10 प्रेम कहानियाँ जो कोई नहीं जानता लेकिन कर्ण ने यह सब नहीं सोचा और दान देने के बाद कर्ण वह से दूर हट गया। वह नहीं चाहता कि कोई उसकी प्रशंसा करे और ना उसे इस बात से कोई फर्क पडता है कि कोई उसके पीछे उसके बारे में क्या बोलता है। यह एक निशानी है उस आदमी की जो आत्मज्ञान हासिल कर चुका है। दान देने के बदले में धन्यवाद या बधाई की उम्मीद करना उपहार नहीं सौदा कहलाता है। इसलिए दान करो बिना किसी उम्मीद के ।

यमुना नदी, यमराज की बहन है

हिंदू पौराणिक ग्रंथों के अनुसार यमुना नदी, यमराज की बहन है। जिसका नाम यमी भी है। यमराज और यमी के पिता सूर्य हैं। यमुना नदी का जल पहले साफ, कुछ नीला, कुछ सांवला था, इसलिए इन्हें 'काली गंगा और 'असित' भी कहते हैं। असित एक ऋषि थे। सबसे पहले यमुना नदी को इन्होंने ही खोजा था। तभी से यमुना का एक नाम 'असित' संबोधित किया जाने लगा। यमुना जिसे यमुनोत्री भी कहा जाता है। यह नदी उत्तरकाशी से 30 किमी उत्तर, गढवाल से निकली है। और अंत में इलाहाबाद में गंगा नदी से मिल जाती है। जहां यह त्रिवेणी(गंगा, सरस्वती, जमुना या यमुना) कहलाती है। यमुना की सहायक नदियां चम्बल, सेंगर, छोटी सिन्ध, बेतवा और केन हैं। यमुना के तटवर्ती नगरों में दिल्ली और आगरा के अतिरिक्त इटावा, काल्पी, हमीरपुर और प्रयाग मुख्य है। जिस तरह भगवान श्रीकृष्ण को ब्रज संस्कृति का जनक कहा जाता है, ठीक उसी तरह यमुना को जननी का स्थान दिया गया है।

किस करण से कुंभकर्ण सोता था 6 महीनों तक, जानें रहस्य

इंद्र-इंद्र देवताओं के देवता थे लेकिन वे कुंभकर्ण से ईर्षा करते थे क्योंकि वह बहुत बुद्धिमान और बहादुर था। इसके लिए इंद्र कुंभकर्ण से बदला लेने के लिए सही समय का इंजार कर रहे थे।

यज्ञ-तीनों भाई रावण, कुंभकर्ण और विभीषण ने ब्रहमा को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ और यागा किया।

वरदान या अभिशाप-यज्ञ से प्रसन्न होके तीनो भाइयों को वरदान देने के लिए ब्रहमा प्रकट हुए। और उन्होंने ने कुंभकर्ण से पूछा की उसे क्या वरदान चाहिए। तब कुंभकर्ण ने कहा कि उसे इंद्रासन चाहिए लेकिन उसके मुँह से निद्रासन निकला।

व्याकुल कुंभकर्ण-जब कुंभकर्ण ने इंद्रासन की बजाये निद्रासन कहा तब उसे अपनी गलती का अहसास हुआ की उसने क्या कहा दिया। जब तक उसे कुछ समझ आता ब्रहमा तथाअस्तु बोल चुके थे। हालांकि की कुंभकर्ण ने कहा कि उसकी इच्छा पूरा ना करें लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

इंद्र की चाल-जैसे की हम सब जानते थे कि इंद्र कुंभकर्ण ईर्षा करते थे। जिसके चलते इंद्र ने देवी सरस्वती से जाके अनुरोध किया कि कुंभकर्ण इंद्रासन की बजाये निद्रासन कहे।

कुंभकर्ण की नींद-तभी से कुंभकर्ण 6 महीने की नींद में चले जाने के बाद फिर से 6 महीने के बाद तग जगता रहा और उसे जो कुछ भी प्राप्त हुआ वह उससे अपनी भूख मिटाता रहा।

केनोपनिषद: कुछ इस तरह पाएं मन की इच्छाओं से आत्मज्ञान

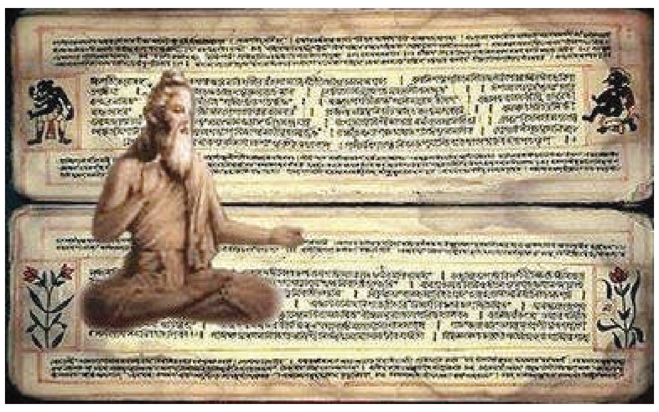

केनोपनिषद को चार खंडो में बांटा गया है। पहले खंड में मन की इच्छाओं, दूसरे खंड में ईश्वर के निराकार रूप, तीसरे खंड में परब्रहमा की सत्त के बारे में और चौथे खंड में विद्या की देवी सरस्वती द्वारा परब्रहम की विजय के बारे में बताया है। जिंदगी में आप ईश्वर के अध्यात्मरूपी प्रकाश से प्रकाशवान हो सकते हैं उसके बारे में बडी ही सरलता सहजता से बताया गया है।

शांतिपाठ

ऊँ अप्यायंतु ममांगानि
वाक्प्राणचक्षुषः श्रोतमथो
बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि सर्वं
ब्रहमोनिषदं माहं ब्रहमा निराकुर्यां
मा मा ब्रहम निराकरोद
निराकरणमस्त्वनिराकरणं मे
अपिस्तुतदात्मानि निरते य
उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि संतु।

यानि मेरे सभी अंग पुष्ट हों और मेरी वाणी, आत्मा, सुनने की शक्ति के साथ पूरी इंद्रियां पुष्ट हों। सभी विद्या ब्रहमा ने उपनिषदों के रूप में दी है। मैं ब्रहमा का निराकरण न करूं, ब्रह्मा मेरा निराकरण न करे। इस प्रकार हमारा परस्पर अनिराकरण हो। उपनिषदों में जो धर्म है, वह आत्मज्ञान में लगे हुए मुझ में निहित हो, वह मेरे अंदर समा जाए , उपनिषदों में जो धर्म है उसका निराकार आत्मज्ञान मुझ में समा जाए और मेरे कई प्रकार के तापों को शांति मिले।

प्रथम खंड

1.जिसे कोई नेत्र नहीं देखता, किंतु जिसकी सहायता से नेत्र अपने विषय(लक्ष्य) को देखते हैं, उसी को ब्रहमा(ईश्वर) समझना चाहिए। जिसे कोई कान नहीं सुनता, परंतु जिसकी सहायता से कान सुनने का कार्य करते हैं, उसी को ब्रहमा समझो।

2.यह मन किसकी इच्छा से प्रेरित होकर अपने विषयों में गिरता है। यह प्राण किसके द्वारा प्रयुक्त होने पर चलता है। यह वाणी किसके द्वारा इच्छा किए जाने पर बोलती है। कौन देव या देवी नेत्रों और कानों को प्रेरित करते हैं। यह कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनके जावाब मन की इच्छाओं में छिपे हैं। जिन्हें एक सात्विक मनुष्य के अलावा कोई दूसरा नहीं खोज सकता है।

3.जो कानों का भी कान, मन का भी मन और वाणी की भी वाणी है, वहीं प्राणों का भी प्राण और आंखों की भी आंखें हैं। इस विचार को जानकरा धैर्यवान पुरुष मरने के बाद मुक्त होकर अमर हो जाते हैं।

4.जिसके विषय में मन, मनन नहीं कर सकता, पर जिसकी सत्ता से मन, मनन करने का सामर्थ्य रखता है, ऐसा कहा जाता है कि उसी को ब्रहमा समझना चाहिए। जिसे विशेष नामयुक्त ईश्वर की लोग उपासना करते हैं, वह ब्रहमा नहीं है।

द्वितीय खंड

1.यदि तुम यह समझते हो कि तुम ईश्वर को अच्छी तरह जानते हो, तो निश्चित ही तुम ब्रहम का अल्प रूप ही जानते हो। इसका जो रूप तुम जानते हो और जो रूप देवताओं में जाना जाता है, वह भी कम है। अत: तुम्हारे लिए ईश्वर को विचार करने योग्य है।

2.सभी इंद्रियां ब्रह्मा की सत्ता से ही कार्य करते हैं इसलिए प्रत्येक इंद्रिय के विषय से उसका ही ज्ञान होता है, इसी से वह जाना जाता है, यही उसका ज्ञान है। इसी ब्रहमज्ञान से अमरता प्राप्त होती है।

3.यदि इसी जन्म में ब्रहम को जान लिया जाए तो, तब तो ठीक है। यदि ऐसा न हो पाए तो यह प्राणी के सर्वाधिक हानि की बात है। कहते है ज्ञानी लोग केवल प्राणी में ब्रहम की सत्ता को देखकर, मृत्यु के पश्चात अमर हो जाते हैं।

तृतीय खंड

1.कहते हैं ब्रहम जब यक्ष रूप में आए तो देवता नहीं पहचान सके कि ये कौन हैं। तब देवराज इंद्र बोले की हे अग्निदेव पता लगाओ को यह यक्ष कौन है। अग्नि ने जब यज्ञ से पूछा कि आप कौन हैं तो यक्ष ने कहा हे अग्नि देव आपके नाम के अनुरूप आप में कौन सी शक्ति है। अग्निदेव बोले कि मैं संपूर्ण पृथ्वी को जला सकता हूं तब यक्ष ने एक तिनका दिया और कहां इसे जलाकर दिखाओ तब अग्नि देव उस तिनके को जलाने में असफल रहे। इसके बाद देवराज इंद्र ने पवन देव को भेजा उन्होंने भी यक्ष से वही प्रश्न किया तब यक्ष बोले कि इस तिनके को उडाओ पवनदेव भी ऐसा करने में जब असफल हुए और जब यक्ष के सामने इंद्र गए तो तब यक्ष अंतर्धान(गायब) हो गए। तब इंद्र ने हिमालय की पुत्री उमा(ब्रहम विद्या) से पूछा कि यह यक्ष कौन है।

उस ब्रहम विद्या ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यह ब्रहम हैं, इसकी विजय से ही तुम महिमामय हुए हो। ऐसा कहते हैं कि तभी इंद्र ने जाना कि वह ब्रहमा थे। इंद्र ने सबसे पहले समीप ब्रहमा का स्पर्श किया इसलिए वह देवों में प्रमुख माने गए और उन्हें स्वर्ग का राजा नियुक्त किया गया।

चतुर्थ खंड

1.मन को गतिमान कहा जाता है। यह ब्रहम इस प्रकार मन से ही बार-बार ब्रहम का स्मरण होता है, तथा निरंतर संकल्प किया जाता है।

2.उपनिषद तप, कर्म, वेद और संपूर्ण वेदांग(व्याकरण, ज्योतिष, छंद आदि) यह सब प्रतिष्ठाहैं तथा सत्य उसका घर है।

3.जो निश्चयपूर्वक उपनिषद को इस प्रकार जानता है। वह अपने पापों को नष्ट करके अनंत और महान स्वर्गलोक में चला जाता है।

ऐसा दानव जिसकी मृत्यु न तो पशु और न ही मनुष्य से हुई

ऊँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्म
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु मृत्युं नमाम्यहम।।
ऊँ नृम नृम नृम नर सिंहाय नमः।

भगवान नृसिंह शक्ति के देवता हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इसी तिथि को भगवान विष्णु ने 'नृसिंह अवतार' लेकर दैत्यराज हिरण्यकशिपु का वध किया था। भगवान विष्णु ने अधर्म के नाश के लिए कई अवतार लिए तथा धर्म की स्थापना की और अपने भक्तों की सदेव संकट आने पर सहायता की।

नृसिंह अवतार

भगवान विष्णु ने अधर्म के नाश के लिए कई अवतार लिए पर दैत्यों के राजा हिरण्यकशिपु का वध करने के लिए ही नृसिंह अवतार लिया था। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार दैत्यों का राजा हिरण्यकशिपु स्वयं को भगवान से भी अधिक शक्तिशाली मानता था। उसे मनुष्य, देवता, पक्षी, पशु, न दिन में, न रात में, न धरती पर, न आकाश में, न अस्त्र से, न शस्त्र से मरने का वरदान प्राप्त था। उसके राज में जो भी भगवान विष्णु की पूजा करता था उसको दंड दिया जाता था। उसके पुत्र का नाम प्रहाद था। प्रहाद बचपन से ही भगवान विष्णु का परम भक्त था।

यह बात जब हिरण्यकशिपु का पता चली तो वह बहुत क्रोधित हुआ और प्रहाद को समझाने का प्रयास किया लेकिन फिर भी जब प्रहाद नहीं माना तो हिरण्यकशिपु ने उसे मृत्युदंड दे दिया। लेकिन भगवान विष्णु के चमत्कार से वह बच गया। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका, जिसे अग्नि से न जलने का वरदान प्राप्त था, वह प्रहाद को लेकर धधकती हुई अग्नि में बैठ गई। तब भी भगवान विष्णु की कृपा से प्रह्लाद बच गया और होलिका जल गई। जब हिरण्यकशिपु स्वयं प्रहाद को मारने ही वाला था तब भगवान विष्णु नृसिंह का अवतार लेकर खंबे से प्रकट हुए और उन्होंने अपने नाखुनों से हिरण्यकशिपु का वध कर दिया।

ऐसे करें व्रत

ब्रहम मुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए तथा भगवान नृसिंह की विधी विधान के साथ पूजा-अर्चना करनी चाहिए। भगवान नृसिंह तथा लक्ष्मीजी की मूर्ति स्थापित करना चाहिए , तत्पश्चात वेद मंत्रों से इनकी प्राण-प्रतिष्ठा कर षोडशोपचार से पूजन करना चाहिए। भगवान नृसिंह की पूजा के लिए फल, पुष्प, पंचमेवा, कुमकुम, केसर, नारियल, अक्षत व पीताम्बर रखना चाहिए। गंगाजल, काले तिल, पंच गव्य व हवन सामग्री का पूजन में उपयोग करें। भगवान नृसिंह को प्रसन्न करने के लिए उनके नृसिंह गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए। पूजा के पश्चात एकांत में कुश के आसन पर बैठकर रुद्राक्ष की माला से नृसिंह भगवान के मंत्र का जप करना चाहिए। इस दिन व्रती को सामर्थ्य अनुसार तिल, स्वर्ण तथा वस्त्रादि का दान देना चाहिए। इस व्रत को करने वाला व्यक्ति लौकिक दु:खों से मुक्त हो जाता है।

सफलता की होड़ में उधड़ते मानवीय रिश्ते

पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव ने हमारे देश में भौतिकवाद को प्रोत्साहन दिया है और अब तो पढ़े लिखे हों या नहीं सभी सुख-सुविधाओं के जाल में फंसते जा रहे हैं। भारतीय अध्यात्म ज्ञान के बारे में जानते सभी हैं पर उसे धारण करना लोगों को अब पिछड़ापन दिखाई देता है। नतीजा यह है कि समाज में आपसी रिश्ते एक औपचारिकता बनकर रह गए हैं।

सिर्फ सांसारिक शिक्षा काफी नहीं

अक्सर अनेक लोग शिकायत करते हैं कि उनके बच्चे उनसे दूर हो रहे हैं अथवा उनकी देखभाल नहीं करते। इसके दो कारण होते हैं एक तो यह कि नए सामाजिक परिवेश से तालमेल न बिठा पाने के कारण लोग अपने माता-पिता को त्याग देते हैं या फिर वह व्यवसाय के सिलिसले में उनसे दूर हो जाते हैं। दोनों ही स्थितियों का विश्लेषण करने पर अनुभव होगा कि आधुनिक युग के समस्त माता-पिता अपने बच्चों से यह अपेक्षा करते हैं कि वह इस मायावी दुनिया में उच्च से उच्च पद प्राप्त कर, अधिक से अधिक धनार्जन करें और भरपूर मान प्रतिष्ठा की दुनिया में चमककर उनका व अपना नाम रोशन करें। लोग बच्चों की कामयाबी के सपने देखते हैं और केवल सांसारिक शिक्षा तक ही अपने बच्चों को सीमित रखते हैं। किसी तरह अपना पेट पालो यही सिखाते हुए वह ऐसा अनुभव करते हैं कि जैसे कि वह दुनियां का कोई विशेष ज्ञान दे रहे हैं। यह तो एक सामान्य चतुराई है, जिसे सब जानते हैं।

सभी सुविधाओं के बाद भी अशांत रहता है मन

यह उन माता-पिता का भ्रम है कि शिक्षा तो सभी स्वतः ही प्राप्त करते हैं पर जिन बच्चों को उनके माता-पिता इसके साथ ही अध्यात्म ज्ञान, ईश्वर भक्ति और परोपकार करना सिखाते हैं वह अधिक योग्य निकलते हैं। जब तक आदमी के मन में अध्यात्म का ज्ञान नहीं होगा, तब तक वह न तो स्वयं कभी प्रसन्न रह पाता है और न ही दूसरों को प्रसन्न करता है। आज समस्त सुख सुविधाएं होने के बावजूद भी बहुत सभी लोगों का मन अशांत रहता है, क्योंकि मानव को परमात्मा के ज्ञान का प्रत्यक्ष बोधकर शांति, सत्य, अहिंसा एवं निःस्वार्थ प्रेम का वातावरण स्थापित करने का समय नहीं है। वह तो पैसे कमाने और सफलता की दौड़ में सबसे आगे निकलना चाहते हैं। मनुष्य जीवन में भक्ति और ज्ञान प्राप्त करने की सुविधा मिलती है पर उसका उपयोग नहीं कर हम उसे ऐसे ही नष्ट कर डालते हैं। ऐसे में वह ज्ञानी धन्य है जो दाल-रोटी खाकर पेट भरते हुए भगवान भजन और ज्ञान प्राप्त करने के लिए समय निकालते हैं।

युवाओं का नीला रंग...

पश्चिमी देशों में नीले रंग को युवा लड़कों से जोड़कर देखा जाता है। भौतिक और भौगोलिक क्षेत्र में रंग सबसे सुंदर पहलुओं में से एक है। हम चारों तरफ रंगों से घिरे हुए हैं, लेकिन कितनी बार हम असंख्य रंगों में कई बारीकियों को नहीं देख पाते हैं। नीले रंग को हमारे यहां भी खास महत्व दिया गया है। रंगों की रहस्यमय रंगीन दुनिया को जानने के लिए वैज्ञानिक और दार्शनिक हमेशा से ही जिज्ञासु रहे हैं। हाल के दिनों में इस पर बहुत काम हुआ है। हाल ही में हुई रिसर्च में कहा गया है कि अगर आपको तुरंत निर्णय लेने में दिक्कत आती है तो आपको ब्लू लाइट में बैठना चाहिए।

रंगों का अपना चमत्कार होता है। उसका शरीर मन और भावना के स्तर पर बहुत प्रभाव होता है। जैसा कि हम सब जानते है कि जीवन पर सूर्य की किरणों का गहरा असर होता है, वैसे ही रंगों का भी असर होता है। वह भी तो प्रकाश ही है। आप स्वयं अनुभव करेंगे कि जिस दिन आकाश बादलों से घिरा रहता है तब अग्नि मंद हो जाती है, शरीर सुस्ताने लग जाता है। धूप होती है, तो आदमी में स्फूर्ति होती है, सूरज के ताप का और प्रकाश का हमारे शरीर पर प्रभाव होता है, वैसे ही रंगों का प्रभाव भी हमारे शरीर और मन पर होता है। वर्तमान में रंगों पर बड़ा महत्वपूर्ण काम हुआ है, अनेक प्रयोग और तथ्य सामने आए हैं। अगर आपको तुरंत निर्णय लेने में दिक्कत आती है तो आपको ब्लू लाइट में बैठना चाहिए। यह बात एक रिसर्च में सामने आई है। छोटी अवधि के लिए नीले रंग की रोशनी से संपर्क आपको कठिन निर्णय लेने में मदद कर सकता है। नीले रंग के प्रकाश में 40 मिनट तक रहने के बाद आप कठिन निर्णय तीव्रता के साथ ले सकते हैं। यूनवर्सिटी ऑफ एरिजोना में इस अध्ययन के शोधकर्ताओं के मुताबिक पिछले अध्ययनों में केवल प्रकाश में रहने की अवधि के दौरान उसके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया गया था, लेकिन यह अध्ययन बताता है कि नीले रंग के प्रकाश के आवरण के लाभकारी प्रभाव 40 मिनट बाद भी रहते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना के अध्ययन के निष्कर्षो के मुताबिक, आधा घंटे के लिए नीले रंग की रोशनी में एक छोटी अवधि का संपर्क अधिक महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया देने के समय में औसत दर्जे का परिवर्तन करने के लिए पर्याप्त है। यह सुधार सीधे तौर पर प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स की सक्रियता में औसत दर्जे के परिवर्तन के साथ जुड़े हैं। नीलापन युक्त सफेद रोशनी कई व्यावसायिक क्षेत्रों जैसे पायलट काकपिट, ऑपरेशन कक्ष और सैन्य कार्यो में काफी इस्तेमाल की जाती है, जहां त्वरित निर्णय लेना महत्वपूर्ण है।

नीले रंग की खूबियां

नीला रंग अपनी विशेष खूबियों के कारण काफी महत्व रखता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हम तमाम जतन करते हैं। इस मामले में रंग भी हमारी सहायता करते हैं, क्योंकि इनका संबंध स्वास्थ्य, समृद्धि और खुशियों से होता है। नीला रंग आध्यात्मिकता, अंतर्ज्ञान, प्रेरणा और आंतरिक शांति का रंग है। नीले रंग के उपचार में दोनों शारीरिक और मानसिक रूप से, ठंडा और तसल्ली के लिए प्रयोग किया जाता है। नीले रंग के प्रयोग से शांति का अनुभव होता है। नीले रंग का ध्यान करने से शांति मिलती है। इसी तरह बैंगनी रंग शक्ति के साथ सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों जुड़ा हुआ है।

नीले रंग के लाभ

फेंगशुई में नीले रंग को प्रगति और सकारात्मक परिवर्तन का रंग बताया गया है। इसका उचित तरीके से प्रयोग किया जाए तो यह घर और उसमें रहने वाले सदस्यों को स्वास्थ्य लाभ कराता है, चिंता से मुक्ति देता है और आर्थिक व बौद्धिक प्रगति प्रदान करता है। नीला रंग जल तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए जल तत्व के सारे गुण इसमें समाहित हैं। नीला रंग पानी की ही तरह चंचल, गतिमान और जीवनदायिनी शक्ति प्रदान करता है। फेंगशुई कहता है कि अगर अपने आसपास के वातावरण में नीले रंग का प्रयोग किया जाए तो यह आपकी इच्छापूर्ति में मदद करता है। यह आपके ठहरे हुए व्यवसाय, करियर या निजी संबंधों को फिर से गति प्रदान करने में सहायक होता है।

ताजे विचार

हल्का नीला रंग उन लोगों के लिए विशेष लाभदायक हो सकता है, जो सृजनात्मक कार्यों से जुड़े हैं। यह रंग ताजा विचारों को प्रोत्साहित करता है। सीखने के इच्छुक लोगों को भी यह रंग अपेक्षित लाभ प्रदान करता है। गहरा नीला रंग शयनकक्ष के लिए उपयुक्त रंग माना जाता है। शयनकक्ष में गहरा नीला रंग तनावमुक्त, गहरी और सुकूनभरी नींद प्रदान करता है। इस रंग की एक और खासियत है कि यह ब्लड प्रेशर के मरीजों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। नीला रंग ब्लड प्रेशर को सामान्य रखने में मददगार होता है। ऐसा माना जाता है कि रंगों का जन्म लगभग 2000 ईसा पूर्व हुआ। धीरे-धीरे रंगों की छटा पूरे विश्व में फैल गयी। भारत में प्रारंभिक काल से ही रंगों का विशेष महत्व रहा है। मोहन जोदड़ों एव हड़प्पा की खुदाई में सिंधु घाटी सभ्यता में रंगीन बर्तन एवं मूर्तियां पाई गई।

मिस्र में नीला रंग

प्राचीन मिस्र में रंगो का उपयोग 'उपचार रंग' के रूप में भी किया गया। मिस्र निवासी सूर्य की उपासना किया करते थे। उनका मानना था कि सूर्य के प्रकाश के बिना जीवन असंभव है। उन्होंने प्रकृति के रंगों के मुताबिक ही अपने मंदिरों को भी रंगा था। नीले आसमानी रंग से उनको काफी लगाव था। इनके कक्ष भी विभिन्न रंगों से सजे होते थे। आधुनिक चिकित्सा पद्धति को प्राचीन प्रकाश चिकित्सा से जोड़ कर देखा गया। रंगों की रहस्यमय रंगीन दुनिया को जानने के लिए वैज्ञानिक और दार्शनिक हमेशा से ही जिज्ञासु रहे। इसका सटीक अध्ययन सबसे पहले न्यूटन ने किया। उन्होंने यह कहकर सनसनी फैला दी कि रंग एक नहीं सात होते हैं। इसको प्रमाणित करने के लिए उन्होंने एक प्रयोग किया जिसमें एक अंधेरे कमरे में छोटे से छेद द्वारा सूर्य का प्रकाश आता था। यह प्रकाश एक प्रिज्म कांच द्वारा अपवर्तित होकर सफेद पर्दे पर पड़ता था। पर्दे पर सफेद प्रकाश के स्थान पर इद्रधनुष के सात रंग दिखाई दिए। ये रंग लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला तथा बैंगनी हैं। जब न्यूटन ने प्रकाश के मार्ग में एक और प्रिज्म पहले प्रिज्म से उलटा रखा, तो इन सात रंगों का प्रकाश मिलकर पुन: सफेद रंग प्रकाश बन गया। इन्हीं सात रंगों को इन्द्रधनुष नाम से जाना जाता है। सौ साल पहले पश्चिम में औद्योगिकरण की क्रांति ने कपड़ा उद्योग को तेजी से रफ्तार दी। जिससे रंगो की मांग बढ़ गई। प्राकृतिक रंगों के साधन भी सीमित थे। मांग और पूर्ति के आकड़े को देखते हुए कृत्रिम रंगो की खोज शुरू हुई। उन्हीं दिनों रॉयल कालेज ऑफ केमिस्ट्री, लंदन में विलियम पार्कीसन एनीलीन से मलेरिया की दवा कुनैन बनाने में जुटे हुए थे। कई प्रयोगो के बाद कुनैन तो बना नहीं लेकिन बैंगनी रंग जरूर बन गया। 1856 ई. में संयोगवश तैयार हुए इस रंग को मोव कहा गया। इस क्रम में 1860 में रानी रंग, 1862 में एनलोन नीला और काला 1865 में विस्माई भूरा, 1880 ई में सूती काला जैसे रासायनिक रंग उत्पन्न हुए। शुरुआत में यह रंग तारकोल की सहायता से बनाये जाते थे बाद में रासायनिक पदार्थो का प्रयोग किया जाने लगा। जर्मन रसायनशास्त्री एडोल्फ फोन ने 1865 में तमाम असफलताओं से जूझते हुए नील बनाने में सफलता प्राप्त की। जिसके लिए उन्हें 1905 ई. में नोबल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया।

आपकी जींस असली है या नकली?

आज के दौर में हर इंसान फैशन के साथ ब्रांडेड कपंनी के कपड़ों के पीछे भागता है जिसके लिए वह बड़ी कीमत देने को भी तैयार रहता है। ब्रांडेड कपड़े परफेक्ट लुक के साथ उभरते भी है। इसलिए लोग इनके पीछे ज्यादा भागते है, लेकिन अक्सर देखा जाता है कि सही कीमत देने के बाद भी हम ब्रांडेड कपड़ों की खरीददारी करते समय धोखा खा ही जाते है। क्योंकि असली जैसी दिखने वाली ब्रांडेड चीज भी नकली हो सकती है। इसलिए आज हम आपको ऐसी जानकारी से अवगत करा रहे हैं। ब्रांड लेविस की जीन्स के बारे में जिसकी असलियत की पहचान कर आप धोखा खाने से बच सकते हैं। तो जाने जींस के असली नकली की पहचान आप किस प्रकार कर सकते हैं।

बटनों में खास मार्क

जो जींस असली होती है उसमें लगने वाली बटनों में खास तरह का मार्क लगा होता है। यदि आपकी जींस में उपयोग किया जाने वाला बटन प्लेन है तो तुरंत ही समझ जाइए की वह जींस नकली ब्रांड की है। हमेशा जींस में आपको लेविस का मार्क खास तरह से लगा हुआ मिलेगा।

555 नंबर

ब्रांड जीस की सही पहचान जानने के लिएउसके बटन में इस बात पर गौर करे कि उसमें लिखा जाने वाला नं. 555 है या नही। अगर नहीं है तो आपकी जींस लेविस ब्रांड का नहीं है। वैसे तो बाजार में आपको अपनी ओर खींचने के लिए कई तरह के अलग अलग ब्रांड के जींस दिखाए जाते हैं। जो ज्यादातर नकली भी होते हैं।

डब्ल्यू33 एल 34

लेविस ब्रांड के जींस की सबसे बड़ी खासियत ये होती है कि इसमें दिए लोगो में डाले गए अंक की लंबाई और चौड़ाई, खास तरह से लिखी होती है। इसमें डब्ल्यू33 एल 34 लिखा मिलेगा यदि आपकी जींस में इस प्रकार का नंबर नही है तो आपकी जींस नकली ब्राडं की है।

स्मार्ट लुक पाने के लिए चुनें सही चश्मा...

आजकल हर लड़के को चश्मा पहनना पसंद होता है। मार्केट में कई डिजाइन में चश्मे मिल जाते हैं, जो आपको स्मार्ट दिखने में मदद कर सकते हैं। वैसे अगर आप एक सही चश्मे का प्रयोग करते हैं तो उससे आप केवल स्मार्ट ही नहीं लगेंगे बल्कि इससे आपके अन्दर आत्मविश्वास भी आएगा। आप जब भी चश्मा लें तो पहले यह जरूर देख लें कि आपके चेहरे का आकार कैसा है। ज्यादातर चेहरे चार आकार के होते हैं। गोल, आयताकार, ओवल और हार्ट या डायमंड आकार। अगर आप अपने चेहरे के आकार को ध्यान में रख कर चश्मा लेते हैं तो आपको ज्यादा परेशानी नहीं होगी और आप अपने लिए एक सही चश्मे का चुनाव कर सकेंगे। अपने चेहरे के आकार के साथ-साथ आपको इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि आप जो चश्मा ले रहे हैं वो कहीं आपके चेहरे से बड़ा तो नहीं है। अगर आपका चेहरा छोटा है और आप हर समय चश्मा पहने रखते हैं तो हो सकता है बड़े चश्मे आपके चेहरे पर अच्छे न लगें, लेकिन ऐसा नहीं है कि बड़े चश्मे आपके चेहरे पर अच्छे नहीं लगेंगे। आप चाहें तो कभी-कभी अपने लुक में बदलाव करने के लिए बड़े चश्मों का भी प्रयोग कर सकते हैं।

ऑफिस में बने रहें मिस्टर कूल...

ऑफिस में काम करते समय कई बार लोगों को किसी भी बात पर गुस्सा आ जाता है। किसी भी कारण तनाव का माहौल बन जाता है। काम के चलते कुछ न कुछ स्ट्रेस हो जाता है। ऑफिस में अपने डेस्क पर एक छोटे गमले पर हरा पौधा रखें। विशेषज्ञों का मानना है कि हरा पौधा देखने से मन को शांति मिलती है। एक छोटा हरा पौधा आपके चारों तरफ के माहौल में शांति फैलाता है। जब भी ऑफिस में आपको किसी बात पर गुस्सा आए या फिर काफी थकावट महसूस हो इस हरे पौधे की तरफ देखें एवं अच्छा सोचें। ऑफिस में काम को लेकर आए गुस्से पर काबू पाने के लिए अपनी कुर्सी से उठकर आसपास कुछ देर के लिए टहलें। ऐसा करने से काम से होने वाला स्ट्रेस दूर होता है। मांसपेशियां फैलती हैं और मन में पॉजिटिव विचार आते हैं। काम के फ्रस्टेशन को दूर करने के लिए अपनी कुर्सी पर बैठकर या फिर खड़े होकर आप अपनी बॉडी को स्ट्रेच करें। इसके अलावा आप कुछ हल्की एक्सरसाइज का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। ऑफिस में काम के बीच-बीच में ड्राइ फ्रूट्स खाने से काम से होने वाला स्ट्रेस कम होता है। साथ ही गुस्सा आने पर ड्राइ फ्रूट्स खाने से मेंटल प्रेशर कम होता है और गुस्सा जल्द ही ठंडा हो जाता है।

प्रेम और दया सबसे बेहतर रास्ता...

ईश्वर को खुश करने के लिए लोग तरह-तरह के उपाय करते हैं। मंत्र साधक लाखों बार मंत्र जप करते हैं, भक्ति मार्ग पर चलने वाले लोग मंदिर जाकर ईश्वर की पूजा करते हैं। धूप-दीप आरती से भगवान को प्रसन्न करने की भी कोशिश करते हैं। इतना करने के बाद भी यह पता नहीं होता कि ईश्वर हमें प्यार करता है या नहीं। प्रेम में सफलता तभी मिलती है जब हम जिसे प्यार करते हैं वह हमें प्यार करे। इसलिए हमेशा ऐसा काम करें जिससे ईश्वर आपको प्यार करे। यह काम पूजा-पाठ और मंत्र जप से भी आसान है। सभी धर्म एक बात पर सहमत है कि प्रेम और दया यह दो ऐसे साधन है जिसकी बदलौत हम ईश्वर को मजबूर कर सकते हैं कि वह हमें प्यार करें। प्रेम और दया ऐसी चीज है जिसके लिए न तो धन की जरूरत पड़ती है और न ही किसी दूसरे साधनों की। यह अपने आप में पूर्ण और पवित्र है।

प्रेम के बदले प्रेम

हम किसी के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हैं तो बदले में हमें भी प्रेम मिलता है। इसका कारण यह है कि जिसके प्रति हम प्रेम दर्शाते हैं उसके हृदय में मौजूद आत्मा जो ईश्वर का स्वरूप होती है वह प्रसन्न होती है और बदले में हमें अपने प्रेम की अनुभूति कराती है। गीता, कुरान अथवा बाइबल सभी में दया को ईश्वर को पाने का माध्यम बताया गया है। ईश्वर को फूल, फल अथवा मंत्र से ध्यान करने का उद्देश्य भी यही है कि हमारा मन निर्मल हो और मन में दया की भावना बढ़े। जिसने दया करना सीख लिया वह ईश्वर का पुत्र हो जाता है।

परमात्मा के समकक्ष

ईसा मसीह, भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, साई सभी ने अपने जीवन में दया का अनुपम परिचय दिया। अपने इसी गुण के कारण ईश्वर ने इन्हें प्यार किया और ईश्वरीय शक्ति इनमें समाहित हो गयी।

यस्य चित्तं द्रवीभूतं कृपया सर्वजंतुष।
तस्य ज्ञानेन मोक्षेण किं जटाभस्मलेपनैः।।

अर्थात जिसका हृदय सभी प्राणियों पर दया करने हेतु द्रवित हो उठता है, उसे ज्ञान, मोक्ष, जटा और भस्म लगाने की क्या जरूरत? भाव यह है कि हमें सभी प्राणियों पर दया करनी चाहिए, उनसे स्नेह करना चाहिए। जो ऐसा करता है, उसका स्थान परमात्मा के समकक्ष हो जाता है।

दया धर्म का मूल

किसी अन्य प्राणी को कष्ट में देखने पर उसके कष्ट दूर करने के उद्देश्य से उसकी सहायता करने की जिस इच्छा का मनुष्य के हृदय में जन्म होता है, वह दया या करुणा कहलाती है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने राम चरित मानस में एक दोहे में कहा है-दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान। तुलसी दया न छोड़िये जब लगि घट में प्राण।।

विचारणीय यह है कि यदि दया धर्म का मूल है तब धर्म को स्थायित्व प्रदान करने और सशक्त बनाये जाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति, जो धर्म में विश्वास रखता है अथवा जो धर्म की उन्नति चाहता है अथवा जो अपने को धर्म का रक्षक कहता है, को अपने अन्दर के दया भाव को जागृत कर उसका प्रयोग धर्म की जड़ों के सशक्तिकरण के लिए करना होगा। सभी प्राणियों पर दया करते हुए असहाय दलितों, वंचितों और गरीबों पर विशेष दया दृष्टि से उनका दर्द कम करना होगा। कोरे भाषण देकर धर्म की पैरबी करने, दयनीय जीवन जी रहे लोगों को अल्पकालिक लालच देकर अपने समुदाय में शामिल करने अथवा उनके इर्द-गिर्द पहरेदार खड़े करने से धर्म की जड़े मजबूत नहीं होंगी।

जीवन के प्रति सजग भाव

जिस मनुष्य में जीवन के प्रति सहज भाव है उसे कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। संत रविदास ने कहा है कि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। इसके विपरीत बाजार के आर्थिक स्वामी तथा प्रचार प्रबंधक अपने शोर से लोगों के मन को ही भटकाते हैं। जिस धर्म का पालन सही ढंग से एकांत में हो सकता है उसे उन्होंने चौराहे पर चर्चा का विषय बना दिया है। भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में यही स्थिति है। हर धर्म के ठेकेदार अपने निर्धारित विशिष्ट रंगों के वस्त्र पहनकर यह प्रमाणित करते हैं कि वह अपने समाज के माननीय है। यह अलग बात है कि किसी भी धर्म के मूल प्रवर्तक ने अपने समाज के लिए किसी खास रंग की पहचान नहीं बनाई। इस तरह धर्म को लेकर एक तरह से भ्रम की स्थिति बन गई है। अगर हम प्राचीन ग्रंथों के आधार पर धर्म के सिद्धांत की पहचान करें तो वह आचरण के आधार पर बना हुआ होता है। उसको कोई निश्चित कर्मकांड नहीं है। यही कारण है कि धार्मिक रूप से हमारे यहां एकता है पर कर्मकांडों में स्थान और क्षेत्र के आधार पर भिन्नता पाई जाती है। जहां तक स्वयं धर्म के आधार पर चलने का प्रश्न है तो उस पर अवश्य विचार करना चाहिए। प्रात :काल उठकर योगसाधना तथा पूजा आदि कर मन को स्वस्थ तथा प्रसन्न चित्त बनाना चाहिए। उससे पूरा दिन अच्छा निकलता है। धर्म को लेकर लोगों से अधिक चर्चा नहीं करना चाहिए क्योंकि अधिकतर लोग इस बारे में अपना ज्ञान बघारते हैं। हमारे आसपास धर्म के मार्ग पर चलने वाले लोग उंगलियों पर गिनती करने लायक ही होते हैं।

संपादकीय

जंगल के आर्थिक कारनामे

जंगल की विशालता में हिमाचल की आर्थिक क्षमता का एक सर्वेक्षण सामने आया है। इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस और वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में एक सर्वे से यह अनुमान लगाया गया है कि जंगल से कितनी आर्थिक खुशहाली हासिल की जा सकती है। मोटे तौर पर 22600 करोड़ के खजाने का आकलन हुआ है। जंगल का पहली बार मूल्यांकन नहीं हो रहा, इससे पहले भी परिभाषाएं बनीं, मूल्य और मोल तय हुए, लेकिन कोई परिपाटी नहीं बनीं। हम हर साल मंडी शहर में बिकते फालसों के आगमन पर याद करते हैं कि जंगल हमें क्या कुछ दे सकता है। लुंगड़ू की बिक्री में जंगल की शीतल जमीन भी महक उठती है या ब्रांस की लाली में शरबत के घूंट या चटनी का चम्मच, अपने साथ एक पूरा बाजार उपस्थित करता है। किन्नौर और पांगी घाटी के चिलगोजे हों या चुपके से निकलती गुच्छी हो, इनकी कीमत के चर्चे पूरे संसार में होते हैं। जंगल दरअसल समझे ही नहीं और न ही इन्हें आर्थिक पेशकश में उगाने की पहल हुई। हम चीड़ को जंगल और इसके इर्द-गिर्द रही कमाई को ही पूर्ण मानते रहे, जबकि जंगल के कई भूगोल, कई अर्थशास्त्र और कई कारनामे हैं। कुल्लू व लाहुल-स्पीति घाटी की ही संभावनाओं को तोलें तो सारा आयुर्वेद यहां की जड़ी-बूटियों की शरण में चला जाता है। अगर चंबा और तमाम ट्राइबल एरिया में जंगल घोषित जमीन की उत्पादकता पर गौर करें, तो बेशकीमती पैदावार के रूप में सीबक थार्न से लेकर केसर तक हमारी पहुंच हो सकती है। कभी इनसानों की बस्तियों के करीब चरागाहें होती थीं, जो अब चीड़ की पत्तियों से आग की भ_ी बन रही हैं। कहना न होगा कि अगर जंगल के भीतर पशु व वन्य प्राणी आहार पट्टिकाएं विकसित कर लें, तो दूध, मांस-मछली जैसे उत्पाद वनों से सदा-सदा के लिए दोस्ती कर लेंगे। हमारा मानना है कि हिमाचल में जंगल और जंगल भूमि का पुनर्गठन होना चाहिए। जिस परिभाषा की कानूनी दृष्टि से वन विभाग चलता है, वहां एक पेड़ की निशानियों में हजारों संभावनाएं नष्ट हो रही हैं। वन विभाग और इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस के साथ वानिकी व कृषि विश्वविद्यालय भी शामिल किए होते, तो वन खेती के परिदृश्य में भविष्य के तर्क और सशक्त होते। अगर वन विभाग बंदरों, सूअरों और नील गाय जैसे वन्य प्राणियों को आश्रय में ले ले, तो ग्रामीण आर्थिकी के लिए यह सौगात होगी। हमने जंगल वहां उगाए हैं, जहां मानवीय विकास के कई विकल्प पैदा हो सकते थे। उदाहरण के लिए कांगड़ा में अगर फॉरेस्ट के तहत ग्रीन टी का उत्पादन जुड़ जाता, तो यह राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय बाजार में हिमाचल की बेशकीमती पेशकश होती। इसी तरह आबो हवा के अनुरूप जंगलों में तरह-तरह के पौधे, झाड़ियां व फूल उगाए जा सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जंगल आधारित आर्थिकी का प्रसार हो रहा है। चीन जैसे देश केवल हर्बल उत्पादों से पंद्रह हजार करोड़ का धंधा कर रहे हैं, तो हिमाचल में भी यह संभावना है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कैनफ (हिबिस्कस कैनाबिनस) नामक पौधे पर काफी तेजी से अध्ययन एवं शोध में पाया गया है कि इसकी खेती अब जंगलों को बादशाहत प्रदान कर सकती है। यह एक तरह की जूट की तरह लकड़ी का विकल्प बन कर, फ़र्नचर और कुछ अति महंगे उत्पादों में प्रयुक्त हो रहा है। ये पौधे कृषि आधारित अर्थ व्यवस्था और परिस्थितिकीय के लिए एक अत्यंत लाभकारी एवं उपयोगी नकदी फसल के रूप में भविष्य की मांग को पूरा करेगी। कार के डैशबोर्ड, डोर पैनल, इंसुलेशन सामग्री, पशु आहार तथा इसके बीजों से 22 प्रतिशत तक उच्च पौष्टिकता के कारण खाद्य एवं औषधीय उत्पादों के काम आ सकता है। देहरा से एक अप्रवासी हिमाचली अजय सिंह ठाकुर इस पर काफी अनुसंधान कर चुके हैं। उनकी मानें तो हिमाचल में इसकी वन खेती लाखों डालर तक पहुंच सकती है।

इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस और वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में एक सर्वे से यह अनुमान लगाया गया है कि जंगल से कितनी आर्थिक खुशहाली हासिल की जा सकती है। मोटे तौर पर 22600 करोड़ के खजाने का आकलन हुआ है। जंगल का पहली बार मूल्यांकन नहीं हो रहा, इससे पहले भी परिभाषाएं बनीं, मूल्य और मोल तय हुए, लेकिन कोई परिपाटी नहीं बनीं। हम हर साल मंडी शहर में बिकते फालसों के आगमन पर याद करते हैं कि जंगल हमें क्या कुछ दे सकता है। लुंगड़ू की बिक्री में जंगल की शीतल जमीन भी महक उठती है या ब्रांस की लाली में शरबत के घूंट या चटनी का चम्मच, अपने साथ एक पूरा बाजार उपस्थित करता है। किन्नौर और पांगी घाटी के चिलगोजे हों या चुपके से निकलती गुच्छी हो, इनकी कीमत के चर्चे पूरे संसार में होते हैं। जंगल दरअसल समझे ही नहीं और न ही इन्हें आर्थिक पेशकश में उगाने की पहल हुई। हम चीड़ को जंगल और इसके इर्द-गिर्द रही कमाई को ही पूर्ण मानते रहे, जबकि जंगल के कई भूगोल, कई अर्थशास्त्र और कई कारनामे हैं। कुल्लू व लाहुल-स्पीति घाटी की ही संभावनाओं को तोलें तो सारा आयुर्वेद यहां की जड़ी-बूटियों की शरण में चला जाता है। अगर चंबा और तमाम ट्राइबल एरिया में जंगल घोषित जमीन की उत्पादकता पर गौर करें, तो बेशकीमती पैदावार के रूप में सीबक थार्न से लेकर केसर तक हमारी पहुंच हो सकती है।

इजरायल को आशा थी कि युद्ध के माध्यम से ईरान की सामरिक क्षमता को निर्णायक रूप से कमजोर किया जाएगा

युद्धविराम से आगेः क्या विश्व अहिंसा की ओर बढ़ेगा?

ललित गर्ग

युद्धविराम ऐसे समय में सामने आया है, जब पश्चिम एशिया युद्ध की लपटों में घिरकर वैश्विक स्थिरता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका था। कई सप्ताह तक चले संघर्ष ने क्षेत्र को ऐसे ज्वालामुखी में बदल दिया था, जिसकी प्रत्येक विस्फोटक घटना विश्व अर्थव्यवस्था को झकझोर रही थी। तेल बाजारों में भारी उथल-पुथल थी, निवेशकों में घबराहट बढ़ रही थी और वैश्विक मंदी की आशंकाएं गहराने लगी थीं। ऐसे में युद्धविराम ने विश्व को तत्काल राहत तो दी है, लेकिन सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या यह समझौता स्थायी शांति की नींव बनेगा या केवल अगले युद्ध से पहले का एक अस्थायी विराम सिद्ध होगा? इतिहास साक्षी है कि युद्धविराम और शांति समझौते तभी टिकाऊ सिद्ध होते हैं, जब उनके पीछे केवल सामरिक विवशता नहीं, बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति, पारस्परिक विश्वास और मानवता के प्रति प्रतिबद्धता भी हो।

अमेरिका इजरायल और ईरान के बीच हाल ही में हुआ युद्धविराम ऐसे समय में सामने आया है, जब पश्चिम एशिया युद्ध की लपटों में घिरकर वैश्विक स्थिरता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका था। कई सप्ताह तक चले संघर्ष ने क्षेत्र को ऐसे ज्वालामुखी में बदल दिया था, जिसकी प्रत्येक विस्फोटक घटना विश्व अर्थव्यवस्था को झकझोर रही थी। तेल बाजारों में भारी उथल-पुथल थी, निवेशकों में घबराहट बढ़ रही थी और वैश्विक मंदी की आशंकाएं गहराने लगी थीं। ऐसे में युद्धविराम ने विश्व को तत्काल राहत तो दी है, लेकिन सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या यह समझौता स्थायी शांति की नींव बनेगा या केवल अगले युद्ध से पहले का एक अस्थायी विराम सिद्ध होगा? इतिहास साक्षी है कि युद्धविराम और शांति समझौते तभी टिकाऊ सिद्ध होते हैं, जब उनके पीछे केवल सामरिक विवशता नहीं, बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति, पारस्परिक विश्वास और मानवता के प्रति प्रतिबद्धता भी हो। अन्यथा वे केवल संघर्षों के बीच का अंतराल बनकर रह जाते हैं। पश्चिम एशिया का इतिहास ऐसे असंख्य समझौतों का गवाह है, जो कागजों पर तो बने, लेकिन जमीन पर टिक नहीं सके। इस युद्ध के परिणामों का विश्लेषण किया जाए तो सबसे बड़ा लाभार्थी ईरान दिखाई देता है। अमेरिका और इजरायल के सैन्य दबाव, आर्थिक प्रतिबंधों और अंतरराष्ट्रीय अलगाव के बावजूद तेहरान न केवल अपने राजनीतिक ढांचे को बचाने में सफल रहा, बल्कि उसने अपने विरोधियों को वार्ता की मेज पर आने के लिए भी बाध्य किया। ईरान अब अपने नागरिकों के समक्ष यह दावा कर सकता है कि उसने दुनिया की सबसे शक्तिशाली सैन्य ताकतों के सामने घुटने नहीं टेके। ईरानी नेतृत्व इसे प्रतिरोध की जीत के रूप में प्रस्तुत करेगा। दूसरी ओर इस संघर्ष ने अमेरिका की अजेयता की छवि को भी चुनौती दी है। वियतनाम, इराक और अफगानिस्तान के बाद यह एक और अवसर है, जिसने यह स्पष्ट किया कि केवल सैन्य शक्ति राजनीतिक परिणाम सुनिश्चित नहीं कर सकती। वाशिंगटन ने दबाव बनाया, अपनी सैन्य क्षमता का प्रदर्शन किया, लेकिन अंततः उसे वार्ता और समझौते का रास्ता अपनाना पड़ा। इससे यह संदेश गया है कि इक्कीसवीं सदी की दुनिया अब केवल शक्ति संतुलन से नहीं, बल्कि संवाद, कूटनीति और बहुपक्षीय सहयोग से संचालित होगी। इजरायल के लिए यह स्थिति राजनीतिक रूप से असहज है। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू लंबे समय से ईरान की परमाणु और मिसाइल क्षमताओं को अपने देश के अस्तित्व के लिए खतरा बताते रहे हैं। इजरायल को आशा थी कि युद्ध के माध्यम से ईरान की सामरिक क्षमता को निर्णायक रूप से कमजोर किया जाएगा। किंतु युद्धविराम के बाद ईरान स्वयं को विजेता के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। इससे इजरायल के भीतर यह बहस और तीव्र हो सकती है कि क्या क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताओं की तुलना

में महाशक्तियों ने अपने सामरिक हितों को अधिक महत्व दिया। भारत के लिए यह समझौता विशेष महत्व रखता है। भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए पश्चिम एशिया पर अत्यधिक निर्भर है। युद्ध की स्थिति में तेल आपूर्ति बाधित होने, समुद्री व्यापार मार्गों पर संकट उत्पन्न होने और कीमतों में वृद्धि की आशंका ने भारत की चिंता बढ़ा दी थी। युद्धविराम से तेल कीमतों पर दबाव कम होगा, महंगाई नियंत्रित रहेगी और खाड़ी देशों में कार्यरत लाखों भारतीयों की सुरक्षा संबंधी चिंताएं भी घटेंगी। लेकिन भारत का महत्व केवल एक उपभोक्ता राष्ट्र के रूप में नहीं है, वह आज वैश्विक शांति के एक नैतिक प्रवक्ता के रूप में भी उभर रहा है। दरअसल, यह युद्ध एक बड़े प्रश्न को जन्म देता है-क्या मानव सभ्यता युद्धों के सहारे अपने भविष्य का निर्माण कर सकती है? आज महाशक्तियों ने ऐसी विनाशकारी सैन्य क्षमता अर्जित कर ली है कि किसी भी देश की एक छोटी-सी भूल संपूर्ण मानवता को विनाश की ओर धकेल सकती है। परमाणु हथियारों, जैविक अस्त्रों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित युद्ध प्रणालियों के युग में युद्ध अब केवल सीमाओं का प्रश्न नहीं रह गया है, वह समूची मानव सभ्यता के अस्तित्व का प्रश्न बन गया है। यही कारण है कि आज दुनिया को शक्ति की नहीं, शांति की राजनीति की आवश्यकता है। हिंसा, युद्ध, आतंकवाद और शस्त्रीकरण की प्रतिस्पर्धा ने मानवता को भय, अविश्वास और असुरक्षा के गर्त में धकेल दिया है। यदि विश्व को बचाना है, तो उसे निःशस्त्रीकरण, अहिंसा, सह-अस्तित्व और संवाद की दिशा में आगे बढ़ना ही होगा। इस संदर्भ में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाती है। भारत ने सदैव विश्व को शांति, करुणा और अहिंसा का संदेश दिया है। महात्मा गांधी ने कहा था, 'आंख के बदले आंख पूरे विश्व को अंधा बना देगी।' आज यह कथन पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठा है। भारत की सांस्कृतिक चेतना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत पर आधारित रही है, जो सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानती है। यही कारण है कि भारत ने सदैव युद्ध के स्थान पर संवाद और टकराव के स्थान पर सहमति का समर्थन किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी विश्व के अनेक मंचों पर स्पष्ट रूप से कहा है कि 'यह युग युद्ध का नहीं है।' संयुक्त राष्ट्र, जी-20, ब्रिक्स तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत ने बार-बार इस बात पर बल दिया है कि किसी भी समस्या का समाधान युद्ध नहीं, बल्कि वार्ता है। यदि अंततः देशों को बातचीत की मेज पर ही लौटना पड़ता है, तो युद्ध की भयावह कीमत चुकाने की आवश्यकता ही क्या है? भारत की विदेश नीति आज एक नए स्वरूप में सामने आ रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध हो, इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष हो अथवा पश्चिम एशिया का वर्तमान संकट-भारत ने किसी पक्ष विशेष का अंध समर्थन करने के बजाय संतुलन, संवाद और शांतिपूर्ण समाधान की नीति अपनाई है। यही संतुलित दृष्टिकोण भविष्य में भारत को वैश्विक मध्यस्थ की भूमिका निभाने की दिशा में अग्रसर कर सकता है। लेकिन केवल सरकारें ही शांति स्थापित नहीं कर सकतीं। शांति का आधार समाजों, संस्कृतियों और मनुष्यों के भीतर निर्मित होता है। जब तक राष्ट्रवाद आक्रामकता का रूप लेता रहेगा, जब तक हथियार उद्योग युद्धों को लाभ का साधन बनाकर चलता रहेगा और जब तक राजनीतिक नेतृत्व युद्ध को लोकप्रियता अर्जित करने के उपकरण के रूप में उपयोग करता रहेगा, तब तक स्थायी शांति का सपना अधूरा रहेगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व समुदाय कुछ ठोस कदम उठाए-परमाणु एवं सामरिक हथियारों की होड़ को नियंत्रित किया जाए, संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को अधिक प्रभावी बनाया जाए, अंतरराष्ट्रीय विवादों के समाधान के लिए स्थायी संवाद तंत्र विकसित किए जाएं और शिक्षा प्रणालियों में शांति एवं अहिंसा के मूल्यों को शामिल किया जाए। साथ ही युद्ध अर्थव्यवस्था के स्थान पर मानव कल्याण आधारित विकास मॉडल को प्राथमिकता दी जाए। अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच हुआ युद्धविराम निश्चय ही राहत का क्षण है, किंतु इसे स्थायी शांति में परिवर्तित करना अभी शेष है। यदि यह केवल सामरिक पुनर्संरचना का चरण बनकर रह गया, तो भविष्य में और भी अधिक विनाशकारी संघर्षों का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। लेकिन यदि विश्व समुदाय इस अवसर को आत्ममंथन का क्षण मानकर अहिंसा, संवाद और सह-अस्तित्व की नई वैश्विक संस्कृति विकसित करता है, तो यह युद्धविराम मानव इतिहास के एक नए अध्याय का प्रारंभ भी बन सकता है। दुनिया को आज युद्ध का अंधेरा नहीं, शांति का उजाला चाहिए। मानवता के समक्ष यही सबसे बड़ी चुनौती है और यही सबसे बड़ा अवसर भी।

कुछ अलग

आगे का कार्यक्रम क्या है

अखिल अंतरराष्ट्रीय कॉकरोच पब्लिक पार्टी (एएसीपीपी) के अधिवेशन में एक बूढ़ा तिलचट्टा अंत तक चुपचाप बैठा रहा। जब उससे पूछा गया, 'आप प्रसन्न क्यों नहीं हैं?' वह लंबी सांस लेते हुए बोला, 'मुझे मनुष्य के नष्ट होने की चिंता नहीं है।' 'फिर डर किस बात का?' वृद्ध तिलचट्टा बोला, 'डर इस बात का है कि कहीं पृथ्वी का पुनर्निर्माण करते-करते हम भी मनुष्य जैसे न हो जाएं।' सभा में सन्नाटा छा गया। तभी किसी ने गोदाम की बत्ती जला दी। रोशनी पड़ते ही पूरा पंडाल अस्त-व्यस्त हो गया। अनुभवी से अनुभवी कॉकरोच भी घबरा उठे। जो जिस दिशा में भाग सकता था, भागा। कोई टूटे संदूक के नीचे घुस गया, कोई फटी बोरी के पीछे, कोई दीवार की झिरी में समा गया। रात उजेरी हो चुकी थी और सारे कॉकरोच हड़बड़ाहट में जहां जगह मिली, वहीं छिप गए। कुछ ही क्षणों में विशाल अधिवेशन स्थल खाली था। लेकिन उनकी कही हुई बात अंधेरे से निकलकर बाहर अब भी रेंग रही थी। उधर मानव जगत में विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे थे कि यदि मनुष्य ने पर्यावरण, जल, जंगल, मिट्टी और जलवायु के साथ अपना यही व्यवहार जारी रखा, तो पांच महाविनाश झेल चुकी पृथ्वी छठी बार तबाह होगी। फर्क केवल इतना होगा कि पिछले विनाशों की तरह इस विनाश के लिए कोई उल्का, ज्वालामुखी या हिमयुग ज़िम्मेदार नहीं होगा। इस बार स्वयं को पृथ्वी का सबसे बुद्धिमान प्राणी कहने वाला मानव अभियुक्तों के कटघरे में खड़ा होगा। विशेषज्ञ यह भी कह रहे थे कि ऐसी स्थिति में मनुष्य की अनेक उपलब्धियां- उसका राष्ट्रवाद, उसकी अर्थव्यवस्था, उसकी कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उसके युद्धपोत, उसके चुनावी घोषणापत्र और उसका हज़ारों वर्षों का गौरवशाली इतिहास- शायद उसे बचा न सकें।

देश दुनिया से

कॉकरोची सवाल व शिक्षा के असली संकट

एक काल्पनिक स्थिति के बारे में सोचिए। सत्ताधारी सरकार—जो लोगों की बात सुनने की कला के लिए विशेष तौर पर नहीं जानी जाती—उसने 'कॉकरोच जनता पार्टी' की मांगों को गंभीरता से लिया है। कल्पना कीजिए कि संबंधित केंद्रीय मंत्री ने अपनी अंतरात्मा की आवाज़ फिर पा ली और उन्होंने इस्तीफ़ा दे डाला। कल्पना कीजिए कि नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (केंद्रीय परीक्षा एजेंसी) के अधिकारी ईमानदारी और निष्ठा से काम करने लगे हैं। कल्पना कीजिए कि बारम्बार की पेपर लीक घटनाएं अतीत की बात हो गई हैं और नीट जैसी मानकीकृत कर दी गईं परीक्षाएं सुचारु रूप से आयोजित हो रही हैं। क्या यह आवश्यक तौर पर संकेत है कि ऐसी काल्पनिक परिस्थिति में शिक्षा के मुख्य चलन के साथ सब चीज़ें ठीक हो जाएंगी? इसका साफ़ जवाब है 'नहीं'। असल में, हमें यह समझने के लिए गहराई में जाने की ज़रूरत है कि शिक्षा की मौजूदा संस्कृति में जो बीमारी व्याप्त है, वह सिर्फ़ पेपर लीक होने या संबंधित अधिकारियों की गैर-ज़िम्मेदाराना हरकत तक सीमित नहीं है। सर्वप्रथम, अब समय आ गया है कि हममें से कुछ लोग खुलकर कहें कि नीट, जेईई या सीयूईटी जैसी एमक्यूएम-आधारित मानकीकृत परीक्षाओं का सिद्धांत ही सबसे अधिक समस्या है। असल में, मुझे यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि इन मानकीकृत परीक्षाओं की तैयारी करने की प्रक्रिया ही दिमाग को एक खास सांचे में ढाल देती है, सोचने-समझने के दायरे को सीमित कर देती है और आलोचनात्मक सोच एवं रचनात्मक कल्पनाशीलता की क्षमता को कुंद कर देती है। अगर आप ध्यान से देखें तो, भौतिकी का छात्र अपने स्कूल की भौतिकी प्रयोगशाला में इसलिए जाने से कतराता है क्योंकि उसे कोचिंग सेंटर के 'रणनीतिकार' से पढ़ना और ओएमआर शीट पर जितनी जल्दी हो सके 'सही' जवाब पर टिक लगाने की तकनीक सीखना ज़्यादा भाता है। जब शिक्षा केवल मानकीकृत परीक्षाओं का प्रशिक्षण बनकर रह जाए तो विद्यालय—जो कि गहन सीखने-सिखाने की जगह होते हैं—धीरे-धीरे अप्रासंगिक हो जाते हैं। वे सभी चीज़ें जो स्कूली शिक्षा को जीवंत और आनंदमय बना सकती थीं—जैसे कि

भौतिकी और जीव-विज्ञान प्रयोगशाला में विज्ञान के प्रयोगों से पैदा होने वाली जिज्ञासा; स्कूल लाइब्रेरी में नई किताबें पढ़ने और उन्हें छूने का बेपनाह आनंद; कक्षा में होने वाली गहन चर्चा और बहस; और खेल, संगीत व थिएटर का रोमांच—सब अप्रासंगिक हो जाते हैं। इसके बजाय, जो बचता है वह है 'डमी स्कूलों' की कठोर सच्चाई, कोचिंग सेंटरों का दबाव और शारीरिक रूप से थके हुए एवं मानसिक रूप से आहत किशोरों की बेचैनी, जिन्हें फ़ुटबॉल खेलने, कोई अच्छा उपन्यास पढ़ने या लंबी सैर पर जाने के लिए शायद ही कोई 'फालतू' समय मिल पाता है। इसके अलावा, बार-बार होने वाली अभ्यास परीक्षाएं, जिनसे कोचिंग 'गुरु' लगातार छात्रों की 'गति' और 'कौशल' मापते हैं, उनके बचपन के सुनहरे सालों को बर्बाद कर देते हैं। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि वे अपने माता-पिता के सामने अपनी 'काबिलियत' साबित करने की कभी न खत्म होने वाली चिंता में जीते हैं, मां-बाप के लिए बच्चों के लिए 'सफलता' ही उनकी इज्जत का मोल बन जाती है। असल में, कोई भी समझदार शिक्षक और शिक्षाविद् यही कहेगा कि प्रशिक्षण का यह तरीका एक ऐसी मशीनी और बंधी-बंधाई सोच वाली मानसिकता बनाता है जो बच्चों में अस्पष्टताओं, जटिलताओं और बारीक बातों को समझने या उनके साथ जीने में पूरी तरह नाकाम कर देती है। सिर्फ़ इतना ही नहीं, इस बेचैन पीढ़ी को कई तरह की मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं—जैसे कि अवसाद, अकेलापन और आत्महत्या के ख्यालों—का सामना करना पड़ रहा। इस बीच, भारत का 'स्याह' शिक्षा तंत्र—यानी कोचिंग फ़ैक्टरियां—चोखा धंधा कर रहे हैं। दूसरी बात, भले ही सब कुछ विवादों से मुक्त लगे, लेकिन सच तो यह है कि नीट या जेईई जैसी मानकीकृत परीक्षाएं कभी भी निष्पक्ष नहीं होतीं। वर्गों और जातियों में बंटे हमारे जैसे समाज में, जहां सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक समृद्धि के आधार पर तमाम किस्म की असमानताएं मौजूद हैं, कोई भी मुक़ाबला निष्पक्ष नहीं हो सकता। यह समझने के लिए किसी को समाज विज्ञानी होने की ज़रूरत नहीं है कि ग्रामीण सरकारी स्कूल के किसी गरीब या निम्न-मध्यम वर्गीय लड़के के मुकाबले, किसी अमीर और ऊंचे रसूख वाले परिवार का बेटा—जो किसी ब्रांडेड कोचिंग सेंटर से खास ट्रेनिंग का खर्च उठा सकता है—वह मुक़ाबला पहले ही जीत चुका होता है। भले ही कभी-कभार आप और मैं किसी टैक्सी ड्राइवर के बेटे या गरीब किसान की बेटी के नीट या जेईई जैसे अहम इम्तिहान पास करने की असाधारण कहानी अपवादवश सुनते हों, लेकिन कड़वा सच यह है कि ये सभी इम्तिहान निष्पक्ष होने के बजाय, समाज में पहले से मौजूद सामाजिक और आर्थिक असमानता को ही बढ़ावा देते हैं। इसलिए मान लेना चाहिएः एक निष्पक्ष मुक़ाबले का विचार महज़ भ्रम है, और इसलिए, मेरिटोक्रेसी (योग्यता-आधारित व्यवस्था) के तर्क वाली इस व्यवस्था को सही ठहराने का कोई कारण नहीं बनता। और आखिर में, इस पूरी बीमारी को तब तक ठीक से नहीं समझा जा सकता जब तक हम यह न देखें कि कैसे नव-उदारवाद की 'मशीनी' सोच ने शिक्षा की लोकतांत्रिक और आज़ाद बनाने वाली क्षमता को खत्म कर डाला है। जैसे-जैसे बाज़ारवाद का सिद्धांत हावी हो रहा है, शिक्षा सिर्फ़ ऐसी नौकरियों के लिए प्रशिक्षण बनकर रह गई है जो टेक्नो-कॉर्पोरेट मशीन की आर्थिक उत्पादकता बढ़ाती हैं।

आप का नज़रिया

अढ़ाई अरब डॉलर का कर्ज

यह ईरान युद्ध और उससे उपजे संकटों और प्रभावित सप्लाई चेन के फलितार्थ हैं। मई में भारत का निर्यात 45.20 अरब डॉलर था, जबकि आयात 73.41 अरब डॉलर का करना पड़ा। नतीजतन एक ही माह में व्यापार घाटा 28.21 अरब डॉलर का रहा। भारत का राजकोषीय घाटा और चालू खाता घाटा भी बढ़े हैं। राजकोषीय घाटा जीडीपी के 1 फीसदी से अधिक तक बढ़ सकता है। हमारी मुद्रा 'रुपए' का अवमूल्यन होता रहा है। अब कुछ पैसे कम हुआ है, लेकिन अब भी 94 रुपए से अधिक है। महंगाई की दर 10 फीसदी तक पहुंचने को है। बेरोजगारी की दर भी बढ़ी है। युद्ध के कारण ईंधन और उर्वरक की सबसिडी का बोझ बहुत बढ़ा है, लिहाजा सरकारी पूंजी के अलावा, अतिरिक्त स्रोतों की तलाश सरकार कर रही है। खबर आई है कि भारत सरकार विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक से 2.5 अरब डॉलर का कर्ज लेने पर विचार कर रही है। भारतीय मुद्रा में यह कर्ज 23,600 करोड़ रुपए से अधिक का होगा। इसमें से 14,160 करोड़ रुपए विश्व बैंक और 9440 करोड़ रुपए एशियाई विकास बैंक से कर्ज लिया जा सकता है। कर्ज की घोषणा आगामी दो माह में, कभी भी, की जा सकती है। यह 'ब्लूमबर्ग' की रपट भी है। इस तरह अब भारत पर विश्व बैंक का कुल बकाया कर्ज करीब 39.3 अरब डॉलर (करीब 3.30 लाख करोड़ रुपए) है। यह कर्ज भारत सरकार और विश्व बैंक के बीच 5-साला समझौते का हिस्सा होगा, जिसके तहत 8-10 अरब डॉलर की सालाना वित्तीय मदद का प्रावधान है। यह भी देश के सामने स्पष्ट होना चाहिए कि भारत विश्व बैंक से सबसे अधिक कर्ज लेने वाले देशों की सूची में शीर्ष स्थान पर है। चिंतित सरोकार यह नहीं है कि ईरान युद्ध के कारण भारत में कर्ज लेने की नौबत आ गई है। अमरीका अपनी कुल जीडीपी से काफी ज्यादा करीब 39 ट्रिलियन डॉलर के कर्ज में है। युद्ध के कारण भारत, अमरीका समेत ब्रिटेन, जापान, द. कोरिया, चीन, रूस, जर्मनी, फ्रांस, इटली, सिंगापुर, कनाडा सरीखे देशों की जीडीपी गिरी है। इस सूची में जी-7 के सभी देश शामिल हैं। ईरान की जीडीपी 6 फीसदी से अधिक लुढ़की है।

दरअसल जब अमरीका-ईरान के बीच समझौते के दस्तावेज पर दोनों देशों के राष्ट्रपतियों ने दस्तखत किए थे, तो शेष विश्व के साथ भारत ने भी राहत की सांस ली थी, लेकिन बीते दो-तीन दिनों में (19-21 जून) राष्ट्रपति ट्रंप ईरान को लगातार हमले की धमकियां देते रहे हैं, इजरायल ने लेबनान-हिज़्बुल्ला पर 200 से अधिक हमले किए हैं, जिसमें कई हताहत हुए हैं, समझौता-वार्ता ना-नुकर के बीच ही घिसट रही है। ईरान ने होर्मुज को फिर बंद कर दिया है, हालांकि अमरीका का दावा इससे बिल्कुल उलट है। उसने 55 जहाजों-टैंकरों के गुजरने का दावा किया है। भारत के तीन टैंकर 8.6 लाख टन कच्चा तेल लेकर होर्मुज पार कर चुके हैं। हालात समझौते वाले नहीं लगते, लेकिन ट्रंप समझौते को लेकर बेहद उतावले और निराश हैं, लिहाजा संकट और किल्लत के आसार यथावत हैं। मई में खाद्य तेल 49.82 फीसदी महंगा हुआ है। कपड़ा, खाद, तेल-गैस आदि की कीमतें भी उछाल पर हैं। हालांकि 21 जून को कच्चे तेल की कीमत 81 डॉलर प्रति बैरल से अधिक थी। भारतीय बास्केट तो इससे महंगी होगी। इन संकटों के अलावा, अल-नीनो का खतरा मंडरा रहा है। कृषि अर्थशास्त्रियों के आकलन हैं चूंकि इस बार मॉनसून 38-40 फीसदी कमजोर रह सकता है, लिहाजा जुलाई और उसके बाद का वक्त 'तनावपूर्ण' हो सकता है। तिलहन, सोयाबीन, दालों और सब्जियों की फसलें बुरी तरह प्रभावित हो सकती हैं, लिहाजा इनका महंगा होना स्वाभाविक है। दिवाली के आसपास महंगाई अधिक होने के आसार हैं। क्या भारत सरकार के भीतर इन परिस्थितियों पर विमर्श किया जा रहा है? किसानों की कतारें खाद के लिए दिखने लगी हैं। बहरहाल कर्ज की राशि शहरी बुनियादी ढांचे, निजी क्षेत्र में रोजगार सृजन, आर्थिक विकास आदि पर खर्च करने की बात कही गई है।

नतीजतन एक ही माह में व्यापार घाटा 28.21 अरब डॉलर का रहा। भारत का राजकोषीय घाटा और चालू खाता घाटा भी बढ़े हैं। राजकोषीय घाटा जीडीपी के 1 फीसदी से अधिक तक बढ़ सकता है। हमारी मुद्रा 'रुपए' का अवमूल्यन होता रहा है। अब कुछ पैसे कम हुआ है, लेकिन अब भी 94 रुपए से अधिक है। महंगाई की दर 10 फीसदी तक पहुंचने को है। बेरोजगारी की दर भी बढ़ी है। युद्ध के कारण ईंधन और उर्वरक की सबसिडी का बोझ बहुत बढ़ा है, लिहाजा सरकारी पूंजी के अलावा, अतिरिक्त स्रोतों की तलाश सरकार कर रही है। खबर आई है कि भारत सरकार विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक से 2.5 अरब डॉलर का कर्ज लेने पर विचार कर रही है। भारतीय मुद्रा में यह कर्ज 23,600 करोड़ रुपए से अधिक का होगा। इसमें से 14,160 करोड़ रुपए विश्व बैंक और 9440 करोड़ रुपए एशियाई विकास बैंक से कर्ज लिया जा सकता है। कर्ज की घोषणा आगामी दो माह में, कभी भी, की जा सकती है। यह 'ब्लूमबर्ग' की रपट भी है। इस तरह अब भारत पर विश्व बैंक का कुल बकाया कर्ज करीब 39.3 अरब डॉलर (करीब 3.30 लाख करोड़ रुपए) है। यह कर्ज भारत सरकार और विश्व बैंक के बीच 5-साला समझौते का हिस्सा होगा, जिसके तहत 8-10 अरब डॉलर की सालाना वित्तीय मदद का प्रावधान है। यह भी देश के सामने स्पष्ट होना चाहिए कि भारत विश्व बैंक से सबसे अधिक कर्ज लेने वाले देशों की सूची में शीर्ष स्थान पर है। चिंतित सरोकार यह नहीं है कि ईरान युद्ध के कारण भारत में कर्ज लेने की नौबत आ गई है। अमरीका अपनी कुल जीडीपी से काफी ज्यादा करीब 39 ट्रिलियन डॉलर के कर्ज में है।

दृष्टि कोण

जानलेवा बनती शिलाखंडों की बारहमासी बरसात

आजकल उत्तराखंड व हिमाचल में कई जगहों पर बरसात हो न हो, अचानक शिलाखण्डों का गिरना, पत्थरों के मलबों की बौछारों का होना असामान्य नहीं है। जब ये किसी वाहन, व्यक्ति या घर पर गिर जाते हैं और जानमाल की क्षति हो जाती है तो खबर हो जाती है। अन्यथा खाली सड़क पर या निर्जन क्षेत्रों में हों तो ये आम भूस्खलन भर मान लिये जाते हैं। कभी देखते ही देखते विशालकाय पर्वत खण्डों का ऐसा ढहना होता है कि लगता है कि जैसे पूरा का पूरा पहाड़ ही जमीन पर आ जायेगा। हर साल पहाड़ों से गिरते पत्थर लोगों को ही नहीं, पशुधन को भी हताहत कर देते हैं। इस साल भी उत्तराखंड में जून माह में ही ऐसी कई घटनाओं में मौतें भी हुई हैं व वाहन भी दबे हैं। पहाड़ों में सड़कें जैसे-जैसे चौड़ी की जाने लगती हैं तो पहाड़ों को ज्यादा गहराई तक काटना होता है। पहाड़ों या शिलाओं को तोड़ने के लिए विस्फोटों का उपयोग भी आवश्यक हो जाता है। ऐसे में सड़कों पर आपदायें भी ज्यादा गहराने लगती हैं। जगह-जगह ऐसे लिखे बोर्ड लगे हैं कि सड़कों के इन हिस्सों में रुके रहना भी खतरनाक है। वाहन चालकों के लिए सलाह लिखी रहती है—रुकें, देखें, तब चलें। चिंताजनक यह है कि कुछ क्षेत्रों में भूवैज्ञानिकों व अभियंताओं के सुझाये उपायों के क्रियान्वयन के बाद सालों साल से भूस्खलन रुकता ही नहीं है। यह हर मौसम में लगातार होता रहता है। यहां मार्ग बन्द होते, खुलते, फिर बंद होते रहते हैं। इनके पास मलबा हटाने वाली मशीनों व कर्मियों को नियमित तैनाती भी कर दी जाती है। सड़कों के खुलने पर भी पहाड़ी पर अटके जमा टनों मलबे से पत्थर भी गिरते रहते हैं। पैदल यात्री व वाहन जोखिमों के साये में ऊपर खिसकते मलबे पर टकटकी लगाये भूस्खलन क्षेत्रों को पार करते हैं। काम भर सड़क खोलने की जल्दी में मुख्यतः दो बातें होती हैं। ये दोनों बातें कभी भी पत्थरों की अचानक बौछारों के जोखिम भी बढ़ा देते हैं। एक है मशीनों से जैसे-तैसे पहाड़ों को गहराई तक काट वाहनों की आवाजाही के लिए राह देने के दबावों के बीच मलबा कटान व उत्खनन से अपेक्षाकृत स्थिर ढाल भी अस्थिर

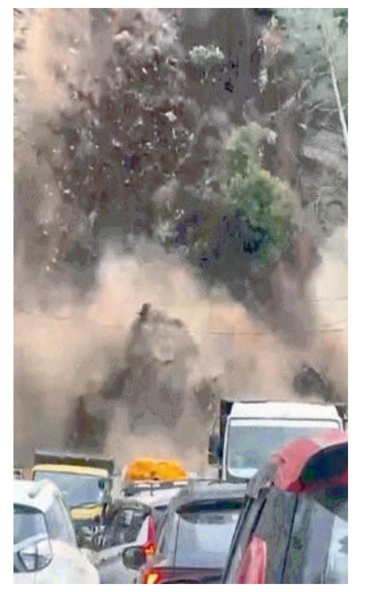

बन जाते हैं। पहाड़ों में भूस्खलनों को हटाने के लिए विस्फोट भी करना पड़ता है। लेकिन उन्हें स्थिर करने या रोक दीवार बनाने का आवश्यक काम उपेक्षित रह जाता है। जल्दी में यह हो भी नहीं सकता है। जिन दिनों भूस्खलन से कुछ राहत रहती है तब भी नहीं किया जाता है। इस कारण शुष्क दिनों में भी भूस्खलन होता रहता है। ऐसे में भारी बोल्डर्स भी जब-तब लुढ़कते रहते हैं। दूसरा है कि सड़क खोलने में ज्यादा देर न हो, इसलिये कुछ मलबा पहाड़ी में ही छूटा रहने दिया जाता है। यह भी किसी क्षेत्र को लगातार भूस्खलन जोन बना देता है। भूस्खलन का मलबा, जो पूरी तरह से नीचे न लाया गया या न आ पाया हो वह बरसातों में, मशीनी कम्पनों या भूकम्पकीय सक्रिय क्षेत्रों में छोटे भूकम्पों से भी पुनः ढहना शुरू कर सकता है। निरंतरता वाले भूस्खलन वाले क्षेत्रों से गिरने वाले अधिकांश पत्थर या शिलाखंड वे होते हैं जिन्हें बांधे रखने में मिट्टी व कंकर बजरी आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बरसातों में पत्थरों को बांधे मिट्टी जब बहने लगती है तो पुनः पत्थर, शिलाखण्डों की बौछारें शुरू हो जाती हैं। पहाड़ी जलागम वृक्षविहीन हो रहे हैं। इससे भी भूस्खलनों व भूक्षरण में कमी लाना मुश्किल हो जाता है। ढलानों पर पत्थर मलबा कई बार केवल झाड़ियों या पेड़ों के कारण टिके रहते हैं जिन्होंने उनके लुढ़कने के राहों पर अंकुश लगा दिया होता है। किन्तु जब जंगलों की आग इन झाड़ियों, पेड़ों को जला देती है तो इनके सहारे रुके शिलाओं, मलबे का एकाएक फिर से ढहना शुरू हो जाता है। गर्मियों के माह की वनाग्नियों के बाद की बरसातें मलबा ढहने को और तेज कर देती हैं। भूस्खलन आखिर गुरुत्वाकर्षण शक्ति के वशीभूत मलबा ढहना ही तो है। उन पहाड़ियों की दरारों में जिन पर मलबा टिका है, बरसाती पानी के घुसने से भी दरारों में फैलाव आ जाता है। दरार खण्डित भूखण्डों का टूटना तेज हो जाता है। परिणामस्वरूप भूस्खलन व मलबा बिखराव पुनः प्रारंभ हो जाता है। अतः लगातार बने भूस्खलन जोखिमों के क्षेत्र में, वैज्ञानिकों की राय लेकर बरसाती जल की उचित ड्रेनेज व्यवस्था बनाना जरूरी है।

औजला के गीत विनिंग स्पीच से मिलती है जीत की प्रेरणा : विराट

नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली का कहना है कि वह पंजाबी गायक करण औजला के गाने विनिंग स्पीच से प्रेरित हैं और इसे अपनी जीत का मंत्र मानते हैं। विराट के अनुसार उन्हें लगता है कि जिस प्रकार के बोल इसमें हैं।

उससे उन्हें अपने जीवन की यात्रा और संघर्षों का प्रतिबिंब इसमें दिखता है। वे इसे अपनी व्यक्तित्व से गहराई से जुड़ा हुआ मानते हैं। विराट का कहना है कि यह गीत उन्हें अपनी यात्रा, संघर्षों और जीवन के अनुभवों की याद दिलाता है, यही वजह है कि वे इसे दिल के करीब मानते हैं।

विराट ने एक कार्यक्रम में कहा कि मैच से पहले वह आमतौर पर विनिंग स्पीच सुनते हैं। उन्होंने इस गाने के प्रति अपने गहरे जुड़ाव को लेकर कहा, आप अपने दिल से गाने लिखते हो। जिस गीत से मैं बहुत जुड़ाव महसूस करता हूं, वह है विनिंग स्पीच क्योंकि उस गाने में उसी प्रकार की यात्रा के बारे में बताया गया है जिससे मैं गुजरा हूं। मैंने अपने पिता को बहुत कम उम्र में खो दिया था, इसलिए यह गीत मेरे लिए बहुत विशेष है। उन्होंने बताया कि इस गीत के बोल उन्हें अपनी यात्रा और अनुभवों की याद दिलाते हैं, जो उन्हें हर बार प्रेरित करते हैं।

इस कार्यक्रम में औजला ने अपने गानों से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने विनिंग स्पीच सहित वेवी और एमएफ गबरू जैसे लोकप्रिय गाने गाए। कार्यक्रम के दौरान, औजला ने विराट को मंच पर आमंत्रित किया, जिसे देखकर दर्शकों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सोशल मीडिया पर इस इवेंट के वीडियो तेजी से वायरल हुए, जिसने इस शानदार शाम को और भी विशेष बना दिया। इस यादगार रात को बनाने के लिए क्रिकेट, संगीत और फैशन जगत की कई जानी-मानी हस्तियां मौजूद थीं।

इसी मंच पर विराट ने अपने कभी हार न मानने वाले रवैये पर कहा कि मुझे ऐसे हालात पसंद हैं जब लोगों को लगता है कि मैच हाथ से निकल गया है और फिर किसी तरह आप गेम को वापस अपनी तरफ मोड़ लेते हैं। उन्होंने बचपन से ही इस मानसिकता को अपनाने की बात कही और बताया कि उन्होंने कभी भी अंत तक यह नहीं माना कि मैच हार गए हैं या वे जीत नहीं सकते। साथ ही कहा कि जब तक आप मैच हार नहीं जाते, तब तक खेल खत्म नहीं होता। विराट की यह अडिग भावना और उनका जीवन दर्शन, औजला के गीत विनिंग स्पीच के संदेश को बखूबी दर्शाता है, जो उन्हें मैदान पर और जीवन में भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

न्यूज ब्रीफ

आईएसएसएफ जूनियर विश्व चैंपियनशिप में शिवा ने जीता रजत, युग प्रताप को कांस्य

नई दिल्ली। जर्मनी के सुहल में चल रही आईएसएसएफ जूनियर विश्व चैंपियनशिप में भारतीय निशानेबाजों का शानदार प्रदर्शन जारी है। भारतीय दल ने एक और सफल दिन के साथ तीन नए पदक अपने नाम किए और पदक तालिका में अपनी बढ़त को और मजबूत कर लिया। भारत के शिवा नरवाल ने 10 मीटर एयर पिस्टल जूनियर पुरुष वर्ग में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए रजत पदक जीता। वहीं इसी स्पर्धा में युग प्रताप सिंह राठौर ने शानदार निशानेबाजी करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया। इस स्पर्धा में भारत ने दो पदक जीतकर दोहरी सफलता हासिल की। टीम स्पर्धा में भी भारतीय खिलाड़ियों ने दमदार प्रदर्शन किया। 10 मीटर एयर पिस्टल जूनियर पुरुष टीम स्पर्धा में शिवा नरवाल, संदीप बिश्नोई और चिराग शर्मा की तिकड़ी ने संयुक्त रूप से उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए भारत को रजत पदक दिलाया। इन तीन नए पदकों के साथ भारत की कुल पदक संख्या अब 15 हो गई है, जिसमें 5 स्वर्ण, 3 रजत और 7 कांस्य पदक शामिल हैं। भारतीय दल लगातार व्यक्तिगत और टीम दोनों स्पर्धाओं में शानदार प्रदर्शन कर रहा है और इसी के दम पर भारत ने चैंपियनशिप की पदक तालिका में शीर्ष स्थान बरकरार रखा है।

फीफा विश्व कप 2026 : नार्वे ने सेनेगल को 3-2 से हराकर नाकआउट दौर में बनाई जगह

न्यूयार्क/न्यू जर्सी। फीफा विश्व कप 2026 में नार्वे ने सेनेगल को रोमांचक मुकाबले में 3-2 से हराकर अंतिम 32 में अपनी जगह पक्की कर ली। नार्वे की जीत के नायक एरलिंग हालांड रहे, जिन्होंने दूसरे हाफ में दो गोल दागे। मुकाबले की शुरुआत नार्वे के लिए शानदार रही। टीम को शुरुआती बढ़त मार्कस पेडर्सेन ने दिलाई। इसके बाद दूसरे हाफ में एरलिंग हालांड ने आक्रामक खेल दिखाते हुए लगातार दो गोल कर नार्वे को मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया। हालांकि सेनेगल ने हार नहीं मानी। इस्माइला सार ने नार्वे के तीसरे गोल के पहले और बाद में दो गोल कर मुकाबले को रोमांचक बना दिया। अंतिम समय में सेनेगल ने बराबरी की कोशिश की, लेकिन नार्वे की रक्षापंक्ति ने बढ़त बचाए रखी और टीम ने जीत दर्ज कर नाकआउट चरण का टिकट हासिल कर लिया। इस जीत के साथ नार्वे ने अगले दौर में प्रवेश सुनिश्चित कर लिया, जबकि सेनेगल की स्थिति मुश्किल हो गई है।

मेसी के दो गोल से अर्जेंटीना की जीत, आस्ट्रिया को हराकर नाकआउट चरण में पहुंची टीम

डलास। फीफा विश्व कप 2026 में अर्जेंटीना ने अपने प्रशंसकों का भरोसा कायम रखते हुए आस्ट्रिया को 2-0 से हराकर नाकआउट चरण में जगह पक्की कर ली। कप्तान लियोनेल मेसी ने दोनों गोल दागकर टीम को जीत दिलाई और एक बार फिर बड़े मंच पर अपनी अहमियत साबित की। मैच से पहले ही डलास शहर अर्जेंटीना के रंग में रंग गया था। हजारों समर्थकों ने पारंपरिक बांदेराजो आयोजन में हिस्सा लेकर शहर को नीले-सफेद रंग में सजा दिया था। मुकाबले के दिन भी स्टेडियम में अर्जेंटीना समर्थकों का जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। मुकाबले की शुरुआत में अर्जेंटीना को बड़ा मौका मिला जब वीडियो समीक्षा के बाद टीम को पेनाल्टी दी गई। हालांकि मेसी इस अवसर को गोल में नहीं बदल सके और उनका शाट बाहर चला गया। यह विश्व कप 2022 में पोलैंड के खिलाफ चूकी पेनाल्टी के बाद देश के लिए उनकी पहली पेनाल्टी चूक रही। इसके बाद आस्ट्रिया ने कुछ समय तक अर्जेंटीना पर दबाव बनाया और मुकाबले को संतुलित बनाए रखा। लेकिन 39वें मिनट में अर्जेंटीना को बढ़त मिल गई। थियागो आल्मादा ने फाकुंडो मेडिना के पास को चतुराई से छोड़ दिया और गेंद मेसी तक पहुंची। मेसी ने संतुलित अंदाज में गेंद को गोल में पहुंचाकर टीम को 1-0 की बढ़त दिला दी। दूसरे हाफ में आस्ट्रिया ने वापसी की कोशिश की और एक खतरनाक अवसर बनाया, लेकिन गोलरक्षक एमिलियानो मार्टिनेज़ ने शानदार बचाव किया।

मालवा स्टैलियंस ने रीवा जगुआर्स को 52 रन से हराया

अखिल के बल्ले और आदित्य-ईशान की गेंदों के दम पर मालवा की दमदार जीत; फिर भी रीवा प्लेआफ की दौड़ में तीसरे स्थान पर कायम

इंदौर

होलकर स्टेडियम में खेले गए मध्य प्रदेश प्रीमियर लीग के 41वें मुकाबले में मालवा स्टैलियंस ने अखिल निगोते यादव के बल्ले और आदित्य-ईशान की गेंदों के दम पर शानदार प्रदर्शन करते हुए रीवा जगुआर्स को 52 रन से पराजित कर महत्वपूर्ण जीत दर्ज की। बारिश से प्रभावित इस मुकाबले में मालवा ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 214/7 का विशाल स्कोर खड़ा किया, जिसके जवाब में रीवा की पूरी टीम 20 ओवर में 162 रन पर सिमट गई।

मुकाबले के दौरान बारिश ने खेल को कुछ समय के लिए रोक दिया था। उस समय रीवा जगुआर्स 15 ओवर में 108/6 के स्कोर पर थी और उसे 30 गेंदों में 107 रन की जरूरत थी। खेल दोबारा शुरू होने के बाद भी रीवा लक्ष्य के करीब नहीं पहुंच सकी और अंततः 52 रन से हार का सामना करना पड़ा।

टास जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए मालवा स्टैलियंस को अखिल निगोते यादव ने विस्फोटक शुरुआत दिलाई। उन्होंने सिर्फ 29 गेंदों में 66 रन की पारी खेली, जिसमें सात छक्के शामिल रहे। पार्थ साहनी ने 33 रन का योगदान दिया, जबकि अंत में आर्यन देशमुख ने महज 10 गेंदों पर नाबाद 36 रन बनाकर टीम को 214 रन तक पहुंचा दिया। रीवा की ओर से अश्विन दास और सागर सोलंकी ने दो-दो विकेट लिए, लेकिन अन्य गेंदबाज मालवा के बल्लेबाजों पर अंकुश लगाने में सफल नहीं हो सके।

215 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी रीवा की शुरुआत खराब रही और कप्तान पृथ्वीराज सिंह तोमर बिना खाता खोले आउट हो गए। अक्षत रघुवंशी (29) और मोहम्मद अरहम अकील (27) ने तेज बल्लेबाजी कर उम्मीद जगाई, लेकिन बड़ी साझेदारी नहीं बना सके। अथर्व महाजन ने 25 रन बनाए, जबकि अश्विन दास ने 15 गेंदों पर 28 रन की तेज पारी खेली। निचले क्रम में रामवीर गुज्जर ने 10 गेंदों पर चार छक्कों की मदद से 28 रन बनाकर संघर्ष किया, लेकिन तब तक मैच रीवा की पकड़ से निकल चुका था। मालवा स्टैलियंस की जीत में आदित्य मिश्रा ने सबसे अहम भूमिका निभाई। उन्होंने चार ओवर में मात्र 19 रन देकर तीन विकेट झटके। ईशान चौधरी ने भी चार ओवर में 38 रन देकर चार विकेट लेकर रीवा की बल्लेबाजी की कमर तोड़ दी। अशुतोष शर्मा और आर्यन देशमुख को भी एक-एक सफलता मिली। बारिश की बाधा के बावजूद मालवा स्टैलियंस ने पूरे मैच में दबदबा बनाए रखा और बल्लेबाजी व गेंदबाजी दोनों विभागों में शानदार प्रदर्शन करते हुए 52 रन की यादगार जीत अपने नाम कर ली।

इस जीत के बावजूद मालवा स्टैलियंस की प्लेआफ की राह लगभग बंद हो गई है। नौ मैचों में टीम की यह सिर्फ दूसरी जीत रही और वह चार अंकों के साथ अंक तालिका में अंतिम स्थान पर बनी हुई है। वहीं, हार के बावजूद रीवा जगुआर्स आठ मैचों में 10 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर कायम है। चंबल घड़ियाल्स 16 अंकों के साथ शीर्ष पर जबकि रायल निमाड़ ईगल्स 14 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर है।

मालवा स्टैलियंस के आर्यन देशमुख को उनके हरफनमौला प्रदर्शन के लिए प्लेयर आफ द मैच चुना गया। उन्होंने 10 गेंदों पर नाबाद 36 रन की विस्फोटक पारी खेलने के अलावा एक विकेट भी हासिल किया।

संक्षिप्त स्कोर

मालवा स्टैलियंस : 214/7 (20 ओवर) – अखिल निगोते यादव 66 (29), आर्यन देशमुख नाबाद 36 (10), पार्थ साहनी 33 (27); अश्विन दास 2/62, सागर सोलंकी 2/32।

रीवा जगुआर्स : 162 (20 ओवर) – अक्षत रघुवंशी 29 (16), अश्विन दास 28 (15), रामवीर गुज्जर 28 (10); ईशान चौधरी 4/38, आदित्य मिश्रा 3/19।

फीफा विश्व कप 2026 : फ्रांस ने इराक को 3-0 से हराकर नाकआउट में बनाई जगह

फिलाडेल्फिया

फीफा विश्व कप 2026 में फ्रांस ने मंगलवार को इराक को 3-0 से हराकर अंतिम 32 में अपनी जगह पक्की कर ली। मुकाबले का सबसे चर्चित पहलू रहा किलियन एम्बाप्पे का शानदार प्रदर्शन और बीच मैच में खराब मौसम के कारण हुआ लंबा व्यवधान।

फ्रांस के कप्तान किलियन एम्बाप्पे ने प्रतियोगिता में अपना दूसरा दोहरा गोल दागते हुए टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। उनके दोनों गोलों के बीच लगभग तीन घंटे का अंतर रहा, क्योंकि क्षेत्र में तेज़ तूफान और बारिश के कारण दूसरे हाफ की शुरुआत लगभग दो घंटे तक टालनी पड़ी।

एम्बाप्पे के इन गोलों के साथ विश्व कप में उनके कुल गोलों की संख्या 16 हो गई और उन्होंने जर्मनी के पूर्व दिग्गज स्ट्राइकर मिरोस्लाव क्लोज़े के रिकार्ड की बराबरी कर ली। इससे पहले अर्जेंटीना के स्टार खिलाड़ी लियोनेल मेसी आस्ट्रिया के खिलाफ दो गोल करके विश्व कप इतिहास में 18 गोल के नए रिकार्ड तक पहुंच चुके थे।

एम्बाप्पे अब इस विश्व कप में चार गोल कर चुके हैं और गोल्डन बूट की दौड़ में मेसी से सिर्फ एक गोल पीछे हैं।

फ्रांस ने मैच की शुरुआत से ही दबदबा बनाए रखा। 14वें मिनट में एम्बाप्पे ने पहला गोल किया। माइकल ओलिसे के पास पर गेंद मिलने के बाद उन्होंने बाक्स के बाहर से शानदार प्रहार किया, जिसे इराक के गोलरक्षक अहमद बासिल नहीं रोक सके।

दूसरे हाफ की शुरुआत मौसम के कारण देरी से हुई, लेकिन वापसी के बाद भी इराक लय नहीं पकड़ सका। 54वें मिनट में इराक की रक्षात्मक गलती का फायदा उठाते हुए उस्मान डेम्बेले ने एम्बाप्पे को आसान अवसर दिया और उन्होंने अपना दूसरा गोल कर दिया।

इसके बाद 66वें मिनट में मौजूदा बैलन डीओर विजेता उस्मान डेम्बेले ने भी गोल करते हुए फ्रांस की बढ़त 3-0 कर दी। डेम्बेले ने माइकल ओलिसे के शानदार पास को नियंत्रित करते हुए गेंद को गोल में पहुंचाया।

मैच के दौरान मौसम भी चर्चा का विषय रहा। पहले हाफ के समाप्त होने के समय ही तेज़ बारिश और तूफान शुरू हो गया, जिसके बाद दर्शकों को स्टेडियम के सुरक्षित हिस्सों में भेजा गया। लगभग एक घंटा 40 मिनट बाद खिलाड़ी वार्मअप के लिए लौटे और मैदान पर जमा पानी हटाने के बाद खेल दोबारा शुरू हो सका।

इस जीत के साथ फ्रांस ने नाकआउट चरण में प्रवेश सुनिश्चित कर लिया और खिताब की दौड़ में अपनी मजबूत दावेदारी पेश की।

फीफा विश्व कप : जर्मनी को बड़ा झटका

बोस्टन। फीफा विश्व कप 2026 में जर्मनी की टीम को बड़ा झटका लगा है। टीम के स्टार डिफेंडर निको श्लोटरबेक टखने में गंभीर चोट के कारण पूरे टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। यह चोट उन्हें ग्रुप चरण के मुकाबले के दौरान लगी थी। मैच के दौरान चोटिल होने के बाद श्लोटरबेक को मध्यांतर से पहले मैदान छोड़ना पड़ा था। बाद में कराई गई चिकित्सीय जांच में उनके बाएं टखने के लिगामेंट में गंभीर चोट की पुष्टि हुई, जिसके चलते उन्हें लंबे समय तक मैदान से दूर रहना पड़ सकता है। जर्मनी के मुख्य कोच जूलियन नागेल्समैन ने इस चोट को टीम के लिए बड़ा नुकसान बताया। उन्होंने कहा कि श्लोटरबेक न केवल रक्षापंक्ति के महत्वपूर्ण खिलाड़ी थे, बल्कि उनकी खेल निर्माण क्षमता और मैदान पर नेतृत्व भी टीम के लिए बेहद अहम था। कोच ने यह भी कहा कि खिलाड़ी का सकारात्मक रवैया टीम के लिए प्रेरणादायक है और वह फिलहाल टीम के साथ बने रहेंगे। उनके अनुसार, श्लोटरबेक की मौजूदगी ड्रेसिंग रूम में भी खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाने में मदद करेगी। हालांकि जर्मनी के लिए राहत की बात यह है कि टीम पहले ही अपने ग्रुप में शीर्ष स्थान हासिल कर नाकआउट चरण में पहुंच चुकी है।

फीफा विश्व कप 2026 : अल्जीरिया ने जार्डन को 2-1 से हराकर नाकआउट की उम्मीदें जिंदा रखीं

सैन फ्रांसिस्को

फीफा विश्व कप 2026 के ग्रुप जे मुकाबले में मंगलवार को अल्जीरिया ने शानदार वापसी करते हुए जार्डन को 2-1 से हराकर अपनी नाकआउट चरण में पहुंचने की उम्मीदें जिंदा रखीं, जबकि जार्डन का टूर्नामेंट सफर यहीं समाप्त हो गया। मैच की शुरुआत से ही अल्जीरिया ने गेंद पर नियंत्रण बनाए रखा और लगातार आक्रमण किए, लेकिन जार्डन की मजबूत रक्षापंक्ति ने लंबे समय तक उन्हें सफलता नहीं मिलने दी। इसके उलट जार्डन ने मिले मौके का फायदा उठाते हुए 36वें मिनट में बढ़त हासिल कर ली। अल्जीरियाई रक्षण पंक्ति की गलती के बाद बने तेज आक्रमण को निजार अल-रशदान ने निचले कोने में शानदार शाट लगाकर गोल में बदल दिया। पहला हाफ में 1-0 से पीछे रहने के बाद अल्जीरिया ने दूसरे हाफ में दबाव बढ़ाया और वापसी की शुरुआत 69वें मिनट में हुई। स्थानापन्न खिलाड़ी नाधिर बेनबुआली ने रियाद महरेज के कार्नर पर शानदार हेडर लगाकर स्कोर 1-1 कर दिया। इसके बाद अल्जीरिया ने लगातार दबाव बनाए रखा और 82वें मिनट में एक और कार्नर से निर्णायक गोल आया। बाक्स में बनी अफरा-तफरी के बीच अमीन गुइरी ने नजदीक से गेंद को गोल में पहुंचाकर अल्जीरिया को 2-1 की बढ़त दिला दी। अंतिम मिनटों में जार्डन ने बराबरी की कोशिश की, लेकिन अल्जीरिया ने बढ़त बचाए रखी और महत्वपूर्ण जीत दर्ज की। इस हार के साथ जार्डन अपने पहले विश्व कप अभियान से बाहर हो गया, जबकि अल्जीरिया ने अंतिम दौर की दौड़ में खुद को बनाए रखा और अंक तालिका में अपनी स्थिति मजबूत की।

यह विश्व कप इतिहास में पहली बार रहा जब अल्जीरिया ने पिछड़ने के बाद कोई मुकाबला जीतकर वापसी की। इससे पहले विश्व कप में पीछे रहने की स्थिति में उसका रिकार्ड बेहद निराशाजनक रहा था। इसके साथ ही अल्जीरिया ने एशियाई टीमों के खिलाफ विश्व कप में अपना शानदार रिकार्ड भी कायम रखा और अब तक ऐसे दोनों मुकाबले जीत चुका है। नाधिर बेनबुआली विश्व कप में स्थानापन्न खिलाड़ी के रूप में गोल करने वाले दूसरे अल्जीरियाई खिलाड़ी बने, जबकि रियाद महरेज विश्व कप में गोल में योगदान देने वाले अल्जीरिया के सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बन गए।

आईसीसी ने जारी किया गर्भावस्था के बाद महिला क्रिकेटरों की वापसी का कार्यक्रम

दुबई

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने गर्भावस्था के बाद वापसी करने वाली रही महिला क्रिकेटरों की सहायता के लिए व्यापक दिशानिर्देश जारी करने के साथ ही कार्यक्रम भी पेश किया है।

आईसीसी का प्रयास उन महिला क्रिकेटरों की सहायता करना है जो अपने करियर के दौरान परिवार शुरू करने और बच्चे को जन्म देने के बाद मैदान पर वापसी का विकल्प चुन रही हैं। इन दिशानिर्देशों का लक्ष्य सदस्य बोर्डों के लिए एक संपूर्ण प्रणाली स्थापित करना है, जिससे कि वे खिलाड़ियों को गर्भावस्था, बच्चे के जन्म और शीर्ष स्तर के क्रिकेट में वापसी में उनकी सहायता कर सकें। इस कर्यक्रम के तहत ही पहले 16 सप्ताह के विंडो में बच्चे के जन्म के बाद शुरुआती रिकवरी, सुनियोजित अभ्यास और अनुकूलन

ICC International Cricket Council

शामिल होगा। इसके साथ ही क्रिकेट बोर्ड को प्रत्येक खिलाड़ी के लिए एक विशेष केस मैनेजर नियुक्त करना होगा, साथ ही उन्हें प्रशिक्षण के लिए लचीला माहौल, बच्चों की देखभाल और यात्रा में सहायता तथा गर्भावस्था व बच्चे के जन्म के बाद की अवधि में पर्याप्त चिकित्सा और स्वास्थ्य सुविधाओं को उपलब्ध कराना होगा। इन व्यापक दिशानिर्देशों को आईसीसी की मेडिकल एडवाइजरी कमेटी ने तैयार किया है। इनका मुख्य उद्देश्य सदस्य बोर्डों को खिलाड़ियों की भलाई को प्राथमिकता देते हुए और स्थानीय कानूनों के अनुसार गर्भावस्था व खेल में वापसी की नीतियां बनाने में मदद करना है। इस प्रणाली में रेडी (तैयार), रिव्यू (समीक्षा), रिस्टोर (बहाली), रीकंडीशन (फिर से तैयार होना), रिटर्न (वापसी) और रिफाइन (बेहतर बनाना) नामक छह-चरणों वाला खेल में वापसी का माडल है। यह माडल बच्चे के जन्म के बाद शुरुआती रिकवरी से लेकर प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी और उसके बाद लगातार निगरानी तक की एक क्रमिक प्रक्रिया का विस्तृत विवरण देता है। आईसीसी के एक प्रवक्ता ने इस पहल को महिला क्रिकेटरों को उनके करियर के हर चरण में समर्थन देने के लिए एक आवश्यक कदम बताया। उन्होंने जोर देकर कहा कि मातृत्व और एलीट क्रिकेट को एक-दूसरे से अलग नहीं देखा जाना चाहिए। प्रवक्ता ने कहा, स्पष्ट, व्यावहारिक और खिलाड़ी-केंद्रित मार्गदर्शन प्रदान करके, हम सदस्य बोर्डों को समझदारी से निर्णय लेने, खिलाड़ियों की भलाई की रक्षा करने और खेल में अधिक बेहतरीन प्रतिभा को बनाए रखने में मदद करना चाहते हैं। वहीं वेस्टइंडीज की अनुभवी खिलाड़ी एफी फ्लेचर, जिन्होंने 2021 में अपने बेटे को जन्म देने के बाद आईसीसी महिला विश्व कप में हिस्सा लिया था, का मानना है कि आईसीसी की ये पहल अधिक से खिलाड़ियों को मातृत्व के बाद क्रिकेट में वापसी के लिए प्रेरित करेंगी।

गोशामहल में साधु-साध्वीजी भगवंतों का भव्य मंगल प्रवेश, श्रद्धालुओं ने किया उत्साहपूर्ण स्वागत

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर संघ, गोशामहल में आज आध्यात्म योगी परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय कलापूर्ण सूरीश्वरजी महाराज साहब के शिष्यरत्न एवं पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय तीर्थभद्र सूरीश्वरजी महाराज साहब के शिष्यरत्न पूज्य मुनिराज श्री तीर्थपूर्ण विजयजी महाराज साहब, पूज्य मुनिराज श्री तीर्थसुंदर विजयजी महाराज साहब आदि ठाणा तथा पूज्य साध्वीजी श्री पूर्णयशाश्रीजी महाराज साहब आदि ठाणा का मंगल आगमन हुआ।

पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंत सिकंदराबाद से लगभग 10 किलोमीटर पैदल विहार कर प्रातः गोशामहल पधारे। श्री पार्श्व भैरव मंडल के सदस्यों ने बैंड-बाजों के साथ उनका भव्य स्वागत किया। महिलाओं ने अक्षत की गहुली कर कलश द्वारा तीन प्रदक्षिणा देकर स्वागत सामेय्या किया। स्वागत के पश्चात साधु-साध्वीजी भगवंतों ने संघ में पधारकर भगवान श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर में दर्शन किए। दर्शन के बाद उपाश्रय में पहुंचकर श्रद्धालुओं ने गुरुवंदन किया तथा मंगलाचरण का श्रवण किया। इसके पश्चात प्रातः लगभग 9:30 बजे प्रवचन सभा का शुभारंभ हुआ।

प्रवचन के दौरान पूज्य मुनिराज श्री तीर्थपूर्ण विजयजी महाराज साहब ने कहा कि आत्मा के कल्याण के लिए परमात्मा द्वारा बताए गए सभी अनुष्ठानों एवं धार्मिक क्रियाओं के प्रति श्रद्धा रखना आवश्यक है। श्रद्धा से की गई साधना और क्रिया से ही पापकर्मों का नाश होता है तथा आत्मा उत्त-रोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होती है।

उन्होंने कहा कि पूजा, साधना, समता साधना एवं सामायिक में एकाग्रता और उपयोग अत्यंत आवश्यक है। निरंतर धार्मिक क्रियाओं के अभ्यास से शुभ भावनाएं स्वतः प्रकट होती हैं तथा कर्मों का क्षय होकर आत्मा का उत्थान होता है।मुनिराज श्री ने जानकारी देते हुए बताया कि 22वें तीर्थंकर भगवान श्री नेमिनाथ की प्रतिमा कल हैदराबाद पधार रही है। उनके दर्शन एवं चल प्रतिष्ठा महोत्सव में उपस्थित रहने के लिए करनूल की ओर प्रस्तावित विहार को एक दिन आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया है।

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थसुंदर विजयजी महाराज साहब ने अपने प्रवचन में भगवान श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तथा आचार्य श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी महाराज साहब की भक्ति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गुरु भगवंत समस्याओं से घिरे व्यक्तियों को भगवान शंखेश्वर पार्श्वनाथ की आराधना तथा लगातार तीन दिन तक 120 नवकार वाली के जाप की प्रेरणा देते थे।

उन्होंने बताया कि अट्ठम तप एवं जाप के साथ तीन दिन की आराधना तथा गुजरात स्थित श्री शंखेश्वर तीर्थ में रहकर भक्ति करने से अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान होता है। उन्होंने संघ द्वारा निर्मित हो रहे शंखेश्वर तीर्थ स्वरूप मंदिर एवं विशाल उपाश्रय संकुल की भी सराहना की। श्री जैन संस्कार वाटिका द्वारा निर्माणाधीन संस्कार उपवन में प्रतिष्ठित होने वाले 22वें तीर्थंकर भगवान श्री नेमिनाथ की अंजनशलाका छह आचार्य भगवंतों की निश्रा में अहमदाबाद में संपन्न कराई गई है। इस अवसर पर कल श्री गिरनार प्राइड में आयोजित चल प्रतिष्ठा महोत्सव में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित रहने का आग्रह किया गया।

वक्ताओं ने कहा कि एक ओर गोशामहल में शंखेश्वर तीर्थ स्वरूप मंदिर और दूसरी ओर संस्कार वाटिका का संस्कार उपवन, जो गिरनार तीर्थ की अनुभूति कराएगा, श्रद्धालुओं को प्रतिदिन दोनों तीर्थों के दर्शन-पूजन का लाभ प्रदान करेगा।

संघ की ओर से मुकेशभाई चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि आगामी 15 जुलाई को संघ में साधु-साध्वीजी भगवंतों का वर्ष 2026 का चातुर्मास प्रवेश होगा। वहीं श्री जैन संस्कार वाटिका के प्रवीण बंदामुथा ने श्री गिरनार प्राइड, विमलाचल हाइट्स के सामने, अरिहंत गली (सीना बकरी गली) में आयोजित होने वाले चल प्रतिष्ठा कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए सकल संघ को पधारने का निवेदन किया।

इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष चंपालाल भंडारी, सहमंत्री जितेंद्र मरडिया, ट्रस्टी कांतिलाल भंडारी, मोहनलाल मुणोत, घेवरचंद बंदामुथा, बाबूलाल सालेचा, प्रवीण मरडिया, चंपालाल सालेचा, नरसिंहमल कंकूचोपड़ा, किशनलाल लुंकड़, बाबूलाल सोलंकी, बाबूलाल भंडारी, जयंतीलाल कांकरीया, संजय वाणीगोता, पुखराज बालड, पारसमल चौहान, दिनेश छत्रगोता, वर्धमान चौहान, अविनाश बालड सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थीं।

गौमाताओं की सेवा में समर्पित हुआ मातृशक्ति का योगदान

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। गौसेवा एवं धार्मिक कार्यों के प्रति अपनी अटूट आस्था और समर्पण का परिचय देते हुए सिरवी समाज संगारेड्डी के महिला मंडल एवं इलेक्ट्रिकल्स व हार्डवेयर ग्रुप की मातृशक्तियों ने सदाशिवपेट स्थित श्री गोपाल गौशाला ट्रस्ट को एक ट्रैक्टर दान करने की घोषणा की है।

श्री गोपाल गौशाला सदाशिवपेट ट्रस्ट एवं सिरवी समाज संगारेड्डी बडेर के सचिव श्री पिताराम चोयल ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि महिला मंडल की सचिव श्रीमती लीला परिहार, पूर्व सचिव श्रीमती पोकरीदेवी सोलंकी, श्रीमती पोनीदेवी गहलोत, श्रीमती नेनुदेवी राठौड़ तथा श्रीमती संगीता काग के सान्निध्य में महिला मंडल की सदस्यों ने भजन-कीर्तन एवं विभिन्न धार्मिक आयोजनों के माध्यम से राशि एकत्रित की।

एकत्रित राशि एवं सामूहिक सहयोग के आधार पर गौमाताओं की सेवा और गौशाला के कार्यों को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से श्री गोपाल गौशाला ट्रस्ट को ट्रैक्टर उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर उपस्थित मातृशक्तियों ने गौमाताओं का आशीर्वाद प्राप्त कर भविष्य में भी धार्मिक एवं सेवा कार्यों से जुड़कर गौ संरक्षण और संवर्धन के लिए निरंतर योगदान देने का संकल्प व्यक्त किया।

कार्यक्रम में ललिता पंवार, पिस्ता सोयल, ममता भायल, रेखा गहलोत, विमला सिंदरा, विद्या परिहारिया, मंजू परिहार, उमा राठौड़, नीतू राठौड़, सीमा परिहार, अनिता परिहार, ममता हाम्बड़, संगीता लचेटा, प्यारी सोयल, पिस्ता हाम्बड़ सहित अनेक मातृशक्तियां उपस्थित थीं।

श्री गोपाल गौशाला सदाशिवपेट ट्रस्ट ने इस पुनीत कार्य के लिए महिला मंडल की सभी मातृशक्तियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। ट्रस्ट पदाधिकारियों ने कहा कि समाज की महिलाओं द्वारा सेवा, संस्कार और समर्पण की यह प्रेरणादायी पहल न केवल गौशाला के लिए बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है।

ट्रस्ट ने सभी सहयोगी बहनों एवं उनके परिवारों के सुख, समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करते हुए उनके इस योगदान की सराहना की।

मील ऑफ काइंडनेस के तहत 50 जरूरतमंदों को भोजन वितरित

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। तेरापंथ किशोर मंडल, हैदराबाद ने 21 जून (रविवार) को गांधी अस्पताल के निकट 'मील ऑफ काइंडनेस' कार्यक्रम आयोजित किया। सेवा अभियान के तहत जरूरतमंदों को करीब 50 भोजन प्लेटें बांटी गईं।

कार्यक्रम में पूर्व संयोजक ऋषभ चिंडालिया, ब्लू ब्रिगेड सदस्य कृष्णा दुगार, सह-संयोजक रुद्र बैद व रोनक मेहर, हिमांशु दुगार और मंडल की टीम ने भाग लिया।

इसका उद्देश्य मानव सेवा, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना था। कार्यकर्ताओं के सहयोग से अभियान सफल रहा। तेरापंथ किशोर मंडल समाज सेवा के कार्यों के लिए प्रतिबद्ध है।

कार्टून कॉर्नर

श्री अक्कन्ना मादन्ना महाकाली मंदिर की नई प्रबंधन समिति का निर्विरोध चयन
भव्य बोनालू जतरा 2026 की तैयारियों की कमान संभाली

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो): ऐतिहासिक श्री अक्कन्ना मादन्ना महाकाली मंदिर की आम सभा की बैठक 21 जून, 2026 को सफलतापूर्वक आयोजित की गई। इस बैठक में मंदिर समिति ने सर्वसम्मति से वर्ष 2026 के लिए नई प्रबंधन समिति का चुनाव किया है। नवनिर्वाचित मंदिर समिति आगामी 'बोनालू जतरा 2026' के उत्सव को भव्य और सफल बनाने के लिए पूरी देखरेख और प्रबंधन की जिम्मेदारी संभालेगी। सर्वसम्मति से चुनी गई इस नई समिति में अनुभवी और सक्रिय सदस्यों को विभिन्न महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी दी गई है, जो इस प्रकार है: अध्यक्ष : श्री देवराशेट्टी प्रभाकर, संरक्षक : श्री गोपीशेट्टी निरंजन, सचिव : श्री कतकम दत्तात्रेय, कोषाध्यक्ष : श्री आदला सतीश कुमार, संगठन सचिव : श्री एस.पी. क्रांति कुमार, सलाहकार : श्री डॉ. ए. भरत प्रकाश, श्री जी. राजरत्नम, श्री रामदेव अग्रवाल शामिल हैं।

उपाध्यक्ष, संयुक्त सचिव और कार्यकारिणी टीम की घोषणा

उत्सव के सुचारू संचालन और व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के लिए उपाध्यक्ष, संयुक्त सचिव और कार्यकारी सदस्यों की भी घोषणा की गई है: उपाध्यक्ष : श्री जगमोहन परशाद कपूर, श्री एम. कृष्णा, श्री मादसु विनोद कुमार।

संयुक्त सचिव : श्री मादसु विजय कुमार, श्री जी. श्रीनिवास, श्री जोगेंद्र सिंह, श्री टी. रमेश बाबू। कार्यकारी सदस्य : श्री जल्ली राजू, श्री ए. गोपाल, श्री बसवा राजू (इलेक्ट्रिक), श्री लोकेश कुमार सुगंधी, श्री एम. मुकेश यादव, श्री आर. अशोक रेड्डी, श्री राम सिंह ठाकुर, श्री चेतन कुमार सूरी, श्री वी. पवन कुमार, श्री वी. राकेश।

सदस्य : श्री जी. दिनेश, श्री जी. राघवेंद्र, श्री रविंदर चारी, श्री पी. राजेश, श्री पी. साई किरण, के. पवन, श्री पी. दुर्गा प्रसाद, श्री साहिल अग्रवाल, श्री जे. श्रीकांत, श्री पी. शेखर यादव, श्री शन्मुख शंकर, श्री पी. विशाल।

नवनिर्वाचित समिति ने संकल्प लिया है कि इस वर्ष की बोनालू जतरा को हर वर्ष की तरह अत्यंत श्रद्धा, हर्षोल्लास और भव्यता के साथ संपन्न कराया जाएगा और भक्तों की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जाएगा।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

ट्रस्ट का...

राम जन्मभूमि मामले में याचिकाकर्ताओं का तर्क है कि मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं बल्कि राष्ट्रीय महत्व की संस्था है। याचिका में कहा गया है कि, मंदिर को देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालुओं का दान मिलता है। मंदिर का निर्माण और संचालन व्यापक सार्वजनिक भागीदारी से जुड़ा है। वित्तीय अनियमितताओं के आरोप करोड़ों श्रद्धालुओं के विश्वास को प्रभावित कर सकते हैं। याचिकाकर्ताओं का कहना है कि ऐसी स्थिति में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच जरूरी है। हालांकि जब मामले का जिक्र इलाहाबाद हाईकोर्ट में किया गया तो अदालत ने तत्काल सुनवाई से इनकार कर दिया। अदालत ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार पहले ही एसआईटी जांच का आदेश दे चुकी है।

कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि केवल

जनहित का तर्क सीएजी ऑडिट के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। कानूनी फर्म सराफ एंड पार्टनर्स के पार्टनर गौहर मिर्जा के अनुसार, सीएजी की शक्तियां व्यापक जरूर हैं लेकिन असीमित नहीं। उनका कहना है कि सुप्रीम कोर्ट के बीएसईएस फैसले से यह स्पष्ट है कि सीएजी सार्वजनिक धन या सरकारी सब्सिडी के उपयोग की जांच कर सकता है, लेकिन इससे उसे किसी निजी संस्था के पूरे कामकाज की जांच करने का सामान्य अधिकार नहीं मिल जाता। मिर्जा के अनुसार, राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट जैसी संस्था का ऑडिट तभी संभव होगा जब वह धारा 20 के तहत निर्धारित कानूनी मानदंडों को पूरा करे। उन्होंने कहा कि यदि किसी संस्था में सरकारी स्वामित्व, पर्याप्त सरकारी वित्तपोषण या धारा 20 के तहत विशेष आदेश नहीं है, तो केवल सार्वजनिक महत्व के आधार पर सीएजी उसका ऑडिट नहीं कर सकता।

वरिष्ठ अधिवक्ता आमिर खान वली का मानना है कि राम मंदिर का मामला कानूनी रूप से और भी जटिल है। उनके अनुसार, अक्सर जनहित शब्द को गलत तरीके से समझा जाता है। सीएजी कोई ऐसा सार्वभौमिक निगरानी संस्थान नहीं है जो हर महत्वपूर्ण संस्था का ऑडिट कर सके। वह कहते हैं कि असली सवाल यह है कि ट्रस्ट पर सीएजी के अधिकार क्षेत्र का कानूनी आधार क्या होगा?

क्या राम जन्मभूमि ट्रस्ट सीएजी के सामान्य दायरे में आता है?

वर्तमान स्थिति में श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट कई कारणों से सीएजी के पारंपरिक अधिकार क्षेत्र से बाहर दिखाई देता है। क्योंकि यह ट्रस्ट कोई सरकारी विभाग नहीं है, कोई सरकारी कंपनी नहीं है, कोई वैधानिक निगम नहीं है, संसद द्वारा बनाए गए कानून से स्थापित संस्था नहीं है और इसे बड़े पैमाने पर सरकारी अनुदान नहीं मिलता।

हालांकि ट्रस्ट का गठन सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के बाद केंद्र सरकार द्वारा किया गया था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह स्वतः सरकारी संस्था बन गया। यही वजह है कि कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि केवल मंदिर की लोकप्रियता या राष्ट्रीय महत्व सीएजी ऑडिट का पर्याप्त आधार नहीं बन सकता।

क्या पहले भी मंदिरों का ऑडिट हुआ है?

भारत में मंदिरों के ऑडिट के उदाहरण मौजूद हैं, लेकिन उनकी परिस्थितियां अलग थीं। जैसे पद्मनाभस्वामी मंदिर...

केरल के प्रसिद्ध पद्मनाभस्वामी मंदिर में संपत्ति और खजाने की जांच सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर हुई थी। यह ऑडिट सीएजी ने नहीं किया था, बल्कि अदालत द्वारा नियुक्त स्वतंत्र विशेषज्ञों और ऑडिटरों की टीम ने किया था। यह कार्रवाई सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के आर्टिकल 142 के तहत अपने विशेष अधिकारों का उपयोग करते हुए कराई थी।

सबरीमाला मंदिर: सबरीमाला मंदिर का मामला अलग है। इसका प्रबंधन त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड करता है, जो राज्य कानून के तहत गठित संस्था है और सरकारी निगरानी में काम करती है। यही कारण है कि देवस्वम बोर्ड सीएजी के अधिकार क्षेत्र में आता है और उसके खातों का ऑडिट किया जा सकता है।

आगे क्या हो सकता है?

फिलहाल राम मंदिर दान विवाद की जांच एसआईटी कर रही है। लेकिन यदि याचिकाकर्ता सीएजी ऑडिट की मांग को आगे बढ़ाते हैं तो अदालतों को यह तय करना होगा कि क्या राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को धारा 20 के तहत ''जनहित'' के आधार पर ऑडिट के दायरे में लाया जा सकता है। यह मामला केवल राम मंदिर तक सीमित नहीं है। अदालत का फैसला भविष्य में देश की अन्य बड़ी धार्मिक और चैरिटेबल संस्थाओं पर भी असर डाल सकता है। यानी बहस सिर्फ इतनी नहीं है कि राम मंदिर ट्रस्ट का ऑडिट होना चाहिए या नहीं, बल्कि यह भी है कि भारत में सार्वजनिक महत्व रखने वाली निजी या धार्मिक संस्थाओं की वित्तीय जवाबदेही की सीमा आखिर क्या होनी चाहिए?

सिया गोयल...

इसके बाद 19 जून को सिया ने दोबारा ट्रेकिंग का प्लान बनाया और केतन को किले से नीचे धक्का दे दिया गया। चेतन से पूछताछ के बाद सिया गिरफ्तार हुई। शक के आधार पर स्थानीय क्राइम ब्रांच ने चेतन को हिरासत में लिया। उससे पूछताछ के बाद सिया गोयल को भी गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने बताया कि केतन के पिता विशाल अग्रवाल की शिकायत पर मंगलवार को हत्या और आपराधिक साजिश का मामला दर्ज किया गया। पुलिस अब घटनाक्रम की पूरी कड़ी जोड़ने, फोरेंसिक साक्ष्य जुटाने और यह पता लगाने में जुटी है कि साजिश में कोई और भी शामिल था या नहीं। लोहागढ़ किला मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज के इतिहास से जुड़ा हुआ है। यह महाराष्ट्र के 12 यूनेस्को विश्व धरोहर किलों में शामिल है।

केतन के माता-पिता ने फांसी देने की मांग की

केतन के पिता ने कहा- मेरी सरकार से अपील है कि इस केस को फास्ट-ट्रैक किया जाए। आरोपियों को जल्द से जल्द सजा दी जाए। उन्हें सबसे सख्त सजा मिलनी चाहिए ताकि सबको बड़ा मैसेज जाए।

केतन की मां ने कहा- मेरे बेटे की मौत के लिए सिया और उसका बॉयफ्रेंड जिम्मेदार हैं। सिया ने मुझे धोखा दिया और झूठ बोला। मैं सिया, उसके बॉयफ्रेंड, उसके माता-पिता और बुआ-फूफा के लिए मौत की सजा की मांग करती हूं।

प्री-बर्थडे सेलिब्रेट करने किले पर गए थे, पुलिस के 5 खुलासे

* पुणे ग्रामीण पुलिस के एसपी संदीप सिंह गिल के अनुसार, केतन 18 जून की सुबह अपनी मंगेतर के साथ उसका प्री-बर्थडे सेलिब्रेट करने के लिए लोहागढ़ किले पर गए थे। सुबह करीब 10:30 बजे वे खाई में गिरे।
* स्थानीय लोगों, पुलिस और रेस्क्यू टीम ने उसी दिन केतन का शव बरामद कर लिया था। शुरुआत में पुलिस ने बताया था कि केतन लोहागढ़ किले पर तेज हवा के बीच फोटो खींचते समय खाई में गिर गए।
* मंगेतर सिया ने बताया था कि केतन का पैर फिसल गया और वह खाई में गिर गए। उसके बयान के आधार पर पुलिस ने आकस्मिक मौत का मामला दर्ज किया था। हालांकि, मौत की परिस्थितियां संदिग्ध लग रही थीं।
* फोन रिकॉर्ड्स और सोशल मीडिया एक्टिविटी से पता चला कि सिया पुणे के कोंढवा निवासी चेतन चौधरी के साथ रिलेशनशिप में है। सिया, केतन से शादी नहीं करना चाहती थी और उसे लगता था कि केतन उसकी और चेतन की रुकावट बन गया है।
* इसलिए दोनों ने मिलकर उसकी हत्या की साजिश रची। प्लानिंग के तहत सिया, केतन को घूमने के बहाने लोहागढ़ किले पर ले गई। पीछे से चेतन भी पहुंचा। दोनों ने केतन को किले से नीचे धक्का दे दिया।

लोहागढ़ किला पुणे से 65 किलोमीटर दूर लोनावल के पास 3400 फीट ऊंचाई पर स्थित है। शिवाजी महाराज ने 1648 में इस पर कब्जा किया था। माना जाता है कि किले का निर्माण लगभग 11वीं-12वीं शताब्दी में हुआ था। यह किला ट्रेकर्स की पसंदीदा जगह है। यहां गहरी खाइयां और ढलान हैं। ट्रेकिंग मार्ग पर कई जगह सुरक्षा रेलिंग नहीं है, जिससे बारिश और तेज हवा के दौरान हादसे का खतरा बढ़ जाता है।

केतन की तरह ही इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की मेघालय में हनीमून के दौरान हत्या कर दी गई थी। पुलिस जांच में आरोप लगा कि उनकी पत्नी सोनम रघुवंशी ने अपने प्रेमी राज कुशवाह और अन्य साथियों के साथ मिलकर हत्या की साजिश रची। दोनों 11 मई 2025 को शादी के बाद हनीमून के लिए मेघालय गए थे, जहां 23 मई को राजा लापता हो गए। 2 जून को उनका शव एक गहरी खाई में मिला। जांच के बाद पुलिस ने सोनम, उसके प्रेमी और अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया।

मुगल-पठान...

भगिनी निवेदिता के अलावा किसी अन्य विदेशी के नाम पर गली का नाम रखने के बारे में आपको सोचना पड़ेगा। सरकार के फैसले से जब नेता प्रतिपक्ष ऋतब्रत बनर्जी ने आपत्ति जताई तो सीएम शुभेंदु ने कहा कि आप हमारी बंगाली संस्कृति और परंपरा को मिटा नहीं सकते। आपका भाषण पश्चिम बंगाल के किसी पार्टी नेता जैसा नहीं था, बल्कि एक कम्युनिस्ट जैसा था। मैं आपसे कोई सलाह नहीं लूंगा।गौरतलब है कि डेढ़ महीने के भीतर ही कोलकाता के पार्क सर्कस स्थित सेवन पॉइंट्स से डॉन बॉस्को सर्कल तक जाने वाली 500 मीटर लंबी सड़क, जिसे सुहरावर्दी एवेन्यू के नाम से जाना जाता था, का नाम बदल दिया गया है।

36 के 36...

रक्षा सूत्रों का कहना है कि मेंटेनेंस और सपोर्ट कॉन्ट्रैक्ट आम तौर पर ऑपरेटर के पास मौजूद असल इन्वेंट्री पर आधारित होते हैं। 36 विमानों के पूरे बेड़े का बार-बार जिक्र होने से राफेल के नुकसान के बारे में पाकिस्तान के दावों पर और सवाल उठते हैं। पाकिस्तान ने यह झूठा दावा भी किया था कि उसने भारत की एक महिला पायलट को पकड़ लिया है। भारतीय वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने पहले ही पाकिस्तान के इन दावों को मनोहर कहानियां करार दिया था।

भारतीय वायुसेना के राफेल बेड़े के लिए यह सपोर्ट टेंडर का प्रस्ताव सैफ्रान एयरक्राफ्ट इंजन को भेजा गया है, जो राफेल के एम88 इंजन बनाने वाली मूल कंपनी है। यह तरीका आमतौर पर तब अपनाया जाता है जब केवल मूल उपकरण निर्माता ही खास तकनिकी सहायता, स्पेयर पार्ट्स या सेवाएं दे सकता है।

भारत ने फ्रांस के साथ 2016 के समझौते के तहत अपने 36 राफेल लड़ाकू विमान शामिल किए थे; ये विमान अभी भारतीय वायुसेना के नंबर 17 स्काड्रन गोल्डन एरोज़ और नंबर 101 स्काड्रन में तैनात हैं।

सभ्यतागत ...

पाकिस्तान लगातार सिंधु घाटी सभ्यता और अपनी इस्लाम-पूर्व विरासत का हवाला देकर सिंधु की विरासत के मुख्य उत्तराधिकारी के तौर पर अपने दावे को मज़बूत कर रहा है, और वह सिंधु घाटी की कहानी का इस्तेमाल भारत को चुनौती देने और सिंधु नदी प्रणाली के पानी पर अपने दावों को मज़बूत करने के लिए कर रहा है।

इस बीच बिलावल भुट्टो और रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ जैसे पाकिस्तानी नेताओं ने भारत पर ज़ुबानी हमले तेज़ कर दिए हैं। वे अक्सर सिंधु जल संधि को रोके रखने के भारत के फ़ैसले को लेकर नई दिल्ली को युद्ध की धमकी देते रहे हैं। हाल फिलहाल ही में पाकिस्तान ने इस्लाम-पूर्व काल की तक्षशिला, गांधार और सिंधु घाटी की विरासत को अपनाना शुरू किया है। सिंधु घाटी सभ्यता के मोहनजोदड़ो के अलावा, पाकिस्तान ने हाल ही में अपने इस्लाम-पूर्व अतीत की विरासत वाली जगहों पर भी दावा करना शुरू किया है। पाकिस्तान के लिए यह एक अहम बदलाव है, क्योंकि अब तक उसके इतिहास में मुख्य रूप से मुहम्मद बिन कासिम की जीत पर ही ज़ोर दिया जाता रहा है। साथ ही, सरकार समर्थित डॉक्यूमेंट्री, सेमिनार और अंतरराष्ट्रीय आउटरीच प्रोग्राम सिंधु घाटी सभ्यता को पाकिस्तान की पहचान के एक अहम हिस्से के तौर पर पेश कर रहे हैं।

प्राचीन तक्षशिला को टूरिज्म कैंपेन, म्यूज़ियम से जुड़ी पहलों और हेरिटेज प्रोग्राम के ज़रिए ज़ोर-शोर से प्रमोट किया गया है। यह जगह भारत के शुरुआती महाविहारों में से एक का घर है और यहां अकैमेनिड, मौर्य, इंडो-ग्रीक और कुषाण काल की धरोहर हैं। यह अपनी वैदिक, बौद्ध और ग्रीको-बौद्ध परंपराओं के लिए जानी जाती है।

इसी तरह गांधार की बौद्ध विरासत और बलूचिस्तान में नवपाषाण युग के स्थल मेहरगढ़ को उन कहानियों में शामिल किया गया है जो पाकिस्तान को हजारों साल पुरानी, बिना किसी रुकावट के चली आ रही सभ्यता की विरासत का उत्तराधिकारी बताती हैं।यह तमाशा इतना बढ़ गया है कि कुछ पाकिस्तानी अब दावा करते हैं कि पाकिस्तान ही असली और एकमात्र सच्चा भारत है। एक्स पर अपनी बायो में इस व्यक्ति ने लिखा, महान सिंधु नदी के इतिहास को फिर से अपनाना है।

कोचिंग संस्थानों...

नोटिस में स्पष्ट चेतावनी दी गई है कि बिना अनुमति सील तोड़ने या दोबारा कोचिंग संचालन शुरू करने की स्थिति में संबंधित लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई जाएगी। जोनल अधिकारी गंगेश कुमार सिंह के अनुसार, जिस भवन में खान ग्लोबल क्लासेज का संचालन किया जा रहा था, उसका नक्शा कमर्शियल उपयोग के लिए स्वीकृत था। जबकि कोचिंग संस्थान का संचालन कम्युनिटी सर्विस श्रेणी में आता है। संबंधित भवन के लिए सामुदायिक सुविधा भू-उपयोग की स्वीकृति नहीं ली गई थी। इसी वजह से यह कार्रवाई की गई।

पीडीए अधिकारियों का कहना है कि नियमों और निर्धारित मानकों का पालन सुनिश्चित करने के लिए जांच अभियान जारी रहेगा। इस कार्रवाई के बाद प्रयागराज के कोचिंग संचालकों में हड़कंप मच गया है। लखनऊ अग्निकांड के बाद प्रदेशभर में सुरक्षा मानकों और भवन उपयोग से जुड़े नियमों की जांच की जा रही है। इसी अभियान के तहत प्रयागराज में यह कार्रवाई की गई है। फिलहाल पीडीए ने कोचिंग संस्थान को सील कर आगे की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

निज़ामाबाद में ...

जांच एजेंसी ने मंगलवार को आबकारी अधिकारी के निजी आवास सहित उनके रिश्तेदारों, बेनामीदारों और करीबियों से जुड़े 10 अन्य परिसरों पर एक साथ छापेमारी की। इस दौरान एसीबी की टीमों ने पांच बड़े ढांचों की पहचान की, जिनमें चार आवासीय मकान और एक कमर्शियल ब्लॉक (व्यावसायिक भवन) शामिल हैं। इसके अलावा, जांचकर्ताओं को आठ खुले प्लॉट और 10.23 एकड़ कृषि भूमि से जुड़े दस्तावेज भी मिले हैं।

छापेमारी के दौरान तलाशी दल को लगभग 3.31 लाख रुपये की नकद राशि और विभिन्न बैंक खातों में करीब 50 लाख रुपये का बैंक बैलेंस मिला है। इसके साथ ही, अधिकारी की पत्नी और परिवार के अन्य सदस्यों के नाम पर मौजूद तीन बैंक लॉकरों का भी पता चला है। इन लॉकरों को अभी तक खोला नहीं गया है, आगामी जांच के तहत इनकी गहन तलाशी ली जाएगी।

BOOK YOUR DISPLAY CLASSIFIED ADVERTISEMENTS AT
Timings : 9 am to 7 pm
Head office
SHREE SIDDIVINAYAK PUBLICATIONS,
Plot No. A-23/5 & 6 2nd Floor,
APIE, Balanagar, Hyderabad - 500 037
City office
SHREE SIDDIVINAYAK PUBLICATIONS,
Plot No. A-23/5 & 6 2nd Floor,
APIE, Balanagar,
Hyderabad - 500 037
8688868345

शुभ लाभ
म्हारो भाग्यनगर
दैनिक हिन्दी शुभ लाभ, हैदराबाद, बुधवार, 24 जून, 2026

शुभ लाभ
आपकी सेवा में
शुभ लाभ से जुड़ी किसी भी समस्या या सुझाव के लिए मो. 86888 68345 पर संपर्क करें।

विधायक टी. राजा सिंह ने केंद्रीय मंत्री को लिखा पत्र

सिंगरेनी से 40 लाख मीट्रिक टन कोयला गायब होने के मामले में सीबीआई जांच की मांग

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)।

गोशामहल के विधायक टी. राजा सिंह ने केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी को एक आधिकारिक पत्र लिखकर सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एससीसीएल) से लगभग 40 लाख मीट्रिक टन कोयला गायब होने के गंभीर आरोपों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। उन्होंने इस पूरे मामले की केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) से स्वतंत्र जांच कराने की पुरजोर मांग की है। केंद्रीय मंत्री को सौंपे गए इस पत्र में विधायक ने गायब हुए कोयले की अनुमानित कीमत लगभग 1,600 करोड़ रुपये बताई है और इसके लिए तेलंगाना सरकार की जवाबदेही तय करने का आग्रह किया है।

विधायक राजा सिंह ने अपने पत्र में रेखांकित किया कि सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एससीसीएल) में तेलंगाना सरकार की 51% हिस्सेदारी है। बहुमत शेयरधारक होने के नाते, सार्वजनिक संसाधनों की सुरक्षा, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने की प्राथमिक जिम्मेदारी पूरी तरह से राज्य सरकार की है। इतनी भारी मात्रा में कोयले का विसंगत होना प्रशासनिक लापरवाही और शासन-निगरानी के स्तर पर एक बहुत बड़ी विफलता की ओर इशारा करता है।

उन्होंने पत्र में लिखा कि आज तेलंगाना की जनता और सिंगरेनी के कर्मचारी कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण सवाल पूछ रहे हैं:

-आखिर इतनी बड़ी मात्रा में कोयला बिना किसी रिकॉर्ड या हिसाब-किताब के कैसे गायब हो गया?

-इसके लिए कौन लोग जिम्मेदार हैं?

-क्या इस मामले में शामिल दोषियों को बचाने या जनता के सामने सच आने से रोकने और देरी करने के प्रयास किए जा रहे हैं?

पत्र के माध्यम से विधायक ने स्पष्ट किया कि राज्य सरकार पर जनता को एक स्पष्ट जवाब देने का कर्ज है।

सिंगरेनी के समर्पित कर्मचारियों और तेलंगाना के करदाताओं को यह जानने का पूरा अधिकार है कि इतने विशाल मूल्य का एक सार्वजनिक संसाधन बिना किसी जवाबदेही के कैसे गायब हो सकता है।

टी. राजा सिंह ने पत्र में लिखा कि चूंकि इस तरह के बड़े मामले में राज्य स्तरीय जांच पर जनता का भरोसा बेहद सीमित है, इसलिए मैं भारत सरकार से सम्मानपूर्वक आग्रह करता हूं कि इस पूरे प्रकरण की एक स्वतंत्र सीबीआई जांच के आदेश दिए जाएं। यह जांच उन सभी जिम्मेदार व्यक्तियों की पहचान करे, चाहे वे कंपनी के अधिकारी हों, लोक सेवक हों, ठेकेदार हों या इस मामले से जुड़ा कोई भी अन्य व्यक्ति हो।

राजा सिंह ने अंत में जोर देकर कहा कि इस बेहद संवेदनशील और गंभीर मुद्दे को केवल राजनीतिक बयानों और आरोप-प्रत्यारोपों तक ही सीमित नहीं किया जाना चाहिए।

एक निष्पक्ष जांच के माध्यम से सच्चाई को स्थापित करना अनिवार्य है, और जो कोई भी कानून के तहत दोषी पाया जाए, उसे न्याय के कटघरे में खड़ा कर सजा दी जानी चाहिए।

भगवान शिव और आदि शक्ति की आराधना का पर्व है महेश नवमी : महेश अग्रवाल

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)।

राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में महेश नवमी के पावन उपलक्ष्य में बेगम बाजार स्थित भू देवी माता मंदिर के पास गौशाला के सामने नियमित अन्नदान कार्यक्रम का भव्य एवं श्रद्धापूर्ण आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं, समाजसेवियों एवं ग्रुप के सदस्यों ने सहभागिता निभाते हुए जरूरतमंदों को भोजन वितरित किया तथा सेवा और समर्पण का संदेश दिया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए महेश अग्रवाल ने कहा कि महेश नवमी केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि समाज को सेवा, संस्कार, संगठन और आध्यात्मिक चेतना का संदेश देने वाला प्रेरणादायी उत्सव है। यह दिवस भगवान शिव की कृपा, तप, त्याग और लोककल्याण की भावना को स्मरण कराने का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि भगवान शिव को देवों के देव महादेव कहा जाता है और उनका जीवन हमें विनम्रता, करुणा तथा मानव कल्याण के लिए समर्पित रहने की प्रेरणा देता है।

महेश अग्रवाल ने कहा कि राधारानी आदि शक्ति का दिव्य स्वरूप हैं। जिस प्रकार माता पार्वती भगवान शिव की शक्ति हैं, उसी प्रकार राधारानी प्रेम, भक्ति और करुणा की अधिष्ठात्री हैं। सनातन संस्कृति में शक्ति और शिव एक-दूसरे के पूरक माने गए हैं। बिना शक्ति के शिव अधूरे हैं और बिना शिव के शक्ति का अस्तित्व नहीं है। महेश नवमी का पर्व इसी दिव्य एकत्व की अनुभूति कराता है तथा समाज को धर्म और संस्कृति के प्रति जागरूक बनाता है।

उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में समाज को सेवा और संस्कारों की सबसे अधिक आवश्यकता है। जब व्यक्ति अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के लिए कार्य करता है, तभी सच्चे अर्थों में धर्म का पालन होता है। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद पिछले कई वर्षों से अन्नदान, गौसेवा, जरूरतमंदों की सहायता एवं विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से सेवा कार्यों को निरंतर आगे बढ़ा रहा है। महेश नवमी के अवसर पर आयोजित यह अन्नदान कार्यक्रम भी उसी सेवा भावना का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सदस्यों ने भगवान शिव एवं राधारानी का स्मरण करते हुए समाज में प्रेम, भाईचारा और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर महेश अग्रवाल, पन्नालाल अग्रवाल, अनिल धरशुवाले, शर्मिला अग्रवाल, दीपचंद अग्रवाल, जगन गुप्ता, नीलम विजयवर्गीय, शशि गुप्ता, अनय गुप्ता, सौरभ गुप्ता एवं सरोज देवी सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे और सेवा कार्य में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम का समापन सभी के सुख, समृद्धि एवं समाज के कल्याण की मंगलकामनाओं के साथ हुआ।

दक्षिण मध्य रेलवे में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित

महाप्रबंधक ने राजभाषा के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने पर दिया जोर

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)।

दक्षिण मध्य रेलवे मुख्यालय में मंगलवार को महाप्रबंधक श्री संजय कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में अपर महाप्रबंधक श्री सत्यप्रकाश, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक श्री राजेश पी. खाडे, सभी प्रधान विभागाध्यक्ष तथा संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। वहीं विभिन्न मंडलों एवं कारखानों के प्रतिनिधियों ने ऑनलाइन माध्यम से सहभागिता की।

केंद्र सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन का आह्वान

बैठक को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक श्री संजय कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि दक्षिण मध्य रेलवे में राजभाषा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य हो रहा है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार का राजभाषा विभाग हिंदी के प्रयोग एवं प्रसार को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। ऐसे में केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

अपर महाप्रबंधक श्री सत्यप्रकाश ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षणों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा संबंधी कार्यों को प्रभावी ढंग से संचालित करने का आग्रह किया।

बैठक के प्रारंभ में मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक श्री राजेश पी. खाडे ने अध्यक्ष एवं सभी सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि दक्षिण तट रेलवे के गठन के बाद दक्षिण मध्य रेलवे की यह पहली क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक है। उन्होंने कहा कि रेलवे मुख्यालय, मंडलों एवं कारखानों में हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जा रहा है।

उप महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री एम.के. नागराजु ने पिछली तिमाही की राजभाषा प्रगति रिपोर्ट के विभिन्न बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की तथा इस दौरान किए गए विशेष कार्यों की जानकारी दी।

मंडलों एवं कारखानों के प्रतिनिधियों ने भी अपनी-अपनी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए आगामी तिमाही की कार्ययोजना से समिति को अवगत कराया।

धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक का समापन हुआ।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर बंडारू ने दी श्रद्धांजलि

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो):

भारतीय जनसंघ के संस्थापक और प्रखर राष्ट्रवादी डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस के अवसर पर पूर्व राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने आज रामनगर में उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपना पूरा जीवन देश की एकता, राष्ट्रवाद और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया। भारत की एकता और अखंडता के लिए उनके द्वारा दिया गया सर्वोच्च बलिदान आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणा का एक अटूट स्रोत बना रहेगा।

पूर्व राज्यपाल ने इतिहास को याद करते हुए कहा कि डॉ. मुखर्जी ने राष्ट्रीय एकीकरण के लिए इस सिद्धांत के तहत लड़ाई लड़ी कि एक देश में दो संविधान, दो प्रधान और दो निशान (ध्वज) नहीं हो सकते। इस ऐतिहासिक संघर्ष के कारण उन्होंने इतिहास में एक अमिट और स्थाई स्थान प्राप्त किया है। उनका जीवन देशभक्ति, निस्वार्थ सेवा और अटूट राष्ट्रीय चेतना के आदर्शों के साथ आज भी पूरे देश को प्रेरित कर रहा है।

श्री दत्तात्रेय ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को निरस्त कर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के दशकों पुराने सपने को पूरा किया है।

उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि आज के नए भारत ने आतंकवाद का लगातार समर्थन करने वाले पाकिस्तान को करारा सबक सिखाकर राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति अपनी कड़ा रुख और अटूट प्रतिबद्धता को साबित किया है।

इस गरिमामयी श्रद्धांजलि कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कई वरिष्ठ नेताओं, पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पीआरएसआई हैदराबाद ने सेंट एन्स कॉलेज और सीबीआईटी के साथ किया समझौता, छात्रों को मिलेगा उद्योग जगत का अनुभव

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो):

पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी ऑफ इंडिया (पीआरएसआई), हैदराबाद चैप्टर ने 22 जून, 2026 को मेहदीपटनम स्थित सेंट एन्स कॉलेज फॉर विमेन और कोकापेट स्थित चैतन्य भारती इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (सीबीआईटी) के साथ अलग-अलग समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।

शिक्षा और उद्योग जगत के बीच की दूरी पाटने की पहल

इस सहयोग का मुख्य उद्देश्य अकादमिक शिक्षा और उद्योग जगत के बीच के अंतर को कम करना है। यह समझौता पीआरएसआई की राष्ट्रीय परिषद द्वारा शुरू की गई नालंदा स्टूडेंट्स फोरम पहल के तहत किया गया है। इसका उद्देश्य कॉलेज के छात्रों को जनसंपर्क (पीआर) और संचार के क्षेत्र में प्रशिक्षित करना, उनमें विभिन्न कौशल विकसित करना, उनके लिए इंटर्नशिप के अवसर पैदा करना और साथ ही सेमिनार, फील्ड विजिट और कार्यशालाएं आयोजित करना है। बता दें कि पीआरएसआई अब तक जुड़वां शहरों (हैदराबाद-सिकंदराबाद) के विभिन्न कॉलेजों के साथ कुल 13 एमओयू पर हस्ताक्षर कर चुका है।

सेंट एन्स कॉलेज में साझेदारी पर उत्साह

सेंट एन्स कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. विजया रानी ने एमओयू पर हस्ताक्षर करने के बाद इस साझेदारी को लेकर अपना उत्साह व्यक्त किया। उन्होंने कहा, पीआरएसआई शिक्षाविदों को उद्योग के साथ जोड़ सकता है और छात्रों को इंटर्नशिप प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

इस अवसर पर पीआरएसआई के चैप्टर चेयरमैन डॉ. के. वाई. गिरि, नालंदा स्टूडेंट्स फोरम के संयोजक श्री कृष्ण बाजी, पूर्व चेयरमैन लायन श्री के. गोविंद-राज, सह-संयोजिका डॉ. फातिमा रहीम, समिति के सदस्य श्री हामिद बिन सईद, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की एचओडी डॉ. भारती और संकाय सदस्य श्रीमती के. नंदिनी उपस्थित थीं। कार्यक्रम में संयोजक श्री कृष्ण बाजी ने चैप्टर की उपलब्धियों और 'नालंदा' पहल के तहत छात्र समुदाय को मिलने वाले लाभों के बारे में विस्तार से बताया। वहीं, लायन श्री के. गोविंदराज ने जनसंपर्क (पीआर) और संचार के विभिन्न पहलुओं पर प्रस्तुति देते हुए बताया कि छात्र इस क्षेत्र में अपना करियर कैसे संवार सकते हैं।

सीबीआईटी में समझौता: 'शिक्षा को उद्योग से जोड़ना' है लक्ष्य

दूसरी ओर, सीबीआईटी में कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. सी. वी. नरसिम्हुलु ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए। उन्होंने इस साझेदारी पर खुशी जताते हुए कहा, हमारा आदर्श वाक्य शिक्षा को उद्योग से जोड़ना' है और पीआरएसआई इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने में इसे संभव बना सकता है।

सीबीआईटी में आयोजित एमओयू हस्ताक्षर समारोह में पीआरएसआई फोरम की ओर से डॉ. के. वाई. गिरि, श्री कृष्ण बाजी, लायन श्री के. गोविंद-राज, डॉ. फातिमा रहीम और श्री हामिद बिन सईद उपस्थित रहे। इनके अलावा सीबीआईटी के अकादमिक निदेशक डॉ. पी. प्रभाकर रेड्डी, प्रोफेसर एवं सलाहकार डॉ. वी. बारला, निदेशक डॉ. यू. के. चौधरी और सीबीआईटी के प्रोफेसर एवं पीआरओ डॉ. जी. एन. आर. प्रसाद भी विशेष रूप से मौजूद थे।

एसबीआई की शाखा तय करेगी हैदराबाद मेट्रो रेल का भविष्य, केंद्र और तेलंगाना सरकार के बीच बनी सहमति

हैदराबाद/नई दिल्ली, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो):

हैदराबाद मेट्रो रेल (एचएमआर) परियोजना के अधिग्रहण और विस्तार के लिए केंद्र सरकार का सहयोग हासिल करने के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी के प्रयासों को मंगलवार को बड़ी सफलता मिली। दोनों पक्षों के बीच एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड (एसबीआईकैप्स) द्वारा तैयार की जाने वाली एक विस्तृत रिपोर्ट के आधार पर भविष्य की कार्ययोजना तय करने पर पूर्ण सहमति बन गई है। यह महत्वपूर्ण निर्णय मुख्यमंत्री द्वारा दिल्ली में केंद्रीय शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल खट्टर और केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के साथ की गई उच्च स्तरीय बैठकों के दौरान लिया गया। इन बैठकों में केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी भी विशेष रूप से उपस्थित थे। चर्चा का मुख्य फोकस राज्य सरकार द्वारा हैदराबाद मेट्रो रेल फेज-1 के प्रस्तावित अधिग्रहण और फेज-2 के तहत नेटवर्क के विस्तार पर था।

बैठक के दौरान, केंद्र और राज्य सरकार हैदराबाद मेट्रो रेल परियोजना के विस्तृत अध्ययन के लिए एसबीआईसीएपीएस को सलाहकार (कंसलटेंट) नियुक्त करने पर सहमत हुए। यह सलाहकार संस्था मेट्रो रेल फेज-1 के मूल्यांकन का व्यापक आकलन करेगी, परियोजना के अधिग्रहण के लिए राज्य सरकार की वित्तीय आवश्यकताओं की जांच करेगी, उपयुक्त ऋण देने वाले संस्थानों (बैंकों) की पहचान करेगी और अधिग्रहण के लिए आवश्यक लोन जुटाने के तंत्र की सिफारिश करेगी। इसके अलावा, एसबीआईसीएपीएस प्रस्तावित मेट्रो रेल फेज-2 के विस्तार का भी अध्ययन करेगी, जिसमें निर्माण लागत, वित्तीय आवश्यकताएं, फंडिंग के विकल्प और अन्य संबंधित मुद्दे शामिल होंगे। सलाहकार परियोजना के समग्र वित्तीय और परिचालन पहलुओं की जांच कर दोनों सरकारों को अपनी अंतिम सिफारिशें सौंपेगा।

मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी की दिल्ली वार्ता सफल: भविष्य के फैसले रिपोर्ट के आधार पर

यह बैठकें तेलंगाना सरकार के लिए एक बड़ी कामयाबी (ब्रेकथ्रू) साबित हुई हैं। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल खट्टर को एचएमआर परियोजना के अधिग्रहण और इसके बड़े पैमाने पर विस्तार की राज्य सरकार की योजनाओं को समझाने में पूरी तरह सफल रहे। अधिकारियों ने इस चर्चा को बेहद रचनात्मक और फलदायी बताया है। बैठक में यह सर्वसम्मति बनी कि हैदराबाद मेट्रो रेल से जुड़े सभी भविष्य के निर्णय एसबीआईसीएप-ीएस की रिपोर्ट आने के बाद ही लिए जाएंगे। दोनों सरकारों ने माना कि सलाहकार के निष्कर्ष ही फेज-1 के अधिग्रहण और फेज-2 विस्तार के कार्यान्वयन के लिए भविष्य की कार्ययोजना का मुख्य आधार बनेंगे।

अध्ययन में तेजी लाने के लिए नोडल अधिकारियों की नियुक्ति

अध्ययन को सुचारू रूप से चलाने और इसे जल्द से जल्द पूरा करने के लिए, केंद्र और राज्य ने सलाहकार के साथ समन्वय करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों को नामित करने का निर्णय लिया है। इसके तहत केंद्र सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी और राज्य के नगर प्रशासन एवं शहरी विकास विभाग के विशेष मुख्य सचिव को समन्वय के लिए नोडल प्रतिनिधि नियुक्त किया गया है। राज्य सरकार पहले ही एमएएंडयूडी के विशेष मुख्य सचिव को इस काम के लिए नामित कर चुकी है।

मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा जारी आधिकारिक बयान में कहा गया है कि ये दोनों अधिकारी एसबीआईसीएपीएस के साथ मिलकर आवश्यक जानकारी प्रदान करेंगे, परामर्श की प्रक्रिया को आसान बनाएंगे और अध्ययन व उसके बाद की आधिकारिक प्रक्रियाओं में तेजी लाएंगे। इस व्यवस्था से सलाहकार की रिपोर्ट समय पर जमा होने और हैदराबाद मेट्रो के भविष्य पर त्वरित निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

नटकिरीटी को खिला पद्म : राष्ट्रपति के हाथों पद्मश्री से सम्मानित हुए डॉ. राजेंद्र प्रसाद और मुरली मोहन

–सुरेश कश्यप
हैदराबाद, 23 जून।

तेलुगु सिनेमा में अपनी सहज अभिनय शैली और अद्भुत हास्य प्रतिभा से करोड़ों दर्शकों का दिल जीतने वाले प्रसिद्ध अभिनेता 'नटकिरीटी' डॉ. राजेंद्र प्रसाद को भारत सरकार के प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। कला जगत में उनके असाधारण योगदान के लिए प्रदान किया गया यह सम्मान समस्त तेलुगु समाज के लिए गर्व का विषय है।

19 जुलाई 1956 को आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के निम्मकुरु में जन्मे गड्डे बाबू राजेंद्र प्रसाद ने एक साधारण परिवार से निकलकर भारतीय सिनेमा में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। महान अभिनेता एन.टी. रामाराव से प्रेरित होकर उन्होंने 1977 में निर्देशक बापू की फिल्म ''स्नेहम कोसम'' से अपने फिल्मी सफर की शुरुआत की।

करीब 300 फिल्मों में अभिनय कर चुके राजेंद्र प्रसाद ने अपने स्वाभाविक अभिनय से दर्शकों का अपार स्नेह अर्जित किया। अपने शुरुआती दौर में उन्होंने एन.टी.आर., ए.एन.आर., सुपरस्टार कृष्णा, शोभन बाबू और कृष्णम राजू जैसे दिग्गज कलाकारों के साथ काम किया तथा बाद में चिरंजीवी, नागार्जुन और वेंकटेश की पीढ़ी के साथ भी अनेक सफल फिल्मों में अभिनय किया।

निर्देशक जांध्याला, रेलांगी नरसिम्हा राव, मुत्याला सुब्बैया, सिंगीतम श्रीनिवास राव, वंशी, ई.वी.वी. सत्यनारायण और एस.वी. कृष्णा रेड्डी जैसे दिग्गजों ने उनकी अभिनय प्रतिभा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। आहा ना पेल्लांटा, लेडीज़ टेलर, अप्पुल अप्पाराव, आ ओक्कटी अदक्कु, मायलोडु और बृंदावनम जैसी फिल्मों ने उन्हें तेलुगु सिनेमा के सर्वकालिक महान हास्य अभिनेताओं में स्थापित किया। अंग्रेज़ी फिल्म क्विक गन मुरुगन में उनके काउबॉय किरदार को उत्तर भारत में भी व्यापक सराहना मिली।

हास्य अभिनेता होने के साथ-साथ उन्होंने एर्रा मंदारम, आ नलुगुरु और मी श्रेयोभिलाषी जैसी फिल्मों में गंभीर एवं संवेदनशील भूमिकाओं के माध्यम से अपनी बहुमुखी अभिनय क्षमता का परिचय दिया। अपने लंबे फिल्मी सफर में अनेक नंदी पुरस्कार एवं अन्य प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित राजेंद्र प्रसाद के लिए वर्ष 2026 का पद्मश्री सम्मान उनके लगभग पांच दशक लंबे सिनेमा योगदान का राष्ट्रीय सम्मान है।

इसी प्रकार तेलुगु फिल्म जगत के प्रतिष्ठित अभिनेता, निर्माता एवं समाजसेवी मुरली मोहन को भी पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया गया है। 24 जून 1940 को आंध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले के चाटापर्रु में जन्मे मुरली मोहन का वास्तविक नाम मागंति राजा राम मोहन राय है। उन्होंने 1973 में फिल्म ''जगमे माया'' से अभिनय की शुरुआत की और बाद में निर्देशक दासरी नारायण राव की फिल्म ''तिरुपति'' से व्यापक पहचान हासिल की। उन्होंने लगभग 350 फिल्मों में विविध भूमिकाएं निभाईं और अपनी सादगीपूर्ण तथा गरिमामयी अभिनय शैली से दर्शकों के बीच विशेष स्थान बनाया।

एक अभिनेता के रूप में उन्हें तीन नंदी पुरस्कार प्राप्त हुए। निर्माता के रूप में उन्होंने अपने भाई किशोर के साथ जयभेरी आर्ट्स की स्थापना कर अनेक सफल पारिवारिक फिल्मों का निर्माण किया तथा बाद में जयभेरी ग्रुप के माध्यम से एक सफल उद्योगपति के रूप में भी अपनी पहचान बनाई।सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रहते हुए उन्होंने तेलुगु देशम पार्टी के उम्मीदवार के रूप में राजमहेंद्रवरम लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया और सांसद के रूप में विकास कार्यों को प्राथमिकता देते हुए उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान कीं।

आज राष्ट्रपति के करकमलों से पद्मश्री सम्मान प्राप्त कर मुरली मोहन ने तेलुगु सिनेमा और समाज का गौरव बढ़ाया है।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद और मुरली मोहन को पद्मश्री सम्मान मिलने पर समस्त तेलुगु समाज, फिल्म जगत और उनके असंख्य प्रशंसकों ने हर्ष व्यक्त करते हुए हार्दिक बधाई दी है। सभी ने उनके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं नई पीढ़ी को निरंतर प्रेरणा देने की कामना की है।

भाजपा धार्मिक सेल के जिला संयोजकों और सह-संयोजकों की नियुक्ति

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) धार्मिक सेल के जिला संयोजकों (कन्वीनरों) और सह-संयोजकों (को-कन्वीनरों) की नई नियुक्तियों की घोषणा की गई है। धार्मिक सेल के प्रदेश संयोजक अनावज्जुला सूर्यप्रकाश और प्रदेश सह-संयोजक निरंजन देसाई ने संयुक्त रूप से सोमवार को काचीगुडा में इन नियुक्तियों का आधिकारिक ऐलान किया। पार्टी के सांगठनिक ढांचे को मजबूती देने के लिए विभिन्न जिलों और संगठनात्मक जिलों में ऊर्जावान चेहरों को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

घोषणा के अनुसार, हैदराबाद सेंट्रल जिला संयोजक के रूप में रामन्ना और सह-संयोजक के रूप में मल्लिकार्जुन को नियुक्त किया गया है। महंकाली सिकंदराबाद जिला की जिम्मेदारी मणीदीप (संयोजक) और कल्याण कोमल (सह-संयोजक) को दी गई है। भाग्यनगर जिला के लिए प्रशांत नीमकर को संयोजक और वेदवतौड को सह-संयोजक मनोनीत किया गया है।

इसके साथ ही, गोलकोंडा जिला के लिए महेश्वर राव (संयोजक) व रवींद्र (सह-संयोजक), मेडचल-मलकाजगिरी जिला के लिए चंद्रमौली (संयोजक) व जसवंत कुमार (सह-संयोजक), मेडचल ग्रामीण जिला के लिए करुणाकर (संयोजक) व अशोक (सह-संयोजक) तथा रंगारेड्डी ग्रामीण जिला के लिए नरसिंग गौड़ (संयोजक) और विजेंदर कुमार (सह-संयोजक) को नियुक्त किया गया है।

इसी कार्यक्रम में भाजपा धार्मिक सेल के प्रदेश नए संयुक्त संयोजकों (जॉइंट कन्वीनरों) के नामों की भी घोषणा की गई, जिसमें हैदराबाद शहर से जुड़े कई प्रमुख नेताओं को जगह दी गई है। प्रदेश संयोजक अनावज्जुला सूर्यप्रकाश और सह-संयोजक निरंजन देसाई ने काचीगुडा में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि इन नियुक्तियों से राज्यभर में धार्मिक सेल की गतिविधियों में तेजी आएगी।

प्रदेश संयुक्त संयोजक के रूप में चुने गए नेताओं में हैदराबाद सेंट्रल से शिवप्रसाद, महंकाली सिकंदराबाद से मणीदीप, गोलकोंडा से श्रीनिवास नेता, भाग्यनगर-मलकपेट से सुश्री वाणी, मेडचल मलकाजगिरी से वल्लीनाथ, मेडचल ग्रामीण से फणी भूषण, रंगारेड्डी ग्रामीण से नंबूरी विजयश्री चौधरी और रंगारेड्डी अर्बन से प्रवीण रेड्डी शामिल हैं। प्रदेश नेतृत्व ने उम्मीद जताई है कि सभी नवनियुक्त पदाधिकारी समाज में सांस्कृतिक व धार्मिक मूल्यों के संरक्षण के लिए प्रतिबद्धता से कार्य करेंगे।

बसरा मंदिर में चोरी, बदमाश चांदी का मुकुट और हुंडी के पैसे लेकर फरार

निर्मल , 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)।

तेलंगाना में निर्मल जिले के मशहूर बसरा सरस्वती मंदिर में मंगलवार को चोरी की घटना सामने आई। मंदिर प्रशासन के अनुसार अज्ञात लोगों ने सरस्वती अम्मावरी मंदिर परिसर की ऊपरी मंजिल पर स्थित महाकाली मंदिर से चांदी का मुकुट और हुंडी चुरा ली। बताया जा रहा है कि बदमाशों ने महाकाली मंदिर का गेट तोड़ा और चोरी की वारदात को अंजाम दिया।

हुंडी से पैसे निकालने के बाद, आरोपियों ने खाली हुंडी को व्यास मंदिर के पास छोड़ दिया और मौके से फरार हो गए। चोरी का पता तब चला जब पुजारी सुबह की पूजा-अर्चना के लिए मंदिर पहुंचे। मंदिर प्रशासन ने तुरंत पुलिस को सूचना दी।

मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच चल रही है। पुलिस आरोपियों की पहचान करने और उनका पता लगाने के लिए मंदिर परिसर के सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है।

अन्नदान से बढ़कर कोई सेवा नहीं : भंवरलाल गुप्ता

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में इंडो अमेरिकन कैंसर हॉस्पिटल के सामने स्थित केबीआर पार्क पर मंगलवार को नियमित अन्नदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए भंवरलाल गुप्ता ने कहा कि राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद निस्वार्थ सेवा, मानवता और परोपकार की भावना को समाज में सशक्त बनाने का कार्य कर रहा है।

जरूरतमंद और असहाय लोगों की सेवा करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व है तथा अन्नदान सबसे श्रेष्ठ दानों में से एक माना गया है।

उन्होंने कहा कि समाज में तब सकारात्मक परिवर्तन आता है, जब लोग अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर जनकल्याण के कार्यों में योगदान देते हैं। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद द्वारा निरंतर किए जा रहे अन्नदान, सेवा और सामाजिक सहयोग के कार्य समाज के लिए प्रेरणादायक हैं। ऐसे कार्यक्रमों से जरूरतमंद लोगों को सहायता मिलने के साथ-साथ समाज में संवेदनशीलता, सहयोग और भाईचारे की भावना भी मजबूत होती है।

इस अवसर पर भंवरलाल गुप्ता, उमाकांत गुप्ता, उर्मिला गुप्ता, सुभाष अग्रवाल, संजय अग्रवाल एवं मनीष अग्रवाल सहित अन्य सदस्यों ने सेवा कार्य में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। सभी ने संकल्प व्यक्त किया कि भविष्य में भी इसी प्रकार नियमित रूप से अन्नदान एवं अन्य सामाजिक सेवा गतिविधियों के माध्यम से जरूरतमंद लोगों की सहायता करते रहेंगे। राधे-राधे ग्रुप का यह सेवा अभियान निरंतर समाजहित में जारी है।

भारत सरकार टकसाल, हैदराबाद में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)।

भारत सरकार टकसाल, हैदराबाद में महाप्रबंधक (मा.सं) तथा विशिष्ट अतिथि मो. कमालुद्दीन, पूर्व सहायक निदेशक (राजभाषा), हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद की गरिमामय उपस्थिति में 23 जून 2026 को वर्ष 2026-27 की प्रथम तिमाही (अप्रैल-जून 2026) में हिंदी में कार्यसाधक प्राप्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं कार्यालयीन शब्दावली पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस संबंध में प्रबंधक (राजभाषा), भा.स.ट. हैदराबाद ने स्वागत भाषण प्रस्तुत कर कार्यशाला का शुभारंभ किया।

भारत के सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करना ही राजभाषा कार्यान्वयन है। इसके तहत राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों और राजभाषा अधिनियम, 1963 के प्रावधानों का पालन करते हुए कार्यालयीन कामकाज को सरल, स्पष्ट और एकरूप बनाने के लिए कार्यालयीन प्रशासनिक शब्दावली का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

विशेषज्ञ अतिथि वक्ता ने कार्यशाला को परस्पर संवादात्मक के रुप में सम्पन्न किया। जिसमें उन्होंने बड़े ही व्यावहारिक रुप में विषय की जानकारी दी तथा अधिकारियों-कर्मचारियों की समस्याओं का समाधान किया एवं प्रशिक्षार्थियों द्वारा किए गए अभ्यास का पुनरीक्षण किया। प्रबंधक (रा.भा) के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यशाला समापन हुआ।

आंध्र प्रदेश के परवाड़ा फार्मा सिटी के तेल संयंत्र में आग लगने से दो श्रमिकों की मौत

विशाखापत्तनम, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। आंध्र प्रदेश के अनकापल्ली जिले के परवाड़ा फार्मा सिटी स्थित दक्षिण एनर्जी के प्लास्टिक पाइरोलिसिस तेल संयंत्र में भीषण आग लगने से दो श्मिकों की जलकर मौत हो गयी है। मृतकों की पहचान वेपदा वेंकटेश और त्रिनाथ के रूप में हुई है। दोनों लगभग 26 वर्ष के थे और अचुतापुरम के रहने वाले थे।

प्रारंभिक रिपोर्टों के मुताबिक फार्मा सिटी के पास जेएनबीसी औद्योगिक पार्क की कंपनी में प्लास्टिक कचरे को तेल में रीसायकल करने के लिए इस्तेमाल होने वाले टैंक में धमाके से आग लगी। आग तेजी से संयत्र में फैल गई, जिससे श्मिक अंदर फंस गए। घटना की जानकारी मिलने पर अग्निशमन विभाग और आपातकालीन सेवा के लोग मौके पर पहुंचे और काफी देर बाद आग पर काबू पाने में कामयाबी मिली। पुलिस और जिला प्रशासन के अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया । धमाके और आग लगने की सही वजह का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी गई है। आंध्र प्रदेश की गृहमंत्री वंगालपुडी अनीता ने इस हादसे पर दुख जताया। उन्होंने अनकापल्ली जिला कलेक्टर विजया कृष्णन और पुलिस अधीक्षक तुहिन सिन्हा से हालात का जायजा लिया। मंत्री ने अधिकारियों को राहत काम में तेजी लाने का निर्देश देते हुए पीड़ितों के परिवारों को हरसंभव मदद का निर्देश दिया। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार ऐसे हादसों को दोबारा होने से रोकने के लिए कदम उठाएगी।

सीतक्का ने प्रदेश के गांवों को मॉडल गांवों में बदलने के लिए मिलकर काम करने के निर्देश दिए

हैदराबाद, 23 जून (शुभ लाभ ब्यूरो)। तेलंगाना पंचायत राज और ग्रामीण विकास मंत्री दानसारी अनसूया सीतक्का ने मंगलवार को अधिकारियों को राज्य भर के गांवों को मॉडल गांवों में बदलने के लिए मिलकर काम करने का निर्देश दिया और कहा कि विकास केवल मिलकर और कार्ययोजना बनाकर ही किया जा सकता है।

सुश्री सीतक्का ने ज्योतिराव फुले प्रजा भवन में ग्रामीण विकास और पंचायत राज विभागों की राज्य-स्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए अतिरिक्त कलेक्टरों, जिला परिषद सीईओ, डीआरडीओ और डीपीओ के साथ विकास कार्यों और कल्याणकारी योजनाओं की जिलेवार प्रगति की समीक्षा की।

मंत्री ने रोजगार गारंटी योजना को लागू करने, काम के दिन बनाने, बकाया सामान के बिलों का भुगतान, आंगनवाड़ी केंद्रों, महिला शक्ति भवनों और ग्राम पंचायत कार्यालयों के निर्माण, जल संरक्षण उपायों, चेक डैम, ग्रामीण सड़कों और प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत कामों की समीक्षा की। उन्होंने सफाई प्रबंधन, गृह कर कलेक्शन, 15वें वित्त आयोग के धन के इस्तेमाल और मानसून के मौसम में पीने के पानी की आपूर्ति की भी जांच की। उन्होंने गांवों में भूजल स्तर सुधारने के मकसद से जलासिरी पोस्टर का अनावरण करते हुए कहा कि सभी विभाग को मिलकर कार्ययोजना बनानी चाहिए और बड़े पैमाने पर ग्रामीण विकास के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक गोपाल अग्रवाल द्वारा श्री शेषसाई इंटरप्राइजेज प्लॉट नंबर. 98/1, को-ऑपरेटिव इंडस्ट्रीयल एस्टेट, गांधी नगर, बालानगर के पास मेडचेल-मल्काजगिरि जिला. हैदराबाद 500037, तेलंगाना स्टेट से मुद्रित तथा प्लॉट नं. ए-23/5 तथा 6, दूसरा माला, ओपीआईई, बालानगर, हैदराबाद, मेडचल मलकाजगिरी जिला, तेलंगाना राज्य-500037 से प्रकाशित। आर. एन. आई रजिस्टर्ड नं. TELHIN/2019/78163, फोन नं. 040-29551811. E-mail : dailyshubhlabh@gmail.com.